जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट माला-८

पत्र-व्यवहार

भाग ५

—[illegible]

[illegible]

कमलनयन बजाज

संपादक

रामकृष्ण बजाज

१९६४

मुख्य विक्रेता

सस्ता साहित्य मंडल,

नई दिल्ली

मनालाल बजाज सेवा-ट्रस्ट, वर्धा
े ओर से
ार्तण्ड उपाध्याय
ारा प्रकाशित

पहली बार : १९६४
मूल्य
चार रुपये

संपादकीय
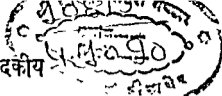
पूज्य पिताजी (श्री जमनालाल बजाज) की 'पत्र-व्यवहार-माला' में अब तक चार भाग पाठकों के सामने आ चुके हैं—पहला, देश के राजनैतिक नेताओं से, दूसरा, देशी-राज्य के कार्यकर्ताओं से, तीसरा, रचनात्मक कार्यकर्ताओं से और चौथा, पूज्य माताजी (श्रीमती जानकीदेवी बजाज) से।

पिताजी की प्रवृत्तिया विविध और उनके सपर्क बहुत ही व्यापक थे। उनकी इन विविध प्रवृत्तियों और व्यापक सपर्कों का दर्शन 'पत्र-व्यवहार-माला' की इन पुस्तकों से होता है। साथ ही उस युग की स्थिति पर भी इनसे अच्छा प्रकाश पड़ता है।

'पत्र-व्यवहार' के प्रारंभिक तीन भागो मे पिताजी का सार्वजनिक जीवन मुख्य रूप से सामने आता है। चौथे भाग मे उनके कौटुबिक जीवन की झलक मिलती है।

अब हम 'पत्र-व्यवहार' की पाचवी कडी प्रस्तुत कर रहे है। इसके पहले खड मे पिताजी का अपने बच्चो के साथ हुआ पत्र-व्यवहार सकलित है, और दूसरे खंड मे परिवार के अन्य सदस्यो के साथ का पत्र-व्यवहार है। एक प्रकार से यह पुस्तक चौथे भाग की ही पूरक है। अतर केवल इतना है कि चौथे भाग मे जहा उनका पति-रूप सामने आता है, वहा इस भाग मे उनके अन्य पारिवारिक रूपो का दिग्दर्शन होता है—पुत्र-रूप का, पिता-रूप का, एक बडे परिवार के अभिभावक के रूप का। पिताजी के कौटुबिक जीवन को उनके सार्वजनिक जीवन ने अपने मे समेट लिया था। इस प्रकार के पत्रो मे स्वाभाविक रूप से व्यक्तिगत विषय आने चाहिए थे, किन्तु उनमे निजी चीजें बहुत ही कम है। इस दृष्टि से पत्रो मे चुनाव करने की विशेष आवश्यकता नही हुई। हा, कुछ पत्रो के वे अश जरूर काट दिये गए है, जो या तो सामयिक थे, अथवा जिनमे पुनरुक्ति थी। अधिकाश पत्रो को ज्यो-का-त्यो ही दिया गया है।

इस संपूर्ण 'पत्र-व्यवहार-माला' के संबंध में समय-समय पर हमें जो सम्मतियां प्राप्त हुई हैं, उनसे निश्चय ही हमारा उत्साह बढ़ा है। वास्तव में 'जमनालाल बजाज सेवा ट्रस्ट' के प्रकाशनों के पीछे यही उद्देश्य है कि जमनालालजी के लेखन, भाषण, पत्र आदि में से लोकोपयोगी सामग्री पाठकों को मिल जाय।

इस माला के आगामी प्रकाशनों में जमनालालजी का व्यापारी व सामाजिक वर्ग के लोगों तथा देशी रियासतों के अधिकारियों के साथ हुआ पत्र-व्यवहार प्रकाशित किया जायगा। रचनात्मक कार्यकर्ताओं तथा राजनैतिक नेताओं के साथ हुए पत्र-व्यवहार के द्वितीय खंड भी प्रकाशित करने की योजना है।

श्री कमलनयन बजाज ने प्रस्तुत पुस्तक की 'पृष्ठभूमि' लिखी है, जिससे इन पत्रों की भूमिका समझने में पाठकों को आसानी होगी। जिन्हें पत्र लिखे गए हैं, उनका संक्षिप्त परिचय भी अंत में, परिशिष्ट-२ में दे दिया गया है।

आशा है, ट्रस्ट के अन्य प्रकाशनों की भांति यह पुस्तक पाठकों को रुचेगी।

—संपादक

पृष्ठ-भूमि

जमनालालजी 'काकाजी' के नाम से पुकारे जाते थे। मारवाड़ी भाषा में पिता को काकाजी कहते हैं। चूंकि हम बच्चे उनको काकाजी कहते थे, इसलिए सभी लोग उनको 'काकाजी' कहने लगे थे। काकाजी का परिवार उत्तरोत्तर बढ़ता गया और जीवन के आखिरी दिनों तक उसमें वृद्धि ही होती रही।

काकाजी के स्वभाव में एक विशेष गुण यह था कि वे छोटे-बड़े सभी से जात-पांत, पद-प्रतिष्ठा, अधिकार आदि का खयाल किये बिना पूरी तरह घुलमिल जाते थे। किसीको भी अपने प्रति निर्भर बना लेना उनके लिए सहज था। वे उसके जीवन में इतना उतर जाते थे और उसके परिवार में इतना संतुलन स्थापित कर लेते थे कि वह हमेशा के लिए उनका हो जाता था। उसके जीवन में, परिवार में, कार्य में, यदि कोई कठिनाई आती थी और वह कठिनाई अथवा समस्या उसके या उसके आत्मजनों या मित्रों के बूते से बाहर हो जाती थी तो उसका सारा भार वे अपने ऊपर लेते थे, जिससे वह निश्चिन्त होकर अपना काम पूरी दिलचस्पी और एकाग्रता के साथ करने में लग जाता था।

काकाजी के विस्तृत परिवार के लोग अपनी हर तरह की समस्याएं, शिकायतें उनके पास लाते थे। वह उनमें पूरा रस लेते थे और उनकी समस्याओं के निदान का भरसक प्रयत्न करते थे। इस संबंध में उनकी कार्य-प्रणाली बहुत ही विचित्र एवं असामान्य होती थी। लेकिन होती थी वह मानवहृदय को छूने वाली और अति व्यावहारिक।

एक बार मैंने काकाजी से पूछा कि आपकी सलाह के अनुसार लोग काम कर पायें या न कर पायें, लेकिन वे उस सलाह के विषय में बुरा

मानते। इसका कारण क्या है? उन्होंने कहा कि "सलाह देने से पहले
मैं-आपको उस आदमी की स्थिति में रख लेता हूँ और वैसी हालत
में स्वयं क्या कर सकता हूँ और मेरे लिए क्या करना अच्छा है, तथा
उसके अनुसार चलने में सामनेवाले को क्या-क्या कठिनाइयाँ हो सकती
, और उन कठिनाइयों को किस तरह से दूर किया जा सकता है, आदि
सारी सोच कर तब उसे सलाह देता हूँ। सलाह अच्छी हो सकती है,
लेकिन वह उस पर बोझ रूप नहीं होनी चाहिए। उसकी प्रतिष्ठा की
दृष्टि से व आमदनी की दृष्टि से यदि उसके पालन में उसे वह भारी पड़े
तो अच्छी सलाह होते हुए भी वह कष्टदायक हो जाती है। इसके अलावा
मैं कहता हूँ और मैंने सलाह दी है, इसलिए उसे मानना ही चाहिए, यह
आग्रह मैं नहीं रखता। इसमें मैं पूरी तरह से सफल होता हूँ, ऐसा तो
नहीं है, फिर भी इंसान की सचाई और उसके इरादे, गलत समझे जाने
पर भी, समय पर सामने आ ही जाते हैं। शायद इन्हीं सब कारणों से
मैं लोगों का प्रेम और विश्वास पा सका हूँ। और यही वजह है कि लोग
मेरी सलाह और व्यवहार को उदारता के साथ ग्रहण कर लेते हैं।"

काकाजी का हृदय विशाल था। शायद इसी कारण इतने बड़े
परिवार को वे निभा पाये। इस परिवार में बड़े-से-बड़े राजा-महाराजा
व नेता से लेकर छोटे-से-छोटे कार्यकर्ता का समावेश था। लेकिन काकाजी
ने कभी उनके प्रति भेदभाव का खयाल नहीं रखा। वे अपने बच्चों की
तरह दूसरे के बच्चों को भी सुधारने का प्रयत्न करते थे। एक बार की
बात है। मेरी उम्र उस समय १०-१२ वर्ष की रही होगी। घरवालों
या स्कूल के अध्यापकों द्वारा काकाजी से शिकायत की गई कि मेरी
दोस्ती एक बदमाश लड़के के साथ है, जिसे गाली देने, चोरी करने और
झूठ बोलने की आदत है। काकाजी ने मुझे बुलाया और पूछा कि क्या
तुम्हारी उस लड़के के साथ दोस्ती है? मैंने कहा, "मुझे उसकी बहादुरी
ी लगती है और खेलकूद में भी वह होशियार है, इस कारण वह

हुआ जाता है। उसमें जो दुर्गुण हैं उन्हें दूर करने की तरफ और [illegible] ध्यान दें तो उसका सुधरना मुश्किल नहीं होगा।"

काकाजी शायद मेरी मजबूरी देखने के लिए बोले, "वह तो ठीक है, लेकिन तुम्हें बुरी संगत में रहने की क्या जरूरत है? आखिर उसकी संगत का असर तो तुम पर पड़ेगा ही।'

मैंने कहा, "आखिर बुरे लड़कों को अच्छी संगत कैसे मिलेगी? वे कहां जाएं? उन्हें सुधरने का मौका कैसे मिलेगा?'

यद्यपि मैं छोटा था और अध्यापक लोग उस लड़के से निराश हो चुके थे, फिर भी काकाजी ने कहा कि अगर तुम्हें अपने बारे में विश्वास है और उस लड़के के लिए इतना ख्याल है तो ठीक है। पर साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि वे स्वयं उसकी बुरी आदतों को छुड़ाने में मेरी मदद भी करेंगे। काकाजी ने उस लड़के को बुलवाया। उनसे पूछे जाने पर उसने गाली देने और झूठ बोलने के विषय में अपनी कमजोरी कबूल की, लेकिन कहा कि चोरी वह नहीं करता है। उसके कहने में कुछ सचाई थी, क्योंकि जिन चोरियों में उसका नाम लिया जाता था, उनमें से अधिकतर या तो उसने की नहीं थी, या की भी थीं तो ऐसे लड़कों की, जिन्होंने दूसरों की चीजें चुराई थीं और उसने उन्हीं चीजों को उनसे चुरा कर या छीन कर जिनकी थीं, उन्हें दे दी थीं। उसे वह चोरी नहीं मानता था। झूठ बोलने के बारे में उसने बताया कि घरवाले उसे खेलने के लिए जाने नहीं देते, दोस्तों के साथ रहने नहीं देते और स्कूल का काम पूरा होता नहीं इसलिए लाचारीवश उसे झूठ बोलना पड़ता है। काकाजी ने उसकी सारी बातों को पूरी तरह समझा। उसके घरवालों व अध्यापकों को बुला कर उनसे बातें कीं और उस लड़के को भी समझाया। और उसे कहा कि "अब तुम्हें झूठ बोलने की आदत छोड़ देनी चाहिए। छह महीने के अन्दर तुम्हारी आदत नहीं सुधरी तो तुम्हारे सारे दोस्तों को बुला कर कहूंगा कि इसके साथ दोस्ती छोड़ दें।" लड़के ने अपनी बुरी

यह तो वाजिब नही हो सकता। यदि तुम से ऐसी कोई आशा होती कि जो कुछ तुम पर खर्च किया जाय उससे समाज को विशेष लाभ मिलने की सभावना हो तो इतना खर्च करने मे मुझे खुशी हो सकती थी। बाकी तो यह धन की लालसा और एक प्रकार का प्रमाद मात्र होगा।"

मैंने उनसे कहा कि आपका कहना बिलकुल ठीक है। मुझे केवल इसलिए नही भेजा जाय कि आपका बेटा हू। लेकिन मेरे सामने सवाल यह है कि मेरा जीवन किसी भी रूप मे पूरी तरह से ढले, उसके पहले मैं बापूजी के विचार और आचार के प्रभाव से दूर रह कर उन्हें अच्छी तरह से समझ लेना चाहता हू। आज मुझे वे अच्छे जरूर लगते हैं, और ऐसा मेरा विश्वास है कि आगे भी अच्छे लगेंगे, फिर भी यह इच्छा है कि दूर रहकर अन्य मौलिक विचारो के साथ स्वतत्र वातावरण मे उनका तुलनात्मक अध्ययन करु। अगर भारत मे ही रहकर आप मुझे बापू के प्रभाव से दूर रख सकते हो और साथ ही अग्रेजी के अध्ययन की सुविधा हो जाती हो तो मुझे वहा रखें। मेरा आग्रह नही है कि मैं विदेश ही जाऊ।

मेरी इस बात का काकाजी पर असर पडा। मेरी ये सारी बातें बापूजी के पास गईं। वहा भी मैंने कहा कि "आप जो-कुछ निर्णय करे वह मुझे सहर्ष स्वीकार होगा। उसके प्रति मेरे मन मे किसी प्रकार की उदासीनता का तो सवाल ही नही है। उसके फलस्वरूप अपने ऊपर किसी बुरा परिणाम का भी मैं कारण नही देखता। परतु यह मैं नही कह सकता कि विदेश जाने के बाद वहा के वातावरण का मुझ पर क्या परिणाम होगा।" सब-कुछ सुनने के बाद बापू ने भी निर्णय दिया कि इसे विदेश भेजना उचित होगा।

काकाजी बच्चो मे बच्चो के समान हो जाते थे। उनमे किसी को कभी सकोच या भय शायद ही हुआ होगा। प्रेम और आदर ही उनके लिए बना रहता था। वे बच्चो मे बैठते थे, उनके साथ कई तरह के खेल

खेलते थे। शतरंज, ताश के खेल भी उन्हें सिखाते, उनकी बुद्धि का विकास हो, उनकी समझ बढ़े, आदमी को वे पहचान सकें, उसके गुण-दोष देख सकें इस तरह के खेल वे खेलते और नये खेलों का आविष्कार भी करते। बच्चों पर अपने व्यक्तित्व अथवा विचारों को लादने की उनमें वृत्ति नहीं रहती थी। बल्कि बच्चों की ओर से कोई सूझ-बूझ की बात आती थी तो उसका स्वागत करते थे, उस पर खुश होते थे।

एक बार पूना में हम सब लोग घूमने-फिरने सिंहगढ़ गये थे। थोड़ा घूमने-घामने के बाद एक पेड़ के नीचे काकाजी हम लोगों के साथ बैठ गए। बैठे-बैठे उन्होंने एक नया खेल शुरू किया और इसकी योजना समझाई। उपस्थित लोग अपनी-अपनी बारी आने पर वहां बैठे किसी भी व्यक्ति का नाम लेकर उससे अपनी तुलना करे और उससे वह किन बातों में श्रेष्ठ है, वह बताये। जो सबसे अच्छी तरह बतायेगा, उसका पहला नम्बर होगा। जो कुछ वह कहे, उसमें सत्यांश होना चाहिए। किसी को भी यदि उसकी बात गलत लगे तो वह उस पर आपत्ति उठा सकता है। आपत्ति उठाने पर अगर तुलना करनेवाला व्यक्ति उस बात को मान जाय, अथवा उसका जवाब देने पर जिसने आपत्ति उठाई हो उसे और दूसरों का समाधान हो जाय, अथवा जिसके साथ तुलना की गई हो वह मान जाय तो कहनेवाले की बात रही, अन्यथा उसकी बात सही है या नहीं, इस पर राय लेकर बहुमत से निर्णय किया जाय।

खेल की शुरुआत हुई। जब मेरी बारी आई तो अचानक मेरे मुंह से निकल गया कि मेरी तुलना श्री जमनालाल बजाज से होगी। कुछ मोटी-मोटी बातें जो मेरे पक्ष में थीं, मैंने कहीं; जैसे उन्होंने सिर्फ देश का ही भ्रमण किया है, मैंने विदेश का भी भ्रमण किया है, दौड़ में मैं उनसे तेज हूं, इनके पिताजी से मेरे पिताजी अच्छे और अधिक प्रख्यात हैं आदि। इन बातों का किसी ने प्रतिवाद नहीं किया। इसके बाद मैंने कहा कि इनकी संतान से मेरी संतान अच्छी है। उस समय मेरा

लड़का राहुल मुश्किल से साल एक-भर का होगा। इसपर किसी ने आपत्ति उठाई और कहा कि तुम यह कैसे कह सकते हो कि तुम्हारा लडका इनके लडके से अच्छा है। मैंने कहा कि काकाजी अगर यह कहदें कि इनका ही लड़का अच्छा है, मेरा नही, तो मुझे कोई आपत्ति नही होगी। काकाजी कुछ नही बोले। मेरी शरारत को वह समझ रहे थे। बस, हस भर दिये। आगे मैंने कहा कि यह मान भी लिया जाय कि उनका लडका अच्छा है और मेरा नही, फिर भी जिद का सवाल हो जाय तो उनके लडके को बिगाड़ना तो मेरे हाथ मे है, चाहे जितना उसे मैं बिगाड सकता हूं, लेकिन वह मेरे लडके को नही बिगाड सकते। मेरी बातो का किसीने प्रतिवाद नही किया और इस तरह मेरी बात रह गई। काकाजी को यह सब अच्छा लगा। उन्होंने दूसरे लोगो से कहा कि आज तो कमल ने बुद्धिमत्ता और विवेक का परिचय दिया। उसका कहने का ढग मजेदार था और सूझ-बूझ भी अच्छी थी।

वह सबसे खुल कर बात करते थे, यहा तक कि बच्चो से भी अपनी बात साफ-साफ कह डालते। सन् १९३२ की बात है। मैं १६ साल का हुआ था। काकाजी से दूर अल्मोडा मे पढता था। सत्याग्रह शुरू हो जाने पर वही पकड़ा गया। जेल से छूटने पर पहली बार जब मैं काकाजी से मिलने धूलिया जेल गया तो उन्होंने कहा कि अब तुम्हारी उम्र १७ साल से ऊपर हो गई है और हमारे शास्त्रो मे लिखा है कि "प्राप्ते तु षोडशे वर्षे पुत्र मित्रवदाचरेत्।" अब तुम जो कुछ अपने मन से करना चाहो, उसके लिए स्वतत्र हो। मेरी सलाह मागोगे तो दे दूगा। मुझे कुछ कहने की जचेगी तो कहूगा, लेकिन तुम्हें किसी प्रकार का सकोच रखने की जरूरत नही है। जैसा जीवन तुम्हें बनाना हो, जो कुछ करना हो, वह निर्भयता के साथ कर सकते हो।

इसके बाद काकाजी जब छूटकर आये तो घरेलू, व्यापारिक सामाजिक, या राष्ट्रीय आदोलन आदि की जो भी समस्याए सामने

आती, उन पर वे मेरे साथ विचार-विनिमय करते। इसके साथ ही अपने व्यक्तिगत जीवन के सम्बन्ध में भी मुझसे चर्चा करते, अपने दोषों को बताते और उनको किस तरह दूर करना, इसके लिए राय भी पूछते। एकाधबार मैंने उनसे कहा भी कि इस तरह की चर्चा आप मुझसे न किया करें। आपको इन बातों में कुछ समझना-बूझना हो तो विनोबा और बापू से बात करें। उन्होंने कहा कि वह तो वे करते ही हैं। पर उतना ही काफी नहीं है। जहां भी आत्मीयता हो, मनुष्य अपनी कमजोरी को कह सकता है, अपने से छोटों को भी विश्वास में लेकर चर्चा करने से एक नये दृष्टिकोण का खयाल भी आ सकता है। इससे बड़ों की नम्रता और छोटों का आत्म-विश्वास बढ़ता है। परस्पर स्नेह बढ़ता है। इससे पुराने और नये विचारों का समन्वय भी अच्छा होता है।

इस तरह अपने और दूसरों के बच्चों से भी काकाजी दिल खोल कर बात करते थे। उनके हृदय की बात जानने की कोशिश करते थे। उन्होंने कभी कोई बात हम पर लादी नहीं। कोई बात हमें कबूल नहीं होती तो उसका वे आग्रह नहीं करते थे। हां, इस बात को अवश्य दुहराते रहते कि विनोबा या बापू को संतोष करा दो तो फिर उन्हें सावधान या संतोष कराने की जरूरत नहीं। हम बच्चों की कमजोरियां दूर करने के लिए भी समझाने के अलावा उसी तरह की अपनी कमजोरी को दूर करने का वह प्रयत्न करते। वह यह कहते भी थे कि 'वह कमजोरी तो मुझसे ही तुम लोगों में आई है। तुम लोगों को तो अब नया जीवन बनाना है तो इससे बचो' और फिर उसके लिए रास्ता भी बताते। मेरे आलस्य को दूर करने के लिए उन्होंने बहुत प्रयत्न किये। जब उन्होंने देखा कि मुझ पर विशेष परिणाम नहीं पड़ रहा है और मैं उसके प्रति अलमस्त और बेफिक्र हूं तो मेरे ऊपर काम का बोझ भी डाला। काम मैं भूत की तरह करता और उसमें मुझे समय या आराम का कभी खयाल भी नहीं रहा। पर जहां अवकाश मिला कि वह स्वभाव उसी तरह

हो जाता। उसका क्या इलाज हो, यह काकाजी के लिए समस्या रहती। अन्त मे उन्होने स्वय अपने आलस्य को तोड़ने के लिए नियम बनाये। खाने पर सयम रहे, इसका भी खयाल करके नियमो मे शामिल किया। उसके परिणामस्वरूप वे तो अपने आलस्य पर काबू कर सके और उनके जीवन के उत्तरार्ध में वे कभी आलसी रहे ऐसा कोई कह नही सकता था। पर मुझ पर उसका खास असर नहो पड़ा। मै अपने अदर विशेष परिवर्तन नही कर पाया।

काकाजी ने अपने माने हुए परिवार के सदस्यो की एक सूची बनाई हुई थी, जिसमे अधिकतर रिश्ते, पिता, पुत्र, बहन, भाई, मित्र आदि के रूप मे शामिल थे। उसमे उन्होंने पुत्र के स्थान पर मेरा नाम नही रखा था क्योकि मुझसे अधिक समाधान उस रिश्ते में उनको भाई राधाकृष्ण और रामकृष्ण से मिला था। मैं उनकी आज्ञा जरूर मानता था, और उन्हें यह भरोसा भी था कि मुझसे कुछ कहा गया तो मै उसे पूरी तरह से करूगा, लेकिन मेरी वृत्ति और स्वभाव दोनो ही स्वतन्त्र थे, इसलिए मेरा व्यक्तित्व अलग पड़ जाता था। इसके अलावा उन्हें मुझसे पूरी तरह सतोष भी नहीं था। इसी तरह के रिश्तो मे हमारे यहाँ की नौकरानी का भी उन्होंने माता के स्थान के लिए विचार किया था। उसके द्वारा वे कुछ ही बातों मे मातृत्व की कमी पूरी कर सकते थे, लेकिन खरा सतोष एवं समाधान तो उन्हें माता आनदमयी की प्राप्ति से ही हुआ।

ये जो निजी रिश्ते उन्होंने मान रखे थे, उनसे वे अपने व्यक्तिगत जीवन के बारे में पूरी चर्चा करते, खासकर अपने जन्म-दिन के अवसर पर वे अपने गुण-दोषो का हिसाब लगाते। उसका आकड़ा तैयार करते। इस बात को जाचते कि उनके दोषो मे कितनी मात्रा कम हुई है। इस बारे मे चर्चा करके अथवा पत्रो द्वारा यह पूछते और जानना चाहते कि उनके दोषो मे क्या फर्क पड़ा है। अपने बुजुर्गों से भी इसकी चर्चा

करते । गुण-दोषों के हिसाब का एक ऐसा ही चिट्ठा मृत्यु के कुछ ही महीनों पूर्व उन्होंने बनाया था और उसमे उन्हें यह लगा था कि जैसा वे चाहते थे वैसा मन पर उनका काबू नही हो पाया है। इसी वजह से वे सार्वजनिक कामो से निवृत्त होकर आत्मोन्नति की तरफ ध्यान देने और कुछ उस तरह का कार्य करने को कि जो देश के विकास में भी सहायक हो और आत्मोन्नति के रास्ते मे बाधक न हो, उत्सुक थे। पर किसी-न-किसी कारणवश उनको काग्रेस की कार्यकारिणी तथा सार्वजनिक कामो मे से अलग नही होने दिया गया। 'पर गाधी सेवा सघ' के अध्यक्ष के पद को तो इसी वजह से उन्होंने छोड़ ही दिया था। अतिम दिनों मे दूसरे सारे सार्वजनिक कार्यों से भी निवृत्त होकर बापूजी की सलाह से वे गो-सेवा के ही कार्य में पूरी तरह से रत हो गए थे।

काकाजी के जीवन मे दिखावट या बनावट छू-तक नही गई थी। उनके पत्र भी सीधीसादी बोलचाल की भाषा मे लिखे हुए हैं। आज भी उनके पत्र पढें तो ऐसा लगता है, मानो काकाजी ही बोल रहे हों। उनकी भाषा मे विद्वत्ता नही है, लेकिन जीवन की अनुभूति और व्यावहारिक समझदारी भरी हुई है। दूसरों के दुःख-दर्द को देखकर वह द्रवित होते थे और किसी को भी सुखी और सतुष्ट पाते तो उनका चित प्रसन्न होता। यही वजह थी कि उनको 'अजातशत्रु' कहा जाता था।

यह पत्र-व्यवहार दो खण्डो मे विभाजित है। पहले खण्ड मे तो बच्चों के साथ हुआ पत्र-व्यवहार सकलित है, दूसरे में परिवार के अन्य लोगों के साथ का पत्र-व्यवहार है। दोनो ही खण्डों मे उनका व्यक्तित्व स्पष्टता के साथ झलकता है। उनकी सचाई, स्पष्टता, बुद्धिमत्ता, दृढता, हिम्मत, आत्म-विश्वास, उदारता, चतुराई, समझदारी, व्यावहारिक कुशलता, नम्रता आदि गुणो का सहज स्वाभाविक तरीके से दिग्दर्शन होता है। दूसरे खण्ड में जो पहला पत्र है, वह उन्होंने अपने दादा बच्छराजजी को ...ने १७ वर्ष की उम्र मे लिखा था। उससे उस छोटी उम्र में भी

उनके पूरे जीवन का निचोड़ निहित है। ईश्वर के प्रति श्रद्धा, जीवन की सच्चाइयों के प्रति आग्रह, आत्म-विश्वास, निर्भीकता, धनार्जन के प्रति उदासीनता, गुरुजनों के प्रति आदर, अपने विचारों में स्पष्टता, दृढ़ता और नम्रता, उनके स्वभाव में निरहंकारिता और सहजता, दिल की उदार वृत्ति आदि के दर्शन इनमें होते हैं। जिन दादा ने अकारण ही इतना दुःख दिया था उनके प्रति भी आशीर्वाद सद्भावना उनकी कमियों के प्रति भी जागृत रहते हुए, उन्हें दूर करने के लिए प्रार्थना-मय मंगल कामना आदि उनके विशिष्ट गुण थे जिनकी वजह से उनको सर्वत्र इतना यश मिला। विनोबा के शब्दों में—अन्तिम दिनों में जिनको इतनी उत्तम मानसिक अवस्था में मृत्यु प्राप्त हुई जिसको उन्होंने धन्य समझा। उनके सारे जीवन को बीज रूप में ही नहीं, किन्तु पूरी स्पष्टता के साथ, इस एक ही पत्र द्वारा समझने के लिए पर्याप्त सामग्री मिल जाती है।

इस पुस्तक में जो पत्र दिये गए हैं, वे परिवारवालों के नाम हैं। इसलिए पहली बात तो यह है कि इनमें एक प्रकार का सहज-स्वाभाविक घरेलूपन है। काकाजी जहां कहीं जाते थे, घरवालों को अपने समाचार देते रहते थे और उनके समाचार लेते रहते थे। लेकिन इसके साथ ही इन पत्रों में जीवन-शोधन के लिए भी पर्याप्त सामग्री है। काकाजी अपनी आत्मोन्नति के लिए बराबर प्रयत्नशील थे। उनकी इच्छा और चेष्टा थी कि उनके परिवार के सदस्य भी अपने जीवन को सुधारें और आत्म-विकास करें। इस पुस्तक के पत्रों में इस दिशा की बहुत सी सामग्री मिलती है। अधिकांश पत्रों में उन्होंने अपने कुटुम्बी-जनों को कुछ-न-कुछ प्रेरणा दी है।

इस दृष्टि से इन पत्रों का सार्वजनिक महत्त्व भी है। हर परिवार की इच्छा रहती है कि उसके बच्चों का जीवन उन्नत हो। इसके लिए उनको इन पत्रों में बहुत-सी उपयोगी तथा प्रेरणादायक बातें मिलेंगी।

करते। गुण-दोषों के हिसाब का एक ऐसा ही चिट्ठा मृत्यु के कुछ ही महीनों पूर्व उन्होंने बनाया था और उसमे उन्हें यह लगा था कि जैसा वे चाहते थे वैसा मन पर उनका काबू नही हो पाया है। इसी वजह से वे सार्वजनिक कामों से निवृत्त होकर आत्मोन्नति की तरफ ध्यान देने और कुछ उस तरह का कार्य करने को कि जो देश के विकास में भी सहायक हो और आत्मोन्नति के रास्ते मे बाधक न हो, उत्सुक थे। पर किसी-न-किसी कारणवश उनको कांग्रेस की कार्यकारिणी तथा सार्वजनिक कामों में से अलग नही होने दिया गया। 'पर गांधी सेवा संघ' के अध्यक्ष के पद को तो इसी वजह से उन्होंने छोड़ ही दिया था। अंतिम दिनों में दूसरे सारे सार्वजनिक कार्यों से भी निवृत्त होकर बापूजी की सलाह मे वे गो-सेवा के ही कार्य मे पूरी तरह से रत हो गए थे।

काकाजी के जीवन में दिखावट या बनावट छू-तक नही गई थी। उनके पत्र भी सीधी-सादी बोलचाल की भाषा मे लिखे हुए हैं। आज भी उनके पत्र पढ़ें तो ऐसा लगता है, मानो काकाजी ही बोल रहे हों। उनकी भाषा में विद्वत्ता नहीं है, लेकिन जीवन की अनुभूति और व्यावहारिक समझदारी भरी हुई है। दूसरों के दुःख-दर्द को देखकर वह द्रवित होते थे और किसी को भी सुखी और संतुष्ट पाते तो उनका चित प्रसन्न होता। यही वजह थी कि उनको 'अजातशत्रु' कहा जाता था।

यह पत्र-व्यवहार दो खण्डो मे विभाजित है। पहले खण्ड में तो बच्चों के साथ हुआ पत्र-व्यवहार सकलित है, दूसरे में परिवार के अन्य लोगों के साथ का पत्र-व्यवहार है। दोनो ही खण्डों मे उनका व्यक्तित्व स्पष्टता के साथ झलकता है। उनकी सचाई, स्पष्टता, बुद्धिमत्ता, दृढ़ता, हिम्मत, आत्म-विश्वास, उदारता, चतुराई, समझदारी, व्यावहारिक कुशलता, नम्रता आदि गुणों का सहज स्वाभाविक तरीके से दिग्दर्शन होता है। दूसरे खण्ड मे जो पहला पत्र है, वह उन्होंने अपने दादा बच्छराजजी को अपनी १७ वर्ष की उम्र मे लिखा था। उससे उस छोटी उम्र मे भी

उनके पूरे जीवन का निष्कर्ष निकलता है। ईश्वर के प्रति श्रद्धा, जीवन की अच्छाइयों के प्रति आस्था, आत्म-विश्वास, निर्भीकता, धन-संपत्ति के प्रति उदासीनता, गुरुजनों के प्रति आदर, अपने विचारों में स्पष्टता, दृढ़ता और सरलता, उनके रहने में निरहंकारिता और नम्रता, चित्त की उदार वृत्ति आदि के दर्शन उसमें होते हैं। जिस दादा ने अकारण ही इतना गुस्सा किया था उनके प्रति भी आदरोचित सद्भावना, उनकी कमियों के प्रति भी जागृत रहते हुए उन्हें दूर करने के लिए प्रार्थना-मय मंगल कामना आदि उनके विशिष्ट गुण थे, जिनकी वजह से उनका व्यक्तित्व इतना ऊंचा उठा। विनोबा के शब्दों में—अन्तिम दिनों में जिनको इतनी उत्तम मानसिक अवस्था में मृत्यु प्राप्त हुई, जिसको उन्होंने धन्य समझा। उनके सारे जीवन को बीज रूप में ही सही, किन्तु पूरी स्पष्टता के साथ, उस एक ही पत्र द्वारा समझने के लिए पर्याप्त सामग्री मिल जाती है।

इस पुस्तक में जो पत्र दिये गए हैं, वे परिवारवालों के नाम हैं। इसलिए पहली बात तो यह है कि इनमें एक प्रकार का सहज-स्वाभाविक घरेलूपन है। काकाजी जहां कहीं जाते थे, घरवालों को अपने समाचार देते रहते थे और उनके समाचार लेते रहते थे। लेकिन इसके साथ ही इन पत्रों में जीवन-शोधक के लिए भी पर्याप्त सामग्री है। काकाजी अपनी आत्मोन्नति के लिए बराबर प्रयत्नशील थे। उनकी इच्छा और चेष्टा थी कि उनके परिवार के सदस्य भी अपने जीवन को सुधारें और इन विकास करें। इस पुस्तक के पत्रों में इस दिशा की बहुत [illegible] मिलती है। अधिकांश पत्रों में उन्होंने अपने [illegible] प्रेरणा दी है।

काकाजी ने इन पत्रों में देश के अनेक महापुरुषों तथा घटनाओं
उल्लेख किया है। इन पत्रों को पढ़कर आजादी की लड़ाई के इति
के बहुत से अध्याय आंखों के सामने खुल जाते हैं।

इस सबके अलावा बहुत से पत्रों में दैनिक जीवन की समस
उठाई गई हैं और उनका समाधान बताया गया है।

कुल मिलाकर इन पत्रों में काकाजी के कई रूपों के दर्शन होते
वात्सल्य-पूर्ण पिता, जीवन-शोधक, सार्वजनिक नेता, बापू के मा
पथिक आदि-आदि।

मुझे विश्वास है कि हर पाठक इस पुस्तक के अध्ययन से कुछ-न
जरूर पायगा और उसे अपनी कठिनाइयों को हल करने का र
सूझेगा।

—कमलनयन ब

विषय-सूची

: ६२

साबरमती, १२-२-३६

चि० कमल,

चरखा-संघ की बैठक के लिए मैं यहां आया था। तुम्हारा पत्र मुझे यहां आने पर मिला।

चि० सतीश का पत्र एक तरह से ठीक मालूम हुआ। लड़का होनहार है इसमें तो मुझे कोई संदेह है ही नहीं। यदि तुम्हारा इंग्लैंड जाने का निश्चित हो जाये तो यह मेरी भी राय है कि किसी सुसंस्कारी, चरित्रवान अंग्रेज कुटुम्ब में ही तुम रह सको तो विशेष लाभदायक हो सकता है। बहुत-सी बातें स्वाभाविक तरह से सीखने को मिल जायेंगी।

विवाह-संबंध के बारे में तुम्हें विशेष आग्रह न करने के लिए और एक प्रकार से तुमको स्वतंत्रता देने के लिए भी मैं तैयार हो जाता, परन्तु मेरे सामने जिन होनहार लड़कियों के प्रस्ताव हैं, उनको देखते हुए व अन्य गुरुजनों की सलाह को ध्यान में रखते हुए, मैं तुम्हारे हित की दृष्टि से ही इस बात को सामने रख रहा हूं। सतीश भी तो संबंध करके ही यहां से गया है।

पर मेरी बात रहने भी दो तो भी यदि पू० बापू एवं विनोबा को तुम संतुष्ट कर सकोगे तो फिर मेरे पास कुछ अधिक कहने को नहीं रहेगा।

सारी बातों का विचार करते हुए मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि छुट्टियों में तुम इधर आ सको तो आना ठीक होगा। कांग्रेस में भी हाजिर रह सकोगे। अबकी बार प्रदर्शनी का भी एक नया रूप देखने को मिलेगा। वातावरण भी नया रहेगा। तुम उस तरफ घूमना चाहते हो तो इधर भी घूम सकते हो। पू० बापू एवं पू० विनोबा से बातें भी हो सकेंगी। इससे भविष्य का प्रोग्राम निश्चित करने में सहायता मिल सकेगी। मौसम गर्मी का होने की वजह से धूप की कुछ तकलीफ तो रहेगी, परन्तु इससे तुम डरोगे नहीं, ऐसी आशा है।

सतीश का पत्र अंबालाल पटेल को पढ़ने के लिए दिया है। काका साहब के साथ वह यहां मिला था। अंबालाल की इच्छा भी विवाह करके ही यूरोप जाने की है, ऐसा कल उसने व काका साहब ने मुझे कहा है।

ना संभव है नही, तथा जन मे आने के बाद समय इतना थोड़ा रहेगा
र मुझे विलायत जाने की तैयारी भी करनी पडेगी।

४-२-३६

आपका पत्र अभी-अभी मिला। विवाह के विषय मे मैं किसी भी तरह का विचार करने के लिए अपनेको अभी तैयार नही पाता हू। आप सब लोगों की सलाह के विरुद्ध यह निश्चय करते हुए मुझे काफी दु ख रहा। मुझे यह भी खयाल है कि ऐसे निश्चय से मैं अपनी जिम्मेदारी बहुत बढा लेता हू। इतना सब होते हुए मै दूसरा किसी भी प्रकार का निश्चय करने के लिए अपनेको असमर्थ पाता हू। फिर भी आप लोगो की आज्ञा होगी तो मैं श्रद्धापूर्वक विवाह के लिए अनुमति दे भी दूगा। लेकिन ऐसा करने मे मैं अपने प्रति तथा जिस लडकी से विवाह करूगा उसके प्रति पूरा न्याय करने से वचित रहूगा। आपका पत्र मिलने के पूर्व जो विचार मैं लिख चुका हू, वे ज्यो-के-त्यो अभी कायम है। मुझे पूरा विश्वास है कि आप मुझे मेरे जीवन को जोखिम मे देखते हुए भी स्वतत्रता देगे। यदि किसी भी समय मु विवाह करने की इच्छा हुई तो मैं पहले आपको ही इत्तिला दूगा, इस आप पूरा भरोसा रखे। मैने कोई किसी तरह की प्रतिज्ञा ता की नही है।

नागर की वीरोचित मृत्यु सुनकर दु ख तो हुआ, लेकिन और कि तरह मरने से इसी तरह मरना ठीक था। मैं अपने लिए भी ऐसी ही को पसद करूगा। भगवान जाने, इतनी हिम्मत और बहादुरी मेरे या नही।

मैने ठाकर को एक पत्र लिखा था। उसका जवाब आया है। दोनो आपको भेजता हू। आप पढकर मुझे बिना देर किये वापस भिजवा दे

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। टेनिस खेलने से मन प्रफुल्ल रहता है। पत्र का जवाब शीघ्र दें।

: ६२

साबरमती, १२-२-३६

चि० कमल,

चर्खा-संघ की बैठक के लिए मैं यहां आया था। तुम्हारा पत्र मुझे यहां आने पर मिला।

चि० सतीश का पत्र एक तरह से ठीक मालूम हुआ। लड़का होनहार है इसमें तो मुझे कोई संदेह है ही नहीं। यदि तुम्हारा इंग्लैंड जाने का निश्चित हो जाये तो यह मेरी भी राय है कि किसी सुसंस्कारी, चरित्रवान अंग्रेज कुटुम्ब में ही तुम रह सको तो विशेष लाभदायक हो सकता है। बहुत-सी बातें स्वाभाविक तरह से सीखने को मिल जायेंगी।

विवाह-संबंध के बारे में तुम्हें विशेष आग्रह न करने के लिए और एक प्रकार से तुमको स्वतंत्रता देने के लिए भी मैं तैयार हो जाता, परन्तु मेरे सामने जिन होनहार लड़कियों के प्रस्ताव हैं, उनको देखते हुए व अन्य गुरुजनों की सलाह को ध्यान में रखते हुए, मैं तुम्हारे हित की दृष्टि से ही इस बात को सामने रख रहा हूं। सतीश भी तो संबंध करके ही यहां से गया है।

पर मेरी बात रहने भी दो तो भी यदि पू० बापू एवं विनोबा को तुम सन्तुष्ट कर सकोगे तो फिर मेरे पास कुछ अधिक कहने को नहीं रहेगा।

सारी बातों का विचार करते हुए मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि छुट्टियों में तुम इधर आ सको तो आना ठीक होगा। कांग्रेस में भी हाजिर रह सकोगे। अबकी बार प्रदर्शनी का भी एक नया रूप देखने को मिलेगा। वातावरण भी नया रहेगा। तुम उस तरफ घूमना चाहते हो तो इधर भी घूम सकते हो। पू० बापू एवं पू० विनोबा से बातें भी हो सकेंगी। इससे भविष्य का प्रोग्राम निश्चित करने में सहायता मिल सकेगी। मौसम गर्मी का होने की वजह से धूप की कुछ तकलीफ तो रहेगी, परन्तु इससे तुम डरोगे नहीं, ऐसी आशा है।

सतीश का पत्र अंबालाल पटेल को पढ़ने के लिए दिया है। काका साहब के साथ वह यहां मिला था। अंबालाल की इच्छा भी विवाह करके ही यूरोप जाने की है, ऐसा कल उसने व काका साहब ने मुझे कहा है।

तुम्हारे मन पर इस घटना का क्या असर पड़ा ? लिखना । पर तुम अपना अभ्यास जारी रखना । उसमें ढील मत आने देना ।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च—आज अखबार में वहां की खबर पढ़कर मन में विचार चल रहा है ।

६४

८, एंडरसन रोड,
कोलम्बो, १-३-३६

पूज्य पिताजी,

आपका पहला पत्र, तार तथा दूसरा पत्र, सब साथ ही आज मिले । गोलीकाण्ड की घटना के समय मैं उनके स्थान मातले में ही होता, परन्तु उसी रोज मिस म्यूरियल लेस्टर आनेवाली थीं, उससे नहीं जा सका । वहां जाता तो श्री आलूविहारे की मोटर में ही होता । और यदि मरता नहीं तो घायल तो जरूर ही हुआ होता ।

आपको मेरा पहला पत्र मिला होगा । मैं इस घटना के बाद आपको तार करनेवाला था, लेकिन यह सोचकर कि आप ज्यादा चिंतित होंगे मैंने तार नहीं किया, लेकिन दूसरे ही रोज अखबारों की कटिंग जितनी मिलीं, आपको भेज दीं । शायद वे आपको समयपर पहुंच गई होंगी । एक-दो रोज में दूसरी कटिंग भी भेजूंगा । अभीतक ९ आदमी मर चुके हैं । एक-दो बहुत बुरी हालत में हैं । उनका बचना कठिन लगता है ।

श्रीयुत आलूविहारे के चुनाव का नतीजा २८ ता० को निकला । बहुत बड़ी संख्या से जीते हैं । चुनाव में उनके विरुद्ध तीन उम्मीदवार खड़े हुए थे । उन लोगों ने काफी पैसा खर्च किया था तथा श्री आलूविहारे पर गंदे व भद्दे आक्रमण किये गए । चुनाव के नतीजे से जब चारों ओर खुशी हो रही थी, विरोधियों ने श्री आलूविहारे पर गोली चलाकर घातक हमला किया । गोली के पांच वार हुए, उनमें तीन तो खाली गये । दो के सिर में चोट आई है । वे अस्पताल में हैं । उनकी तबीयत सुधर रही है । चिंता की बात नहीं

स्थान' वसूल किया गया। वह बहुत ही उदार वृत्ति के तथा बहादुर मुखिया माने जाते थे।

श्री आर्लूविहारे को आपका तार तथा पत्र का साराश बतला दिया है। वे यहा की कानून की परीक्षा के परीक्षक है। थोडे दिनों मे ठीक होनेपर और पेपरो की जाच मे छुट्टी पा लेने पर आपको लिखेगे। वे आपके तार और पत्रों के लिए बहुत ही अनुग्रहीत है।

उनके पिताजी की मृत्यु के लिए आपको तार करने की अब जरूरत रह नही जाती। पत्र मे जिक्र करदे तो काफी है।

मिस म्यूरियल लेस्टर से मैंने मुलाकात की। दो-तीन घटे तक खूब बाते होती रही। रविवार को सुबह उनका व्याख्यान था। मै सुनने गया था और वही मैने उनसे मुलाकात की। बाद मे उन्होंने १॥ बजे अपने स्थान पर मुझे बुलाया। करीब पाच बजे तक उन्हींके पास था। ३॥ बजे तक तो उन्होंने बाते की। मेरे मना करने पर भी उन्होंने समय की चिता नही की। बाई बहुत ही भली, प्रेमल तथा नम्र जान पडी। मुझसे तो बहुत प्रेम से बाते करती थी। उनका जीवन सादा तथा विचार उन्नत मालूम दिये।

विलायत मे उनकी देखरेख मे मुझे ज्यादा उत्साह और आत्म-विश्वास रहेगा। उनके साथ जो जापानी लडकी थी उससे भी काफी बाते हुई। लडकी सिद्धातवादी तथा कुछ अशो मे रूढिवादी, लेकिन सुधारक प्रवृत्ति रखनेवाली जान पडी।

उमा का पत्र मिला। उसकी आख के लिए काफी चिता-सी होती है। ईश्वर ठीक ही करेगा। विशेष कुशल,

आपका बालक

मदन

: ६५

वर्धा, ८-३-३६

चि० कमलनयन,

तुम्हारा पहली तारीख का पत्र तुम्हारी मा के पास रह जाने के कारण मुझे आज ही मिला है।

. ६७ .

कोलम्बो, १९-४-३६

पूज्य काकाजी,

कल सुबह आपका तार मिला। पंडित जवाहरलालजी ने समाजवादी लोगों को कार्यकारिणी समिति में लेकर मेरी समझ में अच्छा ही किया है। लेकिन मुझे शंका है कि कहां तक कांग्रेस का बहुमत पंडितजी की नई कार्यकारिणी समिति से संतुष्ट होगा। पंडितजी को राष्ट्र ने सभापति चुना है और पंडितजी ने कार्यकारिणी समिति को चुना है इस नाते वे संतुष्ट हो सकते हैं। मुझे भी लगता था कि पंडितजी की कार्यसमिति में एक-दो समाजवादी तो होने ही चाहिए।

मेरी समझ में श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय को उक्त समिति में जरूर लेना था।

उन्होंने सारी परिस्थिति को देखकर ही चुनाव किया है। श्रीयुत अच्युत पटवर्धन उत्साही नवयुवक जरूर है, पर शायद इनकी जगह पर श्रीमती चट्टोपाध्याय का चुनाव ज्यादा उपयुक्त होता। इसका यह मतलब नहीं कि अच्युत पटवर्धन कार्यसमिति के सदस्य होने लायक नहीं है।

अध्ययन ठीक चलता है। स्वास्थ्य अच्छा है। आपका आगे का प्रोग्राम लिखें।

बालक
कमल के प्रणाम

. ६८ .

वर्धा, ३-५-३६

प्रिय कमल,

तुम्हारा १९-४-३६ का पत्र यथासमय मिल गया था। वर्किंग कमिटी की पहली मीटिंग तारीख ३० को समाप्त हुई। इस बार तुम इस ओर रहते तो भारत की राजनीति में जो भिन्न-भिन्न तब्दीलियां हुईं, वे देख सकते। खैर!

श्री आलूविहारे के पिता के देहात की खबर तुम्हारे पत्र से मिली। परंतु
मुझे आशा थी कि कभी सीलोन जाना हुआ तो वहा उनसे भेट होगी, परन्तु
ईश्वर को वह मजूर नही था। उसकी इच्छा पूर्ण हो। मै श्री आलूविहारे
को अलग से नही लिख रहा, क्योंकि मै उन्हे उत्तर देने की तकलीफ नहीं
देना चाहता। परतु तुम मेरे भाव तो जानते ही हो। उनको मेरी हार्दि
सहानुभूति पहुचाना।

चुनाव और उसके बाद की घटनाओ से तुम्हारी पढाई मे हर्ज
काफी हुआ होगा परतु आशा है कि अब उसका सिलसिला यथापूर्व
जारी हो गया होगा। कल बापूजी दिल्ली गये है।

जमनालाल का आशी

६६

दिल्ली, २४-

चि० कमलनयन,

तुम्हारा पत्र मिला। सतीश के दोनो पत्र भी पहुच गये। पत्र लि
मै १० तारीख की शाम को इलाहाबाद पहुच गया था। जवाहरला
ता० की सुबह वहा पहुचे। वहा से बनारस, कलकत्ता और लखनऊ
हुआ १७ तारीख को यहा पहुचा।

आजकल यहा वर्किंग कमिटी की बैठक हो रही है। उसमे
समय देना पड़ता है। साथ साथ डेयरी-फार्म का काम भी है।
तो 'रिस्मर्स' पर नये 'हरिजन इडस्ट्रियल होम' मे ही है।
जवाहरलालजी व अन्य नेता तथा वर्किंग कमिटी के सदस्य भी
है। मदालसा या के साथ परसो हरिजन-मन्दिर के लिए अमृतसर
आज सवेरे वहा से यह लौटी है। २५ या २६ की शाम को यहा से
जाना होगा। यहा पर ग्रामोद्योग प्रदर्शनी के सबध मे काम है।

जमनालाल का

: ६७ :

कोलम्बो, १९-४-३६

पूज्य काकाजी,

कल सुबह आपका तार मिला। पंडित जवाहरलालजी ने समाजवादी लोगों को कार्यकारिणी समिति में लेकर मेरी समझ में अच्छा ही किया है। लेकिन मुझे लगता है कि कहां तक कांग्रेस का बहुमत पंडितजी की नई कार्यकारिणी समिति से सन्तुष्ट होगा। पंडितजी को राष्ट्र ने सभापति चुना है और पंडितजी ने कार्यकारिणी समिति को चुना है, इस नाते वे सन्तुष्ट हो सकते हैं। मुझे भी लगता था कि पंडितजी की कार्यसमिति में एक-दो समाजवादी तो होने ही चाहिए।

मेरी समझ से श्रीमती कमलादेवी चट्टोपाध्याय को उन्हें समिति में जरूर लेना था।

उन्होंने सारी परिस्थिति को देखकर ही चुनाव किया है। श्रीयुत अच्युत पटवर्धन उत्साही नवयुवक जरूर है, पर शायद इनकी जगह पर श्रीमती चट्टोपाध्याय का चुनाव ज्यादा उपयुक्त होता। इसका यह मतलब नहीं कि अच्युत पटवर्धन कार्यसमिति के सदस्य होने लायक नहीं हैं।

अध्ययन ठीक चलता है। स्वास्थ्य अच्छा है। आपका आगे का प्रोग्राम लिखें।

बालक
कमल के प्रणाम

६८

वर्धा, [illegible]

प्रिय कमल,

तुम्हारा १९-४-३६ का पत्र यथासमय मिल गया था। वर्किंग कमिटी की [illegible] तारीख ३० को समाप्त हुई। इस बार तुम इस ओर [illegible] भिन्न-भिन्न [illegible] हुई, वे देख सकोगे। [illegible]

तुम्हारा अभ्यास ठीक चल रहा होगा। मै इस बार कही बाहर नही जा रहा हू। यद्यपि आवश्यकता तो बहुत महसूस हो रही है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ६९ :

'काते वर्दे' जहाज पर से
११-७-३६

पू० पिताजी,

बम्बई से जहाज मे बैठने तक का हाल तो मा और उमा द्वारा मालूम हुआ ही होगा।

समुद्र मे तूफान तो काफी है। हमारी केबिन की खिडकी, जो समुद्र से ४०-५० फुट ऊची है, हमेशा बद रखनी पडती है क्योकि उसमे भी ऊपर तक पानी उछलकर आ जाता है।

हम २५ लोगो मे से मै और दूसरे दो-तीन ही ऐसे हे जिन्हे समुद्र का असर बिल्कुल नही हुआ। बाकी लोग तो दो रोज तक काफी तकलीफ मे रहे। आज कुछ अच्छे हैं। दो-चार रोज मे सब अच्छे हो जावेगे, ऐसी आशा है।

जहाज इतना हिलता है कि पत्र लिखने मे भी दिक्कत आ रही है।

आपके तथा पू० बापूजी के पत्र बम्बई मे मिल गये थे।

आपके पुत्र होने मे काफी जिम्मेदारी मालूम होती हैं। जितनी स्वतत्रता से मै विचार करना पसद करू, उतना नही कर पाता। शायद यह अकुश मेरे लिए लाभदायक ही साबित हो। परन्तु यह अकुश भी अकुश है, इसलिए मुझे पसद नही है। बडे बाप का बेटा होना कोई सहज खेल नही हैं। ऐसे बेटे को काफी सहना पड़ता है। इतना जरूर है कि मैने कम-से-कम सहा है और ऐसी मुसीबतें आगे भी कम-से-कम ही सहता रहूगा।

बड़े बाप का बेटा होते हुए भी मुझमे काफी ऐसी बाते हैं जो सर्वसाधारण बच्चो मे पाई जाती हैं। ऐसे ही गुणो पर [illegible] आधार है विश्वास है। वही मेरी पूजी है, जिससे कि मै [illegible]

मदालसा से मिलकर इस समय मुझे

सर्वथा उचित व योग्य ही हो रहा है। जिन गुणों का मैं भूखा हू और जो जीवन मुझे आदर्श मालूम होते है, वे उसके आचरण मे स्वाभाविक रूप से आ रहे है। उसे पूरी स्वतत्रता देने मे मुझे किसी प्रकार का डर या सकोच नही है। यद्यपि मैं परदेश जा रहा हू, फिर भी मैं जितनी स्वतत्रता मदालसा के लिए जरूरी समझता हू उतनी स्वतत्रता की मैं अपने लिए कल्पना भी नही कर सकता। वह नालवाडी मे भी रहकर ज्यादा स्वतत्रता से रह सकती है, मैं लदन मे भी रहकर आपके आदेश मे रहूगा। उसकी स्वतत्रता मे आपने कमी की तो उसकी उन्नति मे बाधा आवेगी और जितनी स्वतत्रता मैं जबरदस्ती आपसे ले लू, उसमे वही आपने मुझे ज्यादा दी, तो मेरी अवनति अनिवार्य है। मदालसा की स्वतत्रवृत्ति है, मेरी स्वच्छद प्रवृत्ति है। एक को आपको उत्साहित करना चाहिए, तथा दूसरे को निरुत्साहित करना चाहिए। आजतक तो आपका बर्ताव ऐसा ही रहा है। आगे, चूकि मैं परदेश जा रहा हू, आपको मेरी तरफ से ज्यादा सचेत होने की आवश्यकता जरूर है। आप और जिन लोगो पर मुझे श्रद्धा है वे मुझे दूर से भी काबू मे रख सकते है, जबकि अन्य लोग साथ मे रहते हुए भी मुझे अपने वश मे नही रख सकते।

इस चीज का आप समझते नही है, ऐसा नही है। मैने दूसरो मे सुना भी है कि यही बात आपने दूसरे रूप मे औरो से मेरे बारे मे कही है। परन्तु मेरा इस बात को स्पष्ट कर देना ज्यादा जरूरी है। यद्यपि इसमे आपको कोई नई बात नही मालूम हुई, तब भी मेरा दिल हलका हो जाता है।

उमा के लिए मैने काफी सोचा है। उसका प्रश्न बडा कठिन है। उमा के और मेरे कई गुण-दोषो मे समानता है। वह अकेले अपनी जिम्मेदारी पर कही ज्यादा रही नही इस कारण विचार-शक्ति, हिम्मत, आत्मविश्वास आदि गुणो का विकास करने का उसे उचित अवसर नही मिला।

वह लडकी है। यह भी उसकी एक सबसे बडी कमी है। यदि वह लडका होती तो उसका सवाल भी, जितना मेरा सवाल था या है, उससे ज्यादा कठिन नही होता।

बालक
कमल के प्रणाम

[illegible] १४-२-३६

[illegible]

२० [illegible] जहाज पर से
१०-७-३६

पू० पिताजी

आपको [illegible] मसावा से भेजा हुआ पत्र मिल गया होगा, या इस पत्र के साथ ही मिलेगा। वह पत्र साधारण डाक से भेजा था जबकि यह 'एयर [illegible] से जायगा। मसावा पहुंचने के पहले की खबरें तो आपको पहले में मैंने लिख दी थीं।

मसावा शहर इटालियन एरिट्रिया में है। यहां हमें तीन-चार घंटे घूमने के लिए मिले। अबीसीनियन लोगों को भी देखने का मौका मिला। कुछ हिन्दुस्तान के व्यापारी रहते तथा बाहर लोगों से भी मुलाकात हुई। वे इटली और अबीसीनिया की लड़ाई के समय की अमानुषिक बातें बताते थे। आजकल भी, वे लोग कहते थे, कि गांवों में काफी अत्याचार होता है। जितनी बातें उन्होंने कहीं वे सत्य हों, तो उनका दसवां हिस्सा भी भारत के अखबारों में प्रकाशित नहीं हुआ है। इटालियन सेना के कई सिपाही भी मसावा से हमारे साथ हो गए हैं। उन लोगों की आदतें आदि जानने का काफी अच्छा मौका मिल गया है। मसावा पहुंचने के एक-दो रोज पहले ही सब लोग अच्छे हो गए थे।

[illegible]र साहब, जो आपके साथ विले पार्ले छावनी में काम करते थे, [illegible] लड़का भी हम लोगों के साथ है। उससे मेरी अच्छी दोस्ती हो गई है। का[illegible] अच्छा लड़का है। वह तो सिर्फ तीन-चार महीने घूमने-फिरने के इरा[illegible] [illegible]रोप जा रहा है। बाकी के लोग जो हमारी पार्टी में है, उन्हें पारच[illegible]

रीति-रिवाज की गंध तक नहीं है। उन्हें 'टेबिल मैनर्स' आदि बातें हमीं दोनों को बतलानी पड़ती है। अंधों में काना राजा है।

डा० पटवर्धन ने तो काफी मेहनत की, लेकिन समय के तथा धन के अभाव से जैसी टीम चाहते थे, वे चुन नहीं सके। मालूम होता है पांच-छः आदमी, जो सचमुच में अपने-अपने विषयों में बहुत ही कुशल खिलाड़ी हैं, वे जरूर हिन्दुस्थान का नाम करेंगे। बाकी के लोगों में ज्यादातर साधारण ही हैं। शायद हिन्दुस्तान में उनको इतनी तारीफ न मिले जितनी पाश्चात्य देशों में वे कमा सकेंगे। दो-चार मेरे जैसे लोग भी इस टीम में हैं, जो टीम का नम्बर बढ़ाने के काम आवेंगे। साधारण कवायद वगैरा उन्हें सिखा दी गई है। कबड्डी खोखो आदि खेलों में वे भाग भी ले सकेंगे।

इतना होते हुए भी वे शायद अच्छा ही काम कर बतावेंगे। सबसे बड़ी कमी, जो मुझको मालूम होती है, वह यह है कि इनमें एक भी ऐसा आदमी नहीं है जो पहले कभी यूरोप गया हो और जिसे जरा भी पाश्चात्य संस्कृति या सभ्यता से परिचय हो। जोरों से चिल्लाते हैं। मेज पर अस्त-व्यस्त, चाहे जैसे खाते हैं। कई छोटी-छोटी बातें ऐसी हैं जो बिना कारण ही टीम के प्रति खराब असर पैदा कर देती है। ये देश के जाटों से ज्यादा सभ्य नहीं मालूम देते। उन्हें कितना भी समझाने की कोशिश करो वैसे-के-वैसे ही रहते हैं। मेरा खयाल था कि टीम में दो-चार आदमी ऐसे जरूर होंगे जिनसे मुझे जहाज में व्यवहार, तौर-तरीके आदि की काफी बातें सीखने को मिलेंगी। परन्तु सीखना तो दूर रहा, हम ही दो लोग हैं जो उन्हें कुछ बतला सकते हैं।

जर्मनी में हम लोगों को यदि चाय या रात के भोजन के लिए कहीं जाना पड़ेगा तो परिस्थिति मुझे बहुत ही गंभीर मालूम होती है। वहां के लोगों पर जो असर होगा, उसका अंदाज लगाना कठिन नहीं है। बाकी अखबारवाले तो यूरोप और हिन्दुस्तान दोनों जगह तारीफ करेंगे, क्योंकि यह टीम उन्हें जो खेल ओलम्पिक में बतलावेगी वे उनके लिए नई चीजें होंगी। यदि वे हम लोगों की जंगली आदतों के बारे में टीका-टिप्पणी न करें, तो खेलों के संबंध में तो आशा है, पहली बार अच्छा ही असर होगा।

आज हम स्वेज पहुच जावेंगे। वहा से सभव हुआ तो काहिरा आना
। हमारा जहाज इटालियन होने के कारण स्वेज मे उतरने के समय कुछ
वक्त होना सभव है। बर्लिन मे मेरा १० अगस्त तक रहने का विचार
, उसके बाद स्विटजरलैंड या फ्रास मे घूमते हुए, मै और खेर साहब का
ड्का श्रीकृष्ण, अगस्त के अखीरमे सप्ताह तक लन्दन पहुचेगे। बर्लिन के
ाद मुझे आप खत लन्दन ही भेजे। मिस लेस्टर को मै एक पत्र डाल रहा हू।
हमारी टीम के बारे मे जो अखबारो मे छपे उसकी कटिग जरूर भिज-
वाये। मेरा स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। आप किसी प्रकार चिंता नही करे।

आपका बालक
कमल

७१

बर्लिन, २९-७-३६

पू० काकाजी,

आपको मेरी गये सप्ताह भेजी हुई खबर मिली होगी। पोर्ट सईद के
बाद आप लोगो मे से किसीका भी खत अभीतक नही मिला है।

बर्लिन की आब-हवा बहुत अच्छी मालूम होती है। अभीतक तो सूरज
हर रोज निकलता है, ठड ज्यादा नही पडती। कभी-कभी दिन मे भी थोडी
गर्मी मालूम होती है। बरसात बीच-बीच मे कभी घटा-आध-घटा हो जाती
है। दृश्य वगैरा यहा बहुत सुंदर है। बर्लिन इतना बडा शहर होते हुए भी
बाग-बागीचो की यहा कमी नही है। इससे शहर मे काफी हरियाली बनी
रहती है। जर्मन लोग खुली हवा खूब पसद करते है। यहा 'ओपन एय
थियेटर' भी है। वह देखने लायक है। अप्राकृतिक रूप से उसे बनाया ग
है। फिर भी आसपास की प्राकृतिक सुदरता काफी अच्छी मालम देती है

नाजी सरकार यहूदी लोगो और अनार्य लोगो से बहुत कडा व्य
हार करती है। हिन्दुस्तानियो को भी सामान्यत नीची निगाह से दे
है। वर्षो से यहा रहनेवाले भारतीय नाजी सरकार के इस व्यव
से सतुष्ट नही है। इतना होते हुए भी आजकल तो बिना कुछ भेदभाव
सबकी खूब खातिरदारी करते है। ओलम्पिक मे भाग लेनेवाले प्र

सदस्य को उन्होंने 'आइडेंटीफिकेशन कार्ड दिये है, जिसपर सदस्य की फोटो होती है । उस कार्ड से वे बर्लिन के अन्दर रेलवे, बस, ट्राम आदि से मुफ्त आ-जा सकते है । खाने-रहने का भी हम सब लोगो का इन्तजाम मुफ्त है । हम लोग जहा भी जाते है, जनता खूब कुतूहल, आश्चर्य तथा श्रद्धा से हमारा सम्मान और सत्कार करती है । अभीतक पता नही कितने लोगो को अपने हस्ताक्षर हमें देने पडे होंगे । जहा जाते है वहा सैकडो की तादाद मे लोग चित्र खीचते है । यहा की जनता तथा सरकारी नौकर भी बडी सभ्यता से पेश आते है । हमारे आराम के लिए वे हरेक प्रकार का काम-काज करने को तैयार रहते है । रास्ता भूल जाने पर यहा के लोग अपना काम छोडकर बडी खुशी से दो-दो तीन-तीन फर्लांग और कभी-कभी तो मील-मील, दो-दो मील तक हमें पहुचाने स्वय आते है । इतना सब तो वे दुनिया पर अपनी अच्छी छाप डालने के लिए करते है । जनता इसलिए उत्सुक रहती है कि उन्हे हम लोगों से बात करने को मिल जाता है।

यहा के लोग काफी सम्पन्न, सभ्य तथा आनदी मालूम देते है । हिन्दुस्तानियों की तरह उन्हें जिंदगी भार-स्वरूप नही मालूम देती, बल्कि वे अच्छी-से-अच्छी जिंदगी बिताने को तत्पर रहते है ।

नाजी सरकार ने ओलम्पिक खेलो के लिए अरबो रुपया खर्च किया है । अलग-अलग खेलो के लिए अलग-अलग स्टेडियम बनाये है और वह भी एक-से-एक बढकर । छोटे-से-छोटा स्टेडियम भी, जो शायद टेनिस, वालीबाल, बास्केटबाल आदि खेलों का होगा, उसमे भी २० से ४० हजार आदमियों के बैठने की व्यवस्था है । ऐसे सब स्टेडियम कुल मिलाकर दस-बारह तो होंगे । बडा-से-बडा स्टेडियम, दस लाख आदमी बैठ सके, ऐसा बनाया है। २०-२५ हजार लोग खडे भी रह सकते हैं। वह स्टेडियम तो एक अद्भुत चीज मालूम होती है।

इतना सब पैसा बर्बाद करने का मुख्य उद्देश्य तो मुझे यही लगा कि सारी दुनिया पर यहा की सरकार अपना प्रभाव डालना चाहती है । इसके साथ-ही-साथ खेलो तथा व्यायाम पर वह खूब जोर देना चाहती है । जर्मनी मे सैनिक शिक्षा सबके लिए अनिवार्य है । यहा की सैनिक शिक्षा तथा उसके नियम देखकर मुझे घृणा-सी हो गई है । इसमे शक नहीं कि यहा के लोगो

ने खेलों में, भिन्न-भिन्न व्यायाम करने की पद्धति में तथा सैनिक शिक्षा में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की है । लेकिन शिक्षा यहा की इतनी सख्त होती है कि मनुष्य मनुष्य न रहकर मशीन हो जाता है । हिटलर और मुसोलिनी, दोनों जनता को ऐसी ही जीती-जागती मशीन बनाने में लगे है । ये लोग अपने देश की आत्मा पर ही आघात कर रहे हैं । इन देशों का भविष्य मुझे उज्ज्वल नही मालूम देता । यूरोपियन सैनिक-शिक्षा में जिस प्रकार की मनोवृत्ति बन जाती है, उसमें विश्व-युद्ध अनिवार्य-सा मालूम देता है । जब बड़ी मशीन में जिस प्रकार उसके तमाम पुर्जों में एकता रहती है, उसी प्रकार यूरोपियन राष्ट्रों में, खासकर जहा सैनिक शिक्षा अनिवार्य है, जन-समूह में एक प्रकार की एकता तो जरूर है लेकिन वे मशीन के पुर्जों के माफिक जुड़े हुए मालूम देते है । आत्मिक एकता की बनिस्बत शारीरिक एकता पर ही ज्यादा महत्त्व दिया जाता है ।

यहा पर देखना तथा घूमना वगैरा तो होता ही है, लेकिन अन्य राष्ट्रों के जो खिलाड़ी आये हुए है उनसे चर्चा करने में मैं काफी समय देता हू और इससे मुझे बहुत जानकारी मिलती है । दुनिया के लगभग सभी देशों के नवयुवक यहा जमा हुए है । उनके रीति-रिवाज, आचार-विचार सहज में ही जानने को मिलते है । नवयुवक सभी देशों के करीब-करीब उदार दिल के व विस्तृत विचारवाले मालूम देते है । कई देशों की ऐसी टीमें भी आई है जो अपने काम में कुशल है । मुझे यहा आने से खेलों की बनिस्बत अन्य जानकारी ही ज्यादा लाभदायक मालूम देती है । इस मौके का मैं पूरे-से-पूरा लाभ उठाने की कोशिश करता हू ।

यहा पर कैम्प का जीवन बिताना पडता है तथा यूरोपियन सैनिक कैम्प तथा उसका जीवन किस प्रकार होता है, इसका भी अच्छा अनुभव मिल रहा है ।

इस पत्र पर लगी टिकटे ओलम्पिक के समय खास जारी की गई टिकटे है । उसका पूरा सेट धीरे-धीरे इकट्ठा करके रामकृष्ण को भेजूगा । ये टिकटे थोडे दिन तक ही चलेगी । काम में लाई हुई ये टिकटे भी आज कम दामो पर बिकती है । इसका पूरा सेट सभालकर रखने को उसे कह दीजियेगा । आगे जाकर इस सेट की कीमत काफी बढ़ जायगी, ऐसा लगता है ।

साथ के पत्र पू० बापूजी तथा महादेवभाई को दे देवें । मेरी किसी प्रकार चिंता नहीं करें । लन्दन पहुंचने तक आपको एअर मेल से हर सप्ताह पत्र भेजता रहूंगा । मैं डायरी नहीं लिखता । डायरी की बातें आपको पत्रों में ही लिख दिया करूंगा । इसमें इन पत्रों को आप अपने पास अलग फाइल में या सावित्री रखना चाहे तो उसे रखने दीजियेगा । हिन्दुस्तान के समाचार नहीं मिल रहे हैं । आपके पत्रों की राह आतुरता से देख रहा हूं विशेष कुशल ।

आपके बालक
कमल के प्रणाम

७२

चि० कमल, वर्धा १३-८-३६

तुम्हारे पत्र बराबर मिलते हैं ।

मैं ता० १७ को यहां से बम्बई के लिए रवाना होऊंगा । वर्किंग कमेटी, ए०आई०सी०सी०, पार्लियामेंटरी बोर्ड की सभाएं हैं । पू० राजाजी फिर हमेशा के लिए कांग्रेस से रिटायर हो गए । त्रिचनापल्ली के डा० राजन उनके बड़े साथी हैं । म्युनिसिपल इलेक्शन में डा० राजन चेअरमैन की जगह चुनाव में हार गये, इससे राजाजी को बहुत दुःख हुआ । इस हार का कारण वे बताते हैं कि कांग्रेस के भीतर अनुशासन की कमी है । यह स्टेटमेंट पढ़कर राजाजी के सभी मित्रों को बहुत दुःख हुआ है ।

जमनालाल का आशीर्वाद

७३

वर्धा २४-९-३६

प्रिय कमल,

तुम्हारा ११-९ का पत्र बम्बई से तुम्हारी मां के पास से मेरे पास आया । तुम कोलम्बो की परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं हुए, बाद में लन्दन में परीक्षा में बैठे, उसमें भी आशा कम है, यह मालूम हुआ । मुझे खुद को तो परीक्षा का मोह नहीं है और तुम सफल नहीं हुए, इसका विशेष विचार भी नहीं है । परन्तु मैंने तुम्हें बहुत समझाकर कहा है कि तुम इस प्रकार की परीक्षा का

पढाई का मोह छोड सको तो तुम्हारे लिए ज्यादा अच्छा है। तुम एक बार दो बार, तीन बार फेल होते रहो, यह मुझे तुम्हारे भविष्य की दृष्टि मे कुछ ठीक मालूम नही देता। तुममे बुद्धि व विचार-शक्ति तो काफी है, परतु परीक्षा के लिए जिस प्रकार के परिश्रम व वृत्ति की आवश्यकता है, वह न तुममे है और न मुझमे। इसलिए मेरी तो वही पहलेवाली ही राय है कि तुम सब तरह का ज्ञान थोडे समय मे प्राप्त कर यहा आने का विचार रखोगे तो तुम्हारे लिए ज्यादा लाभदायी सिद्ध होगा। इतने पर तुम्हारी इच्छा।

चि० रामेश्वर के बारे मे तुमने जो राय लिखी है, वह प्राय ठीक मालूम देती है। उसका भी एक छोटा-सा सुदर पत्र आया है। तुम्हारे लिए ठीक राय लिखी है।

चि० उमा को यूरोप भेजने के बारे में तुम्हारे विचार जाने। मुझे विशेष उत्साह नही है। तुम्हारे आने पर तुमने क्या लाभ प्राप्त किया, वह देखने के बाद उसका आग्रह होगा तो भेजना ही होगा; अन्यथा विवाह के बाद ही जाना ठीक रहेगा।

चि० सावित्री के साथ तुम्हारी सगाई हो गई, उससे तुम्हें सतोष रहता है, जानकर सुख होता है। चि० सावित्री के लिए मेरे मन मे भी खूब प्रेम व आशा बढ रही है। परमात्मा ने किया तो वह भी एक होनहार बालिका निकलेगी। दिसम्बर मे तो वह मेरे पास रहेगी ही। बन सका तो उसे नवम्बर मे ही बुला लेने का विचार है।

तुम्हारा यह पत्र भी मैंने सावित्री के पास खानगी निशान कर भेज दिया है।

बापू के सबध की श्री वकील की भविष्यवाणी (१८ अक्तूबर को दिन के १० बजे हार्टफेल होने की) गलत ठहरी, इसका तो समाधान है। परतु उनकी भविष्यवाणी से तुम्हारी मा बहुत चिंतित रही। यहा भी थोडी चिता रही और कुछ व्यवस्था रखनी पडी। बिना कारण तार का खर्च भी हुआ। मुझे तो विश्वास नही था। भविष्य मे तुम भी खयाल रखना।

ता० २० को आशादेवी के बालक का नाम-सस्कार था। करीब १२५ लोगों को निमंत्रित किया था। श्री राजेन्द्रबाबू व खान साहब भी थे।

जमनालाल का आशीर्वाद

७४ .

जुहू (बबई),
१२-१०-३६

चि० कमल,

तुम्हारा तारीख २९-११ का पत्र मिला।

डा० स्टेनली जोन्स मिले, सो ठीक।

कु० मेरी जिलेट के बारे में मालूम हुआ।

चि० मदन पित्ती भारत कब आरहा है? उसे मिलो तो कहना इधर उसका पत्र नहीं मिला।

श्री परांजपे का लड़का क्या पढ़ता है? उसका नाम क्या है?

कुमारी अगाथा हेरिसन ने तुम्हे व चि० इन्दिरा को नाश्ते के लिए बुलाया था, सो ठीक। भारत में आने पर उनसे मिलना होगा ही।

चि० इंदिरा का स्वास्थ्य क्यों ठीक नहीं रहता? उसमें जो फर्क हुआ है, वह किस प्रकार का दिखाई देता है? क्या उससे कुछ भारत की राजनीतिक सेवा की आशा रखी जा सकती है? तुम मिलो तो मेरा आशीर्वाद कहना और स्वास्थ्य ठीक रखने को कहना।

श्रीपाठक साहब का पत्र आया है। तुम उनसे मिले, ऐसा उन्होंने लिखा है। तुमने तो उनकी मुलाकात के बारे में कुछ भी नहीं लिखा। मेरी तो यह इच्छा है कि तुम उनसे अवसर मिलते रहो। मेरे वह मित्र भी है। मैं उन्हे बहुत ही आदर की दृष्टि से देखता हू। मुझे उनकी सगत से ठीक लाभ पहुचा है। तुम उनके कुटुम्ब से सपर्क बढा सकोगे तो मुझे सुख मिलेगा। श्रीपाठक को मैंने पत्र लिखा है। मैं तो उन्हे भारत बुलाना चाहता हू। तुम भी मेरी ओर से कहना।

सर सादीलालजी से भी एकाध बार तो जरूर मिल लेना। उन्होंने मिलने को कहा है।

तुम जनवरी में फिर लदन मैट्रिक की परीक्षा दोगे, सो ठीक है। अंग्रेजी भाषा पर अपना पूरा अधिकार करने के लिए तुम्हें पूरी कोशिश करनी चाहिए। इसमेंश्री पाठक की राय भी लेना। मेरी राय से तो विद्वान

ज कुटुम्ब मे रहने से ही अंग्रेजी सुधर सकेगी । इसका तो तुम्हे पूरा
ाल रहेगा ही ।

चि० सावित्री के पत्र मेरे पास भी बराबर आते रहते है । उसका
जन चार रत्तल बढा है ।

तुम्हारी माता का स्वास्थ्य बहुत ठीक हो रहा है । उसे पूरा सतोष
है । उसका स्वास्थ्य सुधर जायेगा, तो मानसिक स्थिति भी सुधर जायेगी ।
हिम्मत व विश्वास बढ जाने से उसे भी सुख व समाधान मिलेगा और
घर का वातावरण और भी सुदर व सुखकर हो सकेगा । मुझे भी अधिक
शाति मिल सकेगी ।

श्री नगीनदास मेहता आज मुझसे मिलने आया था । जुहू पर उसने
बर्लिन के सब फोटो दिखलाये । तुम्हारी मा व उमा भी थी । तुमने
सगीत मे भाग लिया व कबड्डी मे भी, यह सब बताया ।

यहा जुहू मे जमीन ली है । वहा एक छोटा-सा बगला बनाने का
विचार है । तुम्हारे ध्यान मे कोई प्लान हो तो लिखना । उसका खयाल
कर लिया जायेगा ।

जमनालाल के आशीर्वाद

७५ .

डब्लिन, ३१-१०-३६

पू० काकाजी,

जुहू से लिखा आपका पत्र ता० १२-१० का मिला ।

मा का स्वास्थ्य सुधर रहा है; जानकर बहुत सुख होता है । उसका
स्वास्थ्य अच्छा रहे तो उसकी चिता भी मिटेगी । मानसिक शाति मिलने
से उसे सभी प्रकार लाभ पहुचेगा । आपको तो आराम मिलेगा ही, लेकिन
अपने घर का आधे से ज्यादा फिजूल सोच कम हो जावेगा । अब एक
बार वह बिलकुल स्वस्थ हो जाय तो किसी प्रकार का भय फिर नही
रह जाता ।

उमा की सगाई तो कर देने मे हर्ज नही है । मुझे कभी-कभी लगता
था कि अपने उदार स्वभाव तथा बडो के प्रति आदर होने की वजह से

वह कभी-कभी सकोच कर जाती है। कुछ आदर्शों को सामने रखकर विवाह करने की अपेक्षा अपनी रुचि व इच्छा के अनुसार उसे विवाह करने की पसंदगी होनी चाहिए। आपसे वह शायद उतनी खुलासेवार बात अपनी रुचि के हिसाब से नहीं कर पाती, जितनी वह मेरे साथ कर लेती है। आज से चार-पांच वर्ष पहले जब आप मुझसे ऐसी बातें करते थे, तब, यद्यपि मैं आपसे काफी साफतौर से बातें करता था फिर भी आपके आदर्शों का प्रभाव मुझ पर पड़ता था और मेरे विचारों पर उसका गहरा असर होता था। कभी-कभी तो ऐसा भी मेरे मन में लगता था कि आप तो उदार हैं और अपनी उदारता और आदर्शों के बीच हम बच्चों को, पता नहीं, कहां फंसा देंगे।

मैं पूरी तरह समझता था कि आप सब तरफ से सोचेंगे पर जैसा अपने घर का वातावरण है, उसके प्रति श्रद्धा और प्रेम रखते हुए अपनी रुचि के अनुसार, जरूरत हुई तो, भिन्न मार्ग लेने के लिए काफी आत्म-विश्वास, हिम्मत, होशियारी तथा नम्रता की जरूरत होती है।

उदाहरण के लिए, आश्रम की लड़कियों के प्रति मुझे हमेशा श्रद्धा रही है। वे आदर्श गृहणियां होंगी इसमें भी मुझे शंका नहीं थी फिर भी मैं किसी आश्रम की लड़की से विवाह करने को तैयार नहीं होता। मुझे आदर्श लड़की नहीं चाहिए थी। मैं चाहता था मुझे मेरे ही माफिक कोई शैतान लड़की मिले। चरखा-तकली के प्रति श्रद्धा हमेशा रही। इसी प्रकार प्रार्थना में भी मेरा पूरा विश्वास है। पर जबतक चरखा तकली और प्रार्थना मेरे जीवन के अंग नहीं बन जाते, मैं ऐसी लड़की से विवाह कर पूरा सुख प्राप्त नहीं कर सकता था जो कि चरखा तकली और प्रार्थना आदि इसी प्रकार के आदर्शों के प्रति समर्पित हो। मैं यह जरूर चाहता था कि लड़की ऐसी जरूर हो जो आदर्शों को माने, लेकिन स्वयं आदर्शमूर्ति न हो।

अपनी इस रुचि को आप लोगों के सामने रखना एक जटिल समस्या थी। मेरे मन में छिपाने का कुछ भी भाव नहीं है, पर आप लोगों के सामने अपने विचारों को किस प्रकार रखना, यह मुझे पहले-पहल तो नहीं सूझ पड़ता था। आगे जाकर मैं किस प्रकार अपनाचाहा आप लोगों को

समझा सका और अभी तक करना आया, यह अब भी मुझे आश्चर्य-सा मालूम होता है । ऐसी परिस्थिति में उमा के मन में उसके न चाहते हुए भी किसी प्रकार का संकोच रह जाता हो तो मुझे आश्चर्य नहीं होगा ।

जब सीलोन में था तब यह नहीं सोचा था कि विलायत जाने के पूर्व मैं अपनी सगाई की अनुमति दे दूंगा । चर्चा होने पर अपने बारे में न सोच कर बहनों के बारे में ही सोचता था । पर जब समय आया तो मैंने सबध तो अपना कर लिया और बहनों के बारे में सोचता ही रहा । उनसे कह भी नहीं सका कि उनके लिए मैं क्या सोचता हू । सबसे ज्यादा मैं उमा के सबध के लिए ही सोच रहा हू । अपने सबध में मुझे कभी ज्यादा सोचना नहीं पड़ा ।

लड़कियां दिल की ज्यादा साफ होने के कारण उन्हे ज्यादा आकर्षण होता है । उमा को जबतक किसी लड़के के लिए आकर्षण नहीं हो, मेरी राय में, तबतक उसका सबध नहीं करना चाहिए ।

उमा का सबध करने में यदि आप मेरा वहां किसी प्रकार उपयोग समझे तो लिखिये । मैं १९३७ की गर्मी तक आने की कोशिश करूंगा और मुझे आने में उत्साह भी रहेगा । अपना विवाह करने का मुझे स्वय अभी उत्साह नहीं है। सावित्री को यदि विवाह करने से कुछ लाभ मिल सकता हो तो मैं भले ही विवाह जल्दी भी करलू, पर उससे मेरा सारा प्रोग्राम अस्त-व्यस्त हो जायेगा ।

जुहू मे आप जगह ले रहे है, सो ठीक । मेरे ध्यान में कोई खास प्लाट अभी नहीं आ रहा है । मैं चाहूंगा कि, जहा तक हो सके, घर के चारो तरफ काफी खुली जमीन रहनी चाहिए ।

चार-पाच गाय, दो-चार घोड़े, एक-दो मोटर, एक-दो विमान के रहने की जगह तो वहां होनी ही चाहिए । यदि ये चीजे नहीं भी हुई तो गाधी सेवा-सघ को मीटिंग के लिए ही वह जगह काम आ सकेगी । मेरे कहने का मतलब इतना ही है कि मैदान आपको काफी लेना चाहिए । खाड़ी के पास की जमीन लेना ठीक नहीं होगा । वहा का पानी बड़ा सड़ता है। आप स्वय भी इन सब बातो को सब तरह से सोच तो लेगे ही ।

दो नई भाषाएं सीखनी है, इससे काम काफी करना पड़ता है। आपको

र १५-२० रोज के अन्दर मे पत्र दिया करूगा। पत्र न आवे तो चिन्ता
न करें। यहा के पोस्टमास्टर की स्त्री अच्छी बाई है, और मेरे लिए खास
खाना बनवाती है। गरम कपडा का पूरा इन्तजाम है। बरफ पडेगी तो
कमरे मे आग जलाने का बदोबस्त है।

विशेष कुशल।

कमल के प्रणाम

३६

बबई, ९-१२-३६

चि० कमल,

तुम्हारे पत्र बराबर मिलते रहते है। वर्किंग कमिटी की बैठक के लिए मै कल यहा आया। आज १ बजे से भूलाभाई के मकान पर बैठक होगी।

चि० रामकृष्ण परसो से मारवाडी बोर्डिंग, वर्धा मे रहने लगा है। श्री आर्यनायकम् और श्रीमन् की उसपर देखरेख रहेगी। मारवाडी विद्यालय का नाम बदल कर अब 'नवभारत विद्यालय' रखा गया है। इसी प्रकार 'हिन्दू महिला मडल' का नाम 'महिला सेवा मडल' हो गया है।

अपने खर्चे का बजट, भविष्य, इग्लिश मैट्रिक की परीक्षा के बाद का प्रोग्राम आदि लिख भेजना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ७७ :

वर्धा, ८-१-३७

चि० कमल,

इन दिनों तुम्हारा कोई पत्र नही मिला। मै फैजपुर काग्रेस के बाद यहा आया। श्री जानकीदेवी, चि० उमा तथा चि० कमला तो बबई गये थे। मै भी आज धूलिया होकर बबई जाने के लिए रवाना हो रहा हू।

यहा डा० पोलक आये थे। कु० मिस हेरिसन भी आई थी। वह तुम्हारे बारे मे पूछ रही थी।

जमनालाल बजाज का वन्देमातरम्[1]

७८

वर्धा, २०-२-३७

प्रिय कमल,

तुम्हारे ता० ६ व ९-२ के पत्र मिले थे।

परीक्षा आदि के बारे मे तो मेरे विचार वही है, जो तुम्हे कई बार साफतौर से कहे है। मेरी इच्छा तो यही है कि तुम कुछ और समय तक वहा का सब प्रकार का साधारण अनुभव लेकर भारत वापस आओ। श्रीलक्ष्मणप्रसादजी की इच्छा जल्दी विवाह करने की है। वह भी पूरी हो जायेगी। उसके बाद ही चि० सावित्री का यहा रहना संभव दिखता है। पहले भेजने की उनकी इच्छा कम है। चि० सावित्री का सब दृष्टियो से यहा रहना बहुत ही जरूरी है। यहा आने पर तुम्हे व्यापार का काम हाथ मे ले लेना चाहिए। साथ मे थोडा अभ्यास भी जारी रखा जा सकता है। एक-दो वर्ष बाद तुम्हारी इच्छा हो तो तुम कुछ समय के लिए फिर

---

१ उपरोक्त पत्र के उत्तर मे कमलनयन ने लिखा—

"शायद आदत से लाचार हो सभी चिट्ठियो पर जिस प्रकार सही कर दिया करते है, उसी प्रकार आपने मेरी चिट्ठी पर भी सही कर दी है। आपके 'वन्देमातरम्' स्वीकारने के लिए मै तैयार नही हू। आपके प्रेम और आशीर्वाद के लिए जो मेरा हक है, वह कभी नही छोडने वाला हू। आप अपने लडके को भूल सकते है और उसे 'वंदेमातरम्' भी लिख सकते है, लेकिन शायद यह मेरा दुर्भाग्य ही हो कि मै अपने पिताजी को नही भूल सकता। टाइप किये हुए पत्र भेजने पर ऐसी गलतिया हो तो कोई ताज्जुब नही। आपका पत्र वापस लौटाने की धृष्टता के लिए क्षमा करें। अपने सेक्रेटरी साहब से कहे कि 'कुमारी' और 'मिस' साथ-साथ नही लिखा जाता।"

जा सकते हों। अन्यथा चार-पांच वर्ष बिना किसी खास परिणाम के व्यर्थ जाते नजर आते हैं। मुझे तो यह भी डर है कि शायद फिर तुम व्यापार के लायक न रहो, क्योंकि फिर उसकी आदत छूट जावेगी। यदि तुम शांत-चित्त से इस पर विचार करोगे तो मेरी सलाह में तुम्हें जरूर वजन दिखाई देगा। मुझे तो लगता है कि तुम ऐसा नहीं करोगे, सो बड़ी भूल होगी। मेरी यह इच्छा होते हुए भी आखिर तुम जो उचित समझोगे या परमात्मा तुम्हें जिस प्रकार की बुद्धि प्रदान करेगा, उसमें संतोष मान लूंगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

७९

वर्धा, ९-५-३७

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैं कल कलकत्ते जा रहा हूं। वहां जाने से श्री लक्ष्मणप्रसाद जी के साथ विवाह-स्थान आदि के बारे में बातें भी हो सकेंगी।

रजिस्टर्ड विवाह करने की अपनी कल्पना तुमने लिखी, इस विषय में भी कलकत्ते विचार हो सकेगा। मुझे खास कोई आपत्ति नहीं है अगर चि० सावित्री व लक्ष्मणप्रसादजी पसंद करते हो तो। श्री डंकन ने १७५ रुपये तुम्हें दिये हैं, सो ठीक। उनको यहां से भी पत्र लिख दिया जायेगा।

मैं यहां ता० १६ की शाम को वापस आ जाऊंगा। मैंने दो अखबारों पर मानहानि का दावा कर रखा है। उसमें मेरी गवाही, जिरह चल रही है। कोर्ट में ठीक जमघट जमता है।

तुम आओगे तब तुमको भी सुनने को मिलेगा। ता० १४ जून से १९ जून तक फिर मुझसे जिरह होनेवाली है। शायद ज्यादा दिन भी चले।

विवाह के बारे में तुमने अपने विचार तो लिखे ही है। चि० सावित्री व लक्ष्मणप्रसादजी का जिसमें संतोष होगा, वही निश्चित कर दिया जायेगा।

यहा अपने पहुचने की निश्चित तारीख व स्टीमर के नाम की सूचना देना ।

जमनालाल का आशीर्वाद

८०

जुहू, २-६-३७

प्रिय कमल,

तुम्हारा २६ तारीख का पत्र मिला । तुम 'स्पेशल एडूम' परीक्षा मे पास हो गये यह अच्छा हुआ । विशेष खुशी नही मालूम होती, क्योंकि तुम्हारी मा कहती है कि यदि तुम परीक्षा मे फेल हो गये होते तो तुम्हारे हिन्दुस्तान मे रहने में ज्यादा सुविधा होती ।

तुमने जो 'रजिस्टर्ड मेरिज' के बारे मे लिखा था सो उनके लिए श्री-लक्ष्मणप्रसादजी तथा चि० सावित्री और उनकी माता कोई भी तैयार नही है । यदि उनमे से कोई तैयार होता तो हम कह सकते थे, परतु जब कोई भी तैयार नही है तो हम उन्हे किस तरह से आग्रह कर सकते है ।

विवाह कलकत्ते ही होगा । विवाह मे आदमियो को ले जाने के बारे मे तीन विचार है । (१) केवल ५ आदमियो को, (२) १० या १२ आदमियो को, (३) २५ आदमियो को । आदर्श तो केवल पहला ही हो सकता है । विवाह मे धार्मिक रीति के अलावा और कोई आडम्बर नही होगा । कलकत्ते के इष्ट-मित्र वही शामिल हो सकते है । वैसे यदि निमत्रण पत्रिका बाहर भेजे तो सैकडो आदमी आ सकते है ।

पूज्य बापूजी को विवाह मे सम्मिलित होने का आग्रह करने का उत्साह मुझे नही होता है । वैसे भी वह कलकत्ता जाना पसद नही करते है ।

बरात मे तुम कम आदमी ले जाना पसद करो तो ठीक ही है; अन्यथा जो तुम्हारी राय हो, जहाज पर से ही तार कर देना ।

जमनालाल का आशीर्वाद

८१

वर्धा, ५-९ ३७

चि० कमल,

मैं कल दोपहर को बबई से यहा आया था। यहा मगनवाडी मे श्री छोटेलालजी जैन ने, जो मियादी बुखार से बीमार थे, ता० १ को कुए मे गिर कर आत्महत्या कर ली है। एक बहुत ही सच्चे व त्यागी कार्यकर्ता की इस प्रकार की मृत्यु से दुख होना स्वाभाविक है। खासकर इसी कारण मैं एक रोज बबई से जल्दी आ गया था।

जमनालाल का आशीर्वाद

८२

वर्धा, २-१२-३७

प्रिय कमल,

मेरा बबई का पत्र मिल गया होगा। चि० नर्मदा का विवाह वर्धा मे भली प्रकार से हो गया। बरात मे दस आदमी घर के व तीन नौकर आये थे। नर्मदा २-३ महीने कलकत्ते रहेगी। चि० सावित्री व विमला का भी कलकत्ते मे राजी-खुशी पहुचने का तार कल आ गया था।

पू० बापूजी का स्वास्थ्य इधर कुछ दिनो से ज्यादा नरम रहता है। ब्लड-प्रेशर सुबह २००-११४ हो जाता है। दोपहर को कभी-कभी १५०-९० भी हो जाता है। इतना हमेशा रहे तो बहुत ठीक हो। डाक्टर लोगो को भी थोडी चिंता है। उनको पूरा आराम मिले, इसका ख्याल तो रखा जाता है। मैं प्राय सेगाव मे ही सोता हू। मुलाकातें वगैरह बद हैं। यहा आराम न हुआ तो फिर उन्हें कही समुद्र तट पर ले जाना पडेगा। बापू तो जाना नहीं चाहते हैं। तुम चिंता न करना। ईश्वर को उनसे सेवा लेनी होगी तो कोई अनहोनी बात नही होगी।

अपने वहा के खर्च का तुम्हे ठीक ध्यान रखना चाहिए। बालकपन के कारण फिजूलखर्च नहीं होना चाहिए। हिसाब तुम्हे अवश्य रखना चाहिए। अगर यह मामूली नियम, जो बहुत ही आवश्यक है, तुम न पाल सको तो अच्छी बात नहीं है। आशा है, इस बारे मे अधिक लिखने की

जरूरत नही पडेगी । लिखने मे तकलीफ व सकोच भी होता है, परतु क्या किया जाय ।

जमनालाल का आशीर्वाद

८३

जुहु, १४-१२-३७

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला । काफी दिलचस्प था । साहस को तो मै भी अच्छी चीज मानता हू । पर बिना काम दु साहस करना बुरा है । तुम मे आलस्य है, वह बुरा है । इसका तुमको भी ख्याल है, तुम उसको हटाने का प्रयत्न करते हो, यह अच्छा है । पर मुझे अब इसके लिए तुम्हे कुछ कहने की इच्छा नही होती । मैने इसका उपाय सोच लिया है और इसका प्रयत्न भी शुरू कर दिया है । मुझे अपना आलस्य दूर करना चाहिए, यही इसका उपाय है ।

पू० बापूजी का स्वास्थ्य इन दिनो काफी गिर गया था । ब्लड प्रेशर बहुत बढा हुआ रहने लगा था । डाक्टरो ने उन्हे समुद्र किनारे रहने की सलाह दी और सात दिन हुए पू० बापूजी को लेकर हम सब लोग यहा जुहू मे आये हुए है । आते ही पूज्य बापूजी अपनी झोपडी मे ठहरे थे । पर बाद मे नर्सिग के सुभीते के विचार से डाक्टरो ने उन्हे बिडला काटेज मे रखा है । डा० जीवराज मेहता, गिल्डर व दिनशा मेहता उनको सभाल लेते है । पू० बापूजी को यहा की हवा मे काफी लाभ पहुच रहा है । इस महीने के आखीर तक तो अभी यही रहने का विचार है । वे तो जल्दी ही सेगाव जाने को कहते रहते है । पर अभी तो यही रहना उनके लिए लाभकर है । यहा का मौसम भी इस वक्त बहुत अच्छा है । जबतक पू० बापूजी यहा है, मेरा विचार भी तबतक तो यहा रहने का है ।

चि० सावित्री तो कलकत्ते चली ही गई है । अभी कुछ महीने तो उसका वही रहने का विचार है । उसके पत्र आते रहते है । उसके स्वभाव आदि के बारे मे मुझे जो लिखना था, वह मै अपने पहले पत्र मे तुमको लिख ही चुका हू ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ८४ :

वर्धा, २४-१-३८

प्रिय कमल,

बापूजी का स्वास्थ्य पहले से ठीक है। लॉर्ड लोथियन यहा तीन रोज रह गये। सेगाव मे अपनी झोपडी मे ही ठहरे थे। वर्धा मे अपने घर पर भोजन व बातचीत करने आये थे। यहा की सब संस्थाएं देखी। आदमी सज्जन व ऊंचे हृदय के मालूम हुए। वह १२५ पौंड की सहायता यहा दे गये है। उन्होने बताया कि आजतक उन्होने शराब और सिगरेट नही पी है। सेगाव मे तो दूध ही पीते थे, याने चाय भी यहा नही पी। मौका लगे तो तुम उनसे मिल लेना। मैने तुम्हारे बारे मे कह दिया है। उन्होने कहा है कि मै तुम्हे मिलने के लिए लिख दू।

जवाहरलालजी की माता व मौसी बीबी अम्मा दोनो चौबीस घंटे के अतर मे चल बसे। पहले स्वरूपरानी गई।

श्री एन्ड्रूज कहते थे कि तुम्हारे प्रिंसिपल ने उन्हे लिखा है कि तुम्हारी नियमित अभ्यास करने की आदत नही रही है, इससे अभ्यास बराबर नही होता है। अभ्यास के बारे मे मै क्या लिखू ? तुम्हारे अंदर जो आलस्य भरा हुआ है, वह अगर किसी तरह से निकल जाय व जवाबदारी का भान हो जाय तो भावी जीवन उन्नत बन सकेगा, अन्यथा चाहे जितना पैसा और समय खर्च करो कोई लाभ परिणाम आनेवाला नही है। कम-से-कम तुम अच्छे खिलाडी ही हो जाओगे तो स्वास्थ्य के लिए तो ठीक ही रहेगा। तुम अपना पाई-पाई का हिसाब व नियमित डायरी रखने लग जाओ तो भी मुझे थोडा सतोष होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

८५

मोरासागर (जेल मे), २२-२-३९

प्रिय कमल,

तुम्हारा १७-२ का पत्र व तार कल शाम को मिले। तार को

जरूरत तो थी नहीं। मेरा पत्र पीछे से मिल गया होगा। इस स्थान से तार चिट्ठियां भेजने के साधन नहीं के बराबर है।

तुमने मि० यंग' को पत्र भेजा, उसकी नकल मिली। मैं भी बराबर पूछ रहा हूं कि मेरे हक वगैरह क्या हैं; पर अभी तक जवाब नहीं मिल रहा है। वैसे मि० यंग खानगीतौर से मेरे साथ बहुत ही अच्छा बर्ताव रख रहे हैं।

मुझे बाहर का खाने-पीने का सामान मंगाना पसंद नहीं है। इसलिए संतरे वगैरा मत भेजना। यहां जरूरत होगी तो राज-वाले आप ही व्यवस्था कर देंगे।

वर्धा में मेहमानों की अब मैं चिंता क्यों करूं? तुम समर्थ हो।

चि० उमा का संबंध उसकी पूरी प्रसन्नता व उत्साह से ही करना है। उस पर दबाव तो डालना ही नहीं है। हां, समझाना जरूर चाहिए। कभी गोला या आगरा जाओ तो मुझसे मिलने आ जाना। केवल मिलने के लिए इतनी दूर आने की जरूरत नहीं।

महीने में चार से ज्यादा मेरे पत्रों की अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। मैं तो दो ही भेजना पसंद करता, परंतु जबतक 'स्टेट प्रिजनर' हूं, चार भेज दिया करूंगा।

पू० काकासाहब व दादा (धर्माधिकारी) से कहना कि 'सर्वोदय' मैं बहुत ध्यानपूर्वक पढ़ता हूं। मेरे काम की बातें भी जरूर लिखा करें, जिससे मुझे उपदेश, लाभ व शांति में मदद पहुंचे।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ८६ :

मोरासागर, २२-३-३९

प्रिय कमल,

बहुत दिनों बाद तुम्हारा १६-३ का लिखा हुआ पत्र कल शाम को मिला। साथ में तुम्हारी मां व उमा के पत्र भी मिले।

श्री हीरालाल कारीवाल का झुंझनू का मकान शायद अपने पास

[illegible] पुलिस, जयपुर।

लिखी है। उसकी कार्रवाई की जा सकती है। चिरंजीलाल जब बम्बई जाये तब उनसे पूछ सकता है। मकान के अलावा पहले जो रकम दी हुई है, वह तो उनकी सुविधा से ही वसूल करने का ख्याल रखना है।

श्रीनोरोजी (बेलगाववाले) से रुपये वसूल हो सकते हैं तो कोशिश करने में हर्ज नहीं। खानिवडे-वालों से तो फैसला कर लिया गया था। बम्बई कोई जाये तो बेलगाव-वालों से मिलकर बातचीत कर सकता है, या पत्र दिया जा सकता है।

रामनरेशजी त्रिपाठी का फैसला चिरंजीलाल के जिम्मे छोड़ दिया जाय तो वह कर लेगा। उनके कई पत्र आये हुए हैं। पहले वे सब पढ़ लेने चाहिए। मेरी तो राय है कि मूल के रुपये या थोड़े-बहुत कम ज्यादा आ जाने चाहिए। चिरंजीलाल जब कभी उधर जाये तब श्री-मार्तण्ड उपाध्याय की सलाह से पुस्तकें लेकर फैसला कर सकता है। तुम और रामेश्वर वहां हो तो उनसे सलाह ले लेना। नालिश करने की मेरी इच्छा नहीं है। उनसे बहुत वर्षों पुराना संबंध है। अपनी तरफ से जहां-तक हो, वहांतक प्रेम से समस्या सुलझाने की कोशिश करनी चाहिए।

श्रीचिरंजीलाल को तुम्हारे पास ही काम करना चाहिए। इतने पर भी उसकी बहुत ही ज्यादा इच्छा हो जाय तो मई मास में उसे छुट्टी देने का विचार कर सकते हो।

श्रीसागरमलजी को कानून से तो पगार देने की जरूरत नहीं है, तथापि बाद में भी वह अपने यहां काम करनेवाले हों तो आधी पगार देना ठीक होगा। पहले भी हमने आधी पगार ऐसे मौकों पर दी है, ऐसा याद आता है।

जुहू का बंगला सदानन्द को दिया, वह तो ठीक किया। किराया बराबर आवे, इसकी ठीक व्यवस्था कर लेनी चाहिए। उसकी तरफ अपनी रकम लेनी थी। उसकी किस्त बराबर आती होगी। नहीं तो ख्याल रख कर वसूल करते रहना चाहिए।

जुहू की मोटर का क्या किया? क्या उसे म्हात्रे के साथ व्यवस्था करके टैक्सी में चालू की है या दूसरी व्यवस्था की है? कुए के पास के प्लाट में झोंपड़ी बनवा ली होगी।

[illegible]

आज वर्ष का नया दिन (गुड़ी पड़वा) है। इन दो वर्षों में मुझे वास्तविक शांति व समाधान नहीं मिल सका। इसके लिए जवाबदार मैं ही हूं। मुझे आशा है कि जैसी मेरी इच्छा है तुम मेरे लिए वैसा ही वातावरण तैयार कर सकोगे। पचास वर्ष पूरे होने आये हैं। अब जीवन में दूसरे प्रकार का अनुभव लेने की इच्छा बढ़ रही है। वर्तमान स्थिति में मुझे या तो विनोबा के पास समाधान या शांति मिल सकती है या मि० पाठक के पास। वे लन्दन में हैं और उनके पास जाना अब सम्भव भी नहीं है।

चि० सावित्री व मदालसा से कहना कि त्रिपुरी के पूरे अनुभव

सविस्तार लिखें। यहा आजकल एकात मे स्वाध्याय, पढने, कातने, विचार करने आदि का तो खूब लाभ मिल रहा है। परन्तु हास्य-विनोद का पूरा अभाव रह जाता है। बालकों के इस प्रकार पत्र आते रहे तो उनसे विनोद का स्वाद मिल सकता है। उमा इस काम की सबसे ज्यादा योग्यता रखती है। परन्तु वह तो बेचारी परीक्षा की फासी में फस रही है। पर शायद वह जल्दी ही मुक्त हो जाय।

अपनी दिनचर्या मैंने ऐसी बनाई है कि दिन-रात बहुत ही जल्दी समाप्त हो जाते है। दिन कैसे बीते, यह तो प्रश्न ही खडा नही होता। दिन जल्दी ही बीत गया और पढना बाकी रह गया, ये विचार भले ही आते हो। यहा के पहरेदारो का व्यवहार ठीक है। वे बेचारे मुझे प्रेम व इज्जत से ही देखते है।

किशोरलालभाई की तीनो पुस्तके पढ ली है। उनसे ठीक समाधान मिला। आजकल 'सुख व शाति' का मराठी अनुवाद पढ रहा हू। सर्वोदय के आठो अक यही पढ सका। इस प्रकार के जीवन मे पढने व विचार करने का अच्छा सतोष देनेवाला लाभ मिलता है।

चि० उमा से कहना कि उसका पत्र मिल गया। अंग्रेजी के पर्चे अच्छे हो गये, सो मालूम हुआ। असली परिणाम तो परीक्षा का नतीजा निकलने पर ही मालूम होगा। परन्तु उसे सतोष है, यह खुशी की बात है।

चि० रामेश्वर की मा यहा हो तो मेरा प्रणाम कह देना। नये वर्ष के मेरे प्रणाम पू० मा, जाजूजी, काका सा०, विनोबा, किशोरलालभाई आदि को कहना। मित्रो को वन्देमातरम् व बालको को प्रेम आशीर्वाद। अगर सभव हो तो तुम मुझे नीचे लिखी हुई बातो का ब्यौरा लिख भेजना।

वच्छराजजी, सदीबाई (दादी), रामधनजी, बसन्तीबाई, बनीरामजी, माधोजी, बद्री, इन सबकी जन्म तिथिया, तारीखे व मृत्यु की तिथि। सन् वगैरा तो रोकड से मिल सकते है। साल और महीना अदाज से पू० मा, बनसीजी पोद्दार व सादीलालजी की मा को याद होगा। इनमे से कइयो की जन्म-पत्रिकाये अपने यहा मिल जानी चाहिए। मै, समय मिला तो, इन सबका थोडा-थोडा इतिहास जो मुझे मालूम है, लिख रखना चाहता हू। मेरी जन्म कुडली इसके साथ भेज सको तो, जिससे मेरे जन्म का

व तारीख मालूम हो जाय। अपनी मा से कह देना कि पान के साग रे मे तो विनोद किया था। यहा पान के सिवा उस समय हरी चीज कोई नही मिलती थी। अब तो साग की व्यवस्था है, प्राय एक साग मिल ही जाता है। साग न मिले तो यहा से चार मील पका पपीता मिल जाता है।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च—आज यहा मोरध्वज राजा के पवित्र कुड मे खूब स्नान या है। यह खत पूरा करने के बाद अखबार मिले। बापूजी की आज्ञा सत्याग्रह बद किया गया, यह समाचार मिला है। देखे अब ऊट किस रवट बैठता है? ज० ब० २३-२-३९

८७

बबई, ४-१०-४१

पूज्य काकाजी,

इस बार आपसे मिलकर काफी सतोष हुआ। गो-सेवा का काम आपके जिम्मे हुआ है इससे मेरे दिल मे काफी खुशी है। यह जवाबदारी भी काफी बडी है। आपको मेहनत भी पूरी करनी पडेगी। लेकिन इसमे यश भी आप-जैसो को मिल सकता है। मुझे तो पूरा विश्वास है कि आगे चलकर आपको इस काम से काफी समाधान मिलेगा।

मैने आपसे कहा था कि आप लोगो के नैतिक दबाव को सहन नही कर सकते और दब जाते है और अपने मन की अभिलाषा को स्पष्ट रूप से नही कह सकते इससे उनका नुकसान होता है। आपने अपने विषय मे इसका उदाहरण मागा था। मै वह इसलिए नही कहना चाहता था कि शायद दूसरो के बारे मे गलतफहमी हो जाय। मेरी समझ मे श्री· · · का मामला कुछ इसी तरह का है। मेरी समझ ऐसी नही है कि वह सिर्फ शारीरिक परि-श्रम से ही बीमार हुआ है। यदि वैसा है तो मुझे अवश्य खुशी है। पर इसको काफी असतोष रहा है, ऐसी मेरी समझ थी। आप उसके बारे मे ज्यादा जानते है, इससे ठीक बात तो आपको ही मालूम हो सकती है। चिंतित हृदय पर समय का क्या असर हो सकता है यह आप ही भलीभाति समझ सकते है।

आपके सामने मेरी बात होने के बाद पू० केशवदेवजी से भी आपकी टेलीफोन में बात हुई। उनका पत्र भी साथ है। बच्छराज कम्पनी के काम की जिम्मेदारी श्री ···· लेवें तब तो दूसरी बात होती है। बिना किसी जवाबदारी के इनका इटरेस्ट रखना ठीक नहीं दीखता। लेकिन अच्छा तो यह हो कि इसके नाम की कोई एजेन्सी ले और फिर उसमें उसे काम दिया जाय। मैं यद्यपि इनके विरुद्ध हू, फिर भी आप ठीक समझें तो इस तरह की स्कीम सोची जा सकती है कि जिससे उसका कर्ज चुकता जाय। तब-तक वह जवाबदारी ले और हमारा भी काम करे। बाद में जैसा आप और वे ठीक समझें।

यदि सम्भव हो और निभ सके तो मेरी समझ है कि श्री को भी किसी काम में लगाना ठीक रहेगा। श्री · और श्री दोनों मिल-कर काम कर लें तो अति उत्तम। हम लोगों का इटरेस्ट किस तरह रहे वह भी सोचा जा सकता है।

मैं श्री····· को निरुत्साहित नहीं करना चाहता। लेकिन मुझे इसका काम सीधा लग नहीं रहा है और आप पर जवाबदारी ज्यादा हो जायगी। फिर आपको जैसा ठीक लगे वैसा करें। इसके सबध में निर्णय तो आपको ही करना है। वह तो निर्णय करना जानता नहीं। विशेष कुशल,

आपका बालक,
कमल के प्रणाम

८८.

मद्रास, १६-१२-४१

पूज्य काकाजी,

आपके पत्र मिले। श्री सत्यनारायणजी के मार्फत भी एक पत्र मिला। सर सी० पी० से बाद में मिल लिया था। हमें पता नहीं था कि श्री राजाजी ने तार देकर इतजाम करवा दिया था। मालूम होने से एक रोज ज्यादा ठहरकर सर सी० पी० से मैं मिल लिया था।

हमारा पिछला प्रोग्राम तो आपको मिला ही था। उसके बाद हम लोगों

सावित्री बजाज के साथ—

: ८९

वर्धा, २३-३-३६

चि० सावित्री,

हम सब लोग कुशलपूर्वक पहुंच गए। पू० बापूजी ने आज तुम्हारा कमल का संबंध निश्चित करके तार कलकत्ते व चि० कमल को भेजा है। चि० कमल का वेनिस पहुंचने का तार आ गया है। तुम्हारा पत्र मैं उसे भेज रहा हूं। तुम अंगूठी, जिस प्रकार तुम्हें पसंद हो बिना संकोच तुम्हारे काकाजी को कहकर मेरी ओर से बनवा लेना। जो लागत बैठे लिखवा देना। कमल को मैंने लिख दिया है। वह तुम्हें सीधे पत्र लिखा करेगा। तुम मुझे प्रत्येक मास में दो सुंदर पत्र भेजती रहा करो। तुम सबों की याद हम लोगों को आती रहेगी।

अंगूठी हीरे की या जैसी तुम ठीक समझो बनवा लेना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ९०

कलकत्ता, २७-१-३६

पूज्य पिताजी,

आपके पत्र मिले। मैं पत्र वर्धा ही दे रही हूं। वहां से आपके पास भेज ही दिया जायगा।

माताजी का स्वास्थ्य सुधर रहा है, पढ़कर सुख मिला। यदि आप बम्बई में ही हैं तो उन्हें कृपया मेरा सादर प्रणाम कहें, और उनका [illegible] को सप्रेम नमस्ते।

सावित्री बजाज के साथ—

८९

वर्धा, २३-७-३६

चि० सावित्री,

हम सब लोग कुशलपूर्वक पहुच गए। पू० बापूजी ने आज तुम्हारा कमल का सबध निश्चित करके तार कलकत्ते व चि० कमल को भेजा है। चि० कमल का वेनिस पहुचने का तार आ गया है। तुम्हारा पत्र मैं उसे भेज रहा हू। तुम अगूठी, जिस प्रकार तुम्हे पसद हो, बिना सकोच तुम्हारे दादाजी को कहकर मेरी ओर से बनवा लेना। जो लागत बैठे लिखवा देना। कमल को मैंने लिख दिया है। वह तुम्हे सीधे पत्र लिखा करेगा। तुम मुझे प्रत्येक मास में दो सुदर पत्र भेजती रहा करो। तुम सबो की याद हम लोगो को आती रहेगी।

अगूठी हीरे की या जैसी तुम ठीक समझो बनवा लेना।

जमनालाल का आशीर्वाद

९०

कलकत्ता, २७-९-३६

पूज्य पिताजी,

आपके पत्र मिले। मै पत्र वर्धा ही दे रही हू। वहा से आपके पास भेज ही दिया जायगा।

माताजी का स्वास्थ्य सुधर रहा है, पढकर सुख मिला। यदि आप बम्बई मे ही है तो उन्हे कृपया मेरा सादर प्रणाम कहे, और उमा बहनजी को सप्रेम नमस्ते।

सावित्री बजाज के साथ—

८९

वर्धा, २२-७-३६

चि० सावित्री,

हम सब लोग कुशलपूर्वक पहुंच गए। पू० बापूजी ने आज तुम्हारा कमल का सबंध निश्चित करके तार कलकत्ते व चि० कमल को भेजा है। चि० कमल का वेनिस पहुंचने का तार आ गया है। तुम्हारा पत्र मैं उसे भेज रहा हूं। तुम अंगूठी, जिस प्रकार तुम्हें पसंद हो, बिना सकोच तुम्हारे काकाजी को कहकर मेरी ओर से बनवा लेना। जो लागत बैठे लिखवा देना। कमल को मैंने लिख दिया है। वह तुम्हें सीधे पत्र लिखा करेगा। तुम मुझे प्रत्येक मास में दो सुंदर पत्र भेजती रहा करो। तुम सबों की याद हम लोगों को आती रहेगी।

अंगूठी हीरे की या जैसी तुम ठीक समझो बनवा लेना।

जमनालाल का आशीर्वाद

९०

कलकत्ता, २७-९-३६

पूज्य पिताजी,

आपके पत्र मिले। मैं पत्र वर्धा ही दे रही हूं। वहां से आपके पास भेज ही दिया जायगा।

माताजी का स्वास्थ्य सुधर रहा है, पढ़कर सुख मिला। यदि आप बम्बई में ही हैं तो उन्हें कृपया मेरा सादर प्रणाम कहें, और उमा बहनजी को सप्रेम नमस्ते।

हिंदी और अंग्रेजी के "हरिजन" में मुख्य-मुख्य लेख प्रायः एक ही रहते हैं, जिन्हें मैं पढ़ लेती हूं। अभी जवाहरलालजी की आत्मकथा पढ़ रही हूं। उसमें बहुत कुछ है, जो मेरी समझ के बाहर है। तब भी मोटेतौर से बहुत-सी बातों का ज्ञान हो गया है। पूरी समाप्त नहीं हो पाई है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है। वजन एक सेर और बढ़ा है, अर्थात् अब ८८ पाउंड है। थोड़ा बढ़ा है, यही अच्छा है।

यहां सब कुशल है।

आपकी आज्ञाकारिणी पुत्री,
सावित्री

: ९१ :

कलकत्ता, २९-३-३७

पूज्य पिताजी,

तीन या चार दिन हो गए हमें कलकत्ता पहुंचे, किंतु मैं पत्र नहीं दे सकी। छुट्टी का समय था, इसलिए होली आदि में और किसी बात की सुध ही न रही। वर्धा में दिन यद्यपि केवल दो ही मिले, पर बहुत ही आराम-सुख में बीते। पू० दादीजी आदि से मिलकर तथा उनका आशीर्वाद पाकर बहुत संतोष और सुख मिला। अन्य किसी से विशेष परिचय तो न हो पाया, किंतु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सबकी शुभ-कामनाएं प्राप्त कर सुखी ही हुआ।

पू० विनोबाजी पर कमलनयन बहुत श्रद्धा रखते हैं। उनके दर्शनों की भी इच्छा पूरी हो गई। वर्धा जाकर भी उमा बहन से न मिल सकी, इसका दुख रह गया। चि० रामकृष्ण से तो उस थोड़े समय में काफी हिल-मिल गई। उनके लिए मैं दो स्टांप भेज रही हूं। इन दो दिनों में आपके सहवास से मैं कुछ प्रत्यक्ष लाभ न उठा सकी, किंतु हो सकता है किसी-न-किसी रूप में लाभ अवश्य पहुंचा हो और पहुंचा होगा। मुझे विश्वास है कि आगे अधिक समय मिलने पर लाभ असर करेगा ही।

मद्रास का पता मालूम न होने के कारण मैं पत्र वर्धा ही दे रही हूं।

कुछ विलम्ब में आपको मिल जायगा। बाबाजी ने यहां पहुंचते ही पत्र दे दिया था। वह आपको मिला होगा।

यहां सब प्रसन्न है।

आपकी आज्ञाकारिणी,
सावित्री

९२

वर्धा, ४-९-३७

चि० सावित्री,

मैं अभी बम्बई से यहां पहुंचा। यहां आने पर तुम्हारा २९-८ का पत्र मिला। तुमने अपने स्वास्थ्य का हाल व डाक्टरों की राय लिखी वह मालूम हुई। एक्सरे करा लिया होगा। यदि न कराया हो तो अवश्य करा लेना। तुम्हारी नब्ज की हालत अवश्य विचारणीय है। तुम कमजोर हो। तुम्हें पूरा आराम मिलना चाहिए। तुममें सहनशक्ति कम होने से शरीर पर परिणाम जल्दी हो जाता है। यह तो ताकत बढ़ने से ही ठीक हो सकेगा। मेरी समझ में तो इसमें तुम्हें प्राकृतिक चिकित्सा से विशेष लाभ पहुंच सकेगा। अगर तुम्हें जंचे तो मेरी राय से अजीत बोस, जो सेवासदन में प्राकृतिक चिकित्सा करते है, से भी राय ले लेना। अपने एक्सरे आदि की रिपोर्ट मिल जाने पर मुझे लिख भेजना। डाक्टरों की राय अगर कुछ समय तक तुम्हें कलकत्ता रखने की हो तो तुम बिना सकोच वहीं रहने का निश्चय करना।

चि० कमल का ता० २४ या २५ के स्टीमर से जाने का निश्चय ही हो तो फिर उसे भिजवा देना ठीक रहेगा। कारण नई कंपनी की योजना उसके सामने निश्चित हो जाय तो अच्छा हो। जो जायदाद वगैरा उस कंपनी में देनी हो, उसकी कीमत भी लगाना है व क्या-क्या जायदाद इस कंपनी में देनी है, और क्या ट्रस्ट में देना है, उसका निश्चय भी करना है। इसीलिए मैंने कल बम्बई से तार करवाया था। तुम्हारा स्वास्थ्य अच्छा रहता तो सब बातें तुम्हारी उपस्थिति में ही हो सकती थीं। परंतु उसका क्या

हिंदी और अंग्रेजी के "हरिजन" मे मुख्य-मुख्य लेख प्रायः एक ही होते है, जिन्हें मैं पढ़ लेती हू । अभी जवाहरलालजी की आत्मकथा पढ़ रही हू । उसमें बहुत कुछ है, जो मेरी समझ के बाहर है । तब भी मोटे तौर से बहुत-सी बातों का ज्ञान हो गया है । पूरी समाप्त नहीं हो पाई है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है । वजन एक सेर और बढ़ा है, अर्थात् अब ८० पाउंड है । थोड़ा बढ़ा है, यही अच्छा है ।

यहा सब कुशल है ।

आपकी आज्ञाकारिणी पुत्री
सावित्री

: ११ :

कलकत्ता, २९-३-३६

पूज्य पिताजी,

तीन या चार दिन हो गए हमे कलकत्ता पहुचे, किंतु मैं पत्र नहीं दे सकी। छुट्टी का समय था, इसलिए होली आदि मे और किसी बात की सुध ही न रही । वर्धा मे दिन यद्यपि केवल दो ही मिले, पर बहुत ही आराम व सुख से बीते । पू० दादीजी आदि से मिलकर तथा उनका आशीर्वाद पाकर बहुत संतोष और सुख मिला । अन्य किसी से विशेष परिचय तो न हो पाया, किंतु प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप मे सबकी शुभ-कामनाएं प्राप्त कर सुख ही हुआ ।

पू० विनोबाजी पर कमलनयन बहुत श्रद्धा रखते है । उनके दर्शनों की भी इच्छा पूरी हो गई । वर्धा जाकर भी उमा बहन से न मिल सकी, इसका दुख रह गया । चि० रामकृष्ण से तो उस थोडे समय मे काफी हिल-मिल गई । उनके लिए मैं दो स्टाप भेज रही हू । इन दो दिनो मे आपके सहवास से मैं कुछ प्रत्यक्ष लाभ न उठा सकी, किंतु हो सकता है किसी-न-किसी रूप मे लाभ अवश्य पहुचा हो और पहुंचा होगा । मुझे विश्वास है कि आगे अधिक समय मिलने पर लाभ असर करेगा ही ।

मद्रास का पता मालूम न होने के कारण मैं पत्र वर्धा ही दे रही हू ।

कुछ विलब से आपको मिल जायगा। काकाजी ने यहा पहुचते ही पत्र दे दिया था। वह आपको मिला होगा।

यहा सब प्रसन्न है।

आपकी आज्ञाकारिणी,
सावित्री

९२

वर्धा, ४-९-३७

चि० सावित्री,

मैं अभी बम्बई से यहा पहुचा। यहा आने पर तुम्हारा २९-८ का पत्र मिला। तुमने अपने स्वास्थ्य का हाल व डाक्टरों की राय लिखी, वह मालूम हुई। एक्सरे करा लिया होगा। यदि न कराया हो तो अवश्य करा लेना। तुम्हारी नब्ज की हालत अवश्य विचारणीय है। तुम कमजोर हो। तुम्हें पूरा आराम मिलना चाहिए। तुममें सहनशक्ति कम होने से शरीर पर परिणाम जल्दी हो जाता है। यह तो ताकत बढने से ही ठीक हो सकेगा। मेरी समझ से तो इसमें तुम्हें प्राकृतिक चिकित्सा से विशेष लाभ पहुच सकेगा। अगर तुम्हें जचे तो मेरी राय से अजीत बोस, जो सेवासदन में प्राकृतिक चिकित्सा करते है, से भी राय ले लेना। अपने एक्सरे आदि की रिपोर्ट मिल जाने पर मुझे लिख भेजना। डाक्टरों की राय अगर कुछ समय तक तुम्हें कलकत्ता रखने की हो तो तुम बिना सकोच वहीं रहने का निश्चय करना।

चि० कमल का ता० २४ या २५ के स्टीमर से जाने का निश्चय ही हो तो फिर उसे भिजवा देना ठीक रहेगा। कारण नई कपनी की योजना उसके सामने निश्चित हो जाय तो अच्छा हो। जो जायदाद वगैरा उस कपनी मे देनी हो, उसकी कीमत भी लगाना है व क्या-क्या जायदाद उस कम्पनी में देनी है, और क्या ट्रस्ट मे देना है, उसका निश्चय [illegible]
मैंने कल बम्बई से तार करवाया था। [illegible]
सब बाते तुम्हारी उपस्थिति मे ही हो

मैंने तीन-चार बार भी जमा की थी। खैर, एक बार का अनुभव तो तुम्हें मिला ही। तुम भी चालाक निकलीं। स्वयंसेवक, डाक्टर, डाक्टरनियों को जमा कर लिया। अगर विशेष चालाक होती तो शायद कई नेताओं को भी जमा कर लेतीं। उनसे आखिर होती तकलीफ ही।

क्या तुम्हें हाथी पर बैठने को नहीं मिला ? तुम्हें जुलूस क्यों अच्छा लगता ? न तो तुम्हें हाथी पर बैठाया गया न तुम्हारी या तुम्हारे पिताजी की फोटो हाथी पर लादी गई। फिर कैसे रस आता ? जगदीश को कांग्रेस देखकर कुछ रस या नवीनता मालूम हुई ? उसे कहना कि वह अनुभव लिख भेजे। मेरा तो अभी जयपुर राज्य में ही (जेल के बाहर या भीतर) रहना संभव दिखाई देता है।

चि० बिच्चू[1] ने कम-से-कम मेरा एक बड़ा भारी गुण या अवगुण तो जन्म से ही ग्रहण कर लिया। उसमें तरक्की हो रही है, यह जानकर खुशी होती है। अगर मुझ में कुछ और अच्छी बातें हैं तो संभव है, बड़ा होने पर उन्हें भी ग्रहण करेगा। एक बड़ी भारी बात तो उसमें अभी से दिखाई देती है, वह यह कि वह रोता बहुत ही कम है। हमेशा हंसता रहता है। मैं भी जब बिच्चू की अवस्था में था तब, बाद में भी, रोता बहुत कम था। हमेशा हंसता व आनंद में रहता था, ऐसा जो मुझे खिलाते थे उनसे सुना है, तुम दादीजी से तपास कर लेना।

क्या तुम्हारी यह प्रदेश देखने की इच्छा है ? पर अब तो गरमी पड़ने लगी है। फिर कभी देखना ठीक रहेगा। वैसे यह प्रदेश देखने लायक जरूर है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ९५

कर्णावतों का बाग,
(जयपुर स्टेट जेल) २७-५-३९

चि० सावित्री,

तुम्हारा २०-५ का पत्र मिला। तुम्हारी माताजी तारीख २४-५

---

[1] राहुल, श्री कमलनयन का पुत्र

को जयपुर पहुच गईं। दो बार मुझ से मिल ली है।

चि० वेवी को ठीक लाभ पहुच रहा है, यह जानकर खुशी हुई। कभी-कभी उसको देखने की इच्छा होती है। फोटो तो मेरे पास तुमने भेज ही दिया है। तुम्हारी तबीयत भी वहा ठीक रहती है व फुर्ती मालूम देती है, जानकर प्रसन्नता हुई। घूमने-फिरने का नियमित अभ्यास रखना। कमल की तरह आलस्य मे दिन नहीं बिताना। तुम सब मिलकर कमल का आलस्य बिलकुल निकाल दो तो तुम सबो को बहादुरो की पदवी मिल सकती है। तुम्हारे पिताजी व मैयाजी चाहे तो जरूर निकाल सकते है। वे घर भर के लिए यह नियम बना दे कि सुबह पाच बजे उठना चाहिए। कम-से-कम दोनो समय मिलाकर दस मील घूमना चाहिए तथा मोटे लोगो जैसे कमल, उमा, महावीर वगैरा को खुराक मे चावल, आलू वगैरा नही दिये जाय। जो नियम का पालन न करे उसे खाना (भोजन) कितना ही चीखें-चिल्लावें न दिया जाय। तब ही ऐसे लोग रास्ते पर आय तो भले ही आवें, नही तो बेचारे बगलेवाले के पलग व कुर्सिया तोडकर वापस ज्यो-के-त्यो आ जायगे। पहाड़ का फायदा तो तब ही समझा जाना चाहिए जब तुम्हारा, ललिता, विमला व जगदीश का वजन दस रतल से ज्यादा बढे और कमल, महावीर, उमा का वजन क्रमश. २०, १५, १० रतल कम हो। नही तो सबको मेरी समझ से समय व रुपये फिजूल खर्च करने का अपराध समझा जाना चाहिए। तुम्हारी मैयाजी व काकाजी नरम व कमजोर तबीयत के व्यक्ति है। उनसे यह नहीं हो सकेगा। हा तुम, ललिता, विमला व जगदीश निश्चय कर लो तो हो सकेगा।

चि० उमा को फेल (नापास) होने पर मेरी ओर से बधाई देना। कालेज वगैरा का झगडा अपने-आप ही कम हो गया। खाली बातो के जोर पर हमेशा थोडे ही परीक्षा पास होती है। यो कभी-कदास निशाना लग जाय, वह बात अलग है।

जमनालाल का आशीर्वाद

९६

कर्णावती का बाग, ९-८-३९

चि० सावित्री,

तार व पत्र मिल गए होंगे। तुम, बच्ची व राहुल अच्छे होंगे।

आज १२-२० पर मेरे ऊपर की रुकावट बिना शर्त जयपुर सरकार ने हटा ली है। पांव के जखम के कारण अभी तो मुझे यहा ८-१० रोज रहना ही पड़ेगा। बाद मे सीकर, बम्बई, वर्धा होकर संभव हुआ तो तुम्हें व बच्चों को देखने एक बार कलकत्ते आऊंगा।

तुम्हारी माताजी को तार भेज रहा हूं कि वह कल सीकर से यहां आ जाय। वैसे तो मुझे अभी जयपुर के काम के लिए काफी समय यहा देना पड़ेगा। मेरा यह कार्ड मिलने के पहले तो तुम्हें तार या अखबारों से खबर मिल ही जायगी।

जमनालाल का आशीर्वाद

९७

शिमला, २६-७-४१

चि० सावित्री,

मेरा यहा ठीक चल रहा है। बीच में दो-तीन रोज जुकाम के कारण हल्का-सा बुखार हो गया था (मेरी ही गलती के कारण)। अब ठीक हू। दोनों समय मिलाकर ६-७ मील के लगभग घूम लेता हू। धीरे-धीरे बढ़ाकर दस मील तक कर देने का विचार है। खानपान की पूरी खबरदारी राजकुमारी बहन[1] रखती है। उत्तम नर्स, मित्र व सलाहकार का काम बहुत ही प्रेम से करती है। अब मैं इस परिवार का थोड़ा परिचय तुम्हें कराता हू।

कपूरथला में महाराज रणधीरसिंह हो गए। इनके दो पुत्र थे। बड़े का नाम था खड्गसिंह व छोटे का नाम हरनामसिंह। हरनामसिंहजी

---

१. श्रीमती राजकुमारी अमृतकौर, जिनके यहां मेहमान होकर जमनालालजी स्वास्थ्य-सुधार के लिए कुछ दिन रहे थे।

के छ लडके व एक लडकी (राजकुमारी बहन) हुई। श्रीखड्गसिंह के संतान नहीं हुई बताते हैं। परंतु अपने किसी नौकर के लडके को उन्होंने अपना लडका जाहिर कर दिया। बाद मे घूस वगैरा लेकर वही कायम रहा, नहीं तो राजा हरनामसिंहजी कपूरथला के महाराज मुकर्रर होते। दूसरे, राजा हरनामसिंह (राजकुमारीजी के पिता) ने ईसाई स्त्री से विवाह कर लिया था व बाद में खुद भी ईसाई हो गए। इसलिए भी शायद गद्दी का अधिकार उनके बेटे को नहीं रहा, ऐसा कई मानते हैं। ये लोग बहुत बरसों पहले राजपूताना (जैसलमेर) से आये हुए राजपूत थे। बाद में सिखों के प्रभाव में आकर सिख हो गए थे। अब तो यह ईसाई कुटुंब माना जाता है (वैसे कट्टर ईसाई कोई नहीं है)। राजकुमारीजी के छ भाई थे। उनमें से एक पिछली बडी लडाई में मारे गए। पांच मौजूद हैं। इनकी शिमला में तीन कोठियां हैं। एक कोठी, जिसमें मैं ठहरा हूं, लेफ्टिनेंट कर्नल कुंवर शमशेरसिंह व राजकुमारीजी के हिस्से में है। ये भाई आठ महीने यहां व चार महीने जलन्धर रहते हैं। अब इस छोटे परिवार का परिचय देता हूं।

राजकुमारी के बडे भाई ले० कर्नल कुंवर शमशेरसिंह (रिटायर्ड), इनकी अंग्रेज स्त्री व लगभग ३० वर्ष की एक कुंवारी लडकी, तथा राजकुमारी बहन, इस प्रकार चार तो यह हैं, एक ६ वर्ष की दूसरी लडकी, जिसका नाम तोफा बाई है, यह गोद है। उसके बारे में झगडा है कि वह शमशेरसिंहजी के गोद समझी जाय या राजकुमारी बहन के। इस घर में इसका बहुत ज्यादा प्यार व लाडचाव होता है। मुझे तो इतना प्यार देख आश्चर्य होता है। दोनों भाई-बहन व भाभी में खूब प्रेम है। मुझसे भी ये लोग बडा स्नेह करते हैं। यहां मेरा अभी तो कुछ रोज और रहने का इरादा है। पू० बापूजी तो दो महीने का लिखते हैं। पर मैं शायद एक महीना रहूंगा। यहां ठीक अनुभव व जानकारी भी मिल रही है।

तुम व चि० राहुल राजी होंगे। मुन्नी कलकत्ते में राजी होगी। तुम्हारी मैया की तबीयत ठीक होगी। चि० राहुल के लिए मेवा भेजने का विचार कर रहा हूं।

जमनालाल का आशीर्वाद

श्रीमन्नारायण के साथ--

. ९८

मोरासागर, ११-४-३९

चि० श्रीमन्,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने तो इधर के बारे में यो ही लिख दिया है। तुमको जैसा सुभीता हो, वैसा प्रोग्राम बना लेना। ऊंट पर बैठने का शौक हो, बालू के पहाड़ देखने हो और गरम रेत में पाव सेंकने हो तो इधर शेखावाटी में घूम सकते हो, अन्यथा जरूरत नहीं। हा ग्रामीण गीत व पुराने चारण-भाटो के कवित्तो का सग्रह इधर ठीक हो सकता है। असम जाना जरूरी हो तो वहा जाना। नहीं तो काका, व दादा[1] को भी इधर खींच लाना।

जमनालाल का आशीर्वाद

. ९९ .

मैनपुरी, २३-५-३९

पूज्य सेठजी,

सादर प्रणाम। आशा है मेरा पिछला पत्र मिला होगा।

विचार करने पर मैं समझता हू कि वर्धा कालेज मे चले जाने से आपकी कुछ अधिक सेवा न कर सकूगा। इसलिए वहा प्रोफेसर बनने की कोई विशेष आकांक्षा नहीं है। यदि आप चाहे तो मारवाडी शिक्षा मडल का कार्य ही मुझे सौंप दें। मैं अपनी ओर से कोई विशेष चीज नहीं चाहता।

---

१. काका कालेलकर तथा दादा धर्माधिकारी।

००

जिस काम से आपकी और देश की अधिक सेवा कर सकू, वही मैं करने को तैयार हू । आपकी आज्ञा होनी चाहिए ।

आशा है आप उचित विश्राम ले रहे हैं ।

आपका,
श्रीमन्

. १००

कर्णावतोका वाग (जयपुर)
१६-७-३९

प्रिय श्रीमन,

तुम्हारा खत मिला । श्रीजवाहरमलजी के विषय मे तुम्हारा कहना ठीक है। काका साहब तो अभी वहा है नही, मैं उनके लिए काशीनाथजी को लिख रहा हू । जिस परिस्थिति मे उनको १००) कबूल करना पड़ा उसको देखते हुए यदि और सब शिक्षक समझदार होगे तो उन पर बुरा असर नही पडेगा । उनको महिलाश्रम से ही १००) रु० देना ठीक होगा ।

रामकृष्ण को वे ट्यूशन नही देते वह ठीक है । तुम उसका ख्याल रखते ही हो । अन्य समाचार मदालसा के खत से मिलेगे ही ।

कमलनयन आयगा तब उससे भी शिक्षा मडल के बारे मे बातचीत करूगा ।

यहा बारिश ठीक हो गई। मेरे घुटने का इलाज चल रहा है। मेरा पिछला पत्र मिल गया होगा ।

जमनालाल का वदेमातरम

. १०१ :

जयपुर स्टेट कैदी
२९-१०-३९

प्रिय श्रीमन्,

तुम्हारा व मदालसा के असम-यात्रा से लिखे हुए पत्र मिले । पढ़ कर खुशी हुई । राष्ट्रभाषा प्रचार की दृष्टि से पू० काका साहब व तुम्हारी यह यात्रा सफल हुई यह जानकर विशेष सुख मिला ।

तुम्हारे विद्यालय के मैट्रिक का परिणाम ८० टका आया, यह सतोष की बात है। श्रीकाशीनाथजी व माताबाई महिला मडल व आश्रम के बारे मे दो मत्र बातें कर गए है। क्या कोई ऐसी योग्य व जवाबदार बहन, जो एक मा की तरह देखभाल कर सके, यू० पी० मे नही मिल सकती ? तपास तो रखो। अगर कोई योग्य देवी न मिले तो अनुभवी राष्ट्रीय वृत्ति के सज्जन को, जिन्हें स्त्री-शिक्षा से प्रेम हो, खोज करनी चाहिए। क्या तुम्हारे बड़े भाई साहब यह जिम्मेदारी उठाने को तैयार नही हो सकते ? बहुत करके जवाहरमलजी भी सिंध जाना चाहते हैं। उनका पत्र आया है। उनकी इच्छा तो वर्धा रहने की है, परन्तु घरवाले व मित्रों का आग्रह सिन्ध, हैदराबाद, के लिए बहुत हो रहा है। विद्यालय के काम मे तुम्हें पूरी मदद करे, ऐसे व्यक्ति की भी तलाश रखनी चाहिए।

चि० उमा के लिए आगरा मे स्वर्गवासी प्रयागनारायणजी का तीसरा लड़का, जो इसी साल यूरोप से वापस आया है, मैंने व लालाजी (तुम्हारे पिताजी) ने आगरा में देखा था। अगर मौका लगे तो तुम और मदालसा उस लड़के को देख लेना। गोला मे चि० रामेश्वर के पास बहुत रोज तक मिल का, खास कर गन्ने की खेती का, काम वह देखता रहा था। इसकी इच्छा गन्ने की खेती अपनी जिम्मेदारी पर काठगोदाम के पास करने की है। जहा तक सभव हो तुम मिलते आना और ठीक परिचय कर सको तो जरूर कर लेना। चि० रामेश्वर ने भी इसकी तारीफ की है। दूसरा कोई योग्य होनहार व सेवावृत्ति का लड़का तुम्हारी मा व पिताजी वगैरह की निगाह में हो तो ख्याल मे रखना। पूज्य पिताजी व माताजी को मेरा प्रणाम कहना और सबो को वदेमातरम कहना।

क्या चतुर्भुजजी को हरिनगर से छुट्टी मिल सकती है ? उन्हे वहा क्या मिल रहा है ? क्या काम करना पडता है ? श्रीरामेश्वरलाल तो केमिस्ट का काम करते है ? इन्हे क्या देते है ? क्या इन दोनों मे से किसी का गोला आना सभव है ? तुम तपास कर आना। तुम्हारी भाभीजी एम० ए० (शायद राष्ट्रभाषा में) पास हो गई। उन्हे बधाई देना और कहना कि अब वर्धा महिलाश्रम मे बैठ कर सेवा-कार्य मे लग जाना चाहिए और उस कडी परीक्षा में भी पास होकर देखना चाहिए। चि० पद्मा भी

सो मैट्रिक पास हो गई है। उसे भी बधाई देना।

जमनालाल का आशीर्वाद

१०२

वर्धा, ८-१२-३९

पूज्य काकाजी,

कल नागपुर गया था। रजिस्ट्रार से बात हुई। यूनिवर्सिटी ने कामर्स कालेज की योजना मंजूर कर ली है। जुलाई से या दो-एक महीने बाद यानी अगस्त या सितंबर में हम क्लास शुरू कर सकेंगे, ऐसा रजिस्ट्रार ने कहा। अब अभ्यास-क्रम बनेगा। फिर हमको औपचारिक रूप में कालेज की मान्यता के लिए अर्जी भेजनी होगी।

अभी यूनिवर्सिटीवालों ने मान लिया इतना बहुत है। आगे की फिक्र करना है। शिक्षक ढूंढने होंगे। शायद बम्बई जाना होगा। 'बडे दिन की छुट्टियों में कानपुर भी जाऊंगा।

आशा है आपका स्वास्थ्य ठीक होगा। सुना है आप आजकल साइकिल चलाने में प्रवीण हो गए है।

प० हृदयनाथ कुंजरू बंगले पर ठहरे है। मैं उनसे सुबह मिला था। वे अभी पूना से ही आये हैं, लेकिन उन्हें मालूम नही था कि आप भी पूना में है। आपके स्वास्थ्य के बारे मे पूछते थे। कहते थे कि डायबिटीज के लिए तो नियमित व्यायाम ही सबसे अच्छी दवा है।

एंड्रूज साहब भी यहा ठहरे हुए है।

सार्वजनिक पुस्तकालय की आवश्यकता काफी महसूस होती है। उसके लिए भी अब कुछ कोशिश फिर की जाय तो ठीक होगा।

आपका,

श्रीमन्

१०३

वर्धा, ९-९-४१

पूज्य काकाजी,

आपके पत्र दामोदरजी के मार्फत पढ़ने को मिलते रहते है। मैंने आपको, आपके आराम में बाधा न पहुंचे, इस विचार से कुछ नही लिखा। आशा है अब आपका स्वास्थ्य बिल्कुल ठीक होगा।

श्रीपदमपतजी का पत्र देखा। उनकी चौथी किश्त बहुत देर से मिली थी। खैर, अगर वे आखिरी किश्त मार्च मे ही दे तो कोई हर्ज नही है। अभी रुपये तो हमारे पास है। और वे १५,००० दे ही देगे, ऐसा विश्वास रखता हू। शंका का कारण तो कोई है नही।

मैं २० या २१ तारीख को दिल्ली होता हुआ श्रीनगर (काश्मीर) जा रहा हू। वहा 'आल इडिया एजूकेशनल कान्फ्रेस' है। वहा मैं नागपुर यूनिवर्सिटी का प्रतिनिधि होकर जा रहा हू। ३-४ अक्तूबर तक वापस आऊगा। वापस आते समय एक दिन पिलानी भी जाने का विचार है। लाहौर मे हेली कामर्स कालेज भी देखूगा।

मेरा विचार है कि 'आल इंडिया एजूकेशनल कान्फ्रेस' का अगला अधिवेशन कालेज की ओर से वर्धा मे बुलाऊं—दीपावली की छुट्टियो मे। प्रबध तो आसानी से हो ही जायगा। कालेज की और वर्धा की सस्थाओ की भी अच्छी प्रसिद्धि हो जायगी। आशा है आपको यह विचार पसद आयगा।

आप २१ ता० को जा रहे है। तब मैं हो सका तो, ता० २२ को जाऊगा, ताकि आपसे मिलना हो जाय।

हम सब प्रसन्न है।

आपका,

श्रीमन्

: १०४ :

कलकत्ता, २९-११-३०

पू० पिताजी,

सादर सविनय प्रणाम !

आपका पत्र पू० माताजी तथा बाई के नाम का मिला। समाचार जाने।

हम लोग ता० २७-११-३० को बिहार छोड कर कलकत्ता पहुंचे है। अभी तक आगे का कोई प्रोग्राम निश्चित नही हुआ है। होते ही लिख दूगी। आज अभी आगे का प्रोग्राम निश्चित करने के लिए कमेटी की मीटिंग होगी। मैंने आज पू० रामेश्वरप्रसादजी को पिछले १३ दिनो की रिपोर्ट लिख भेजी है।[1] उसे आपके पास भेजने को भी लिख दिया है।

---

१. यह पत्र निम्न प्रकार है—

कलकत्ता, २८-११-३०

पू० भाईजी,

सविनय प्रणाम !

आपका पू० माताजी के नाम का पत्र कल मिला। आपने गोरखपुर से आगे का प्रोग्राम मंगवाया सो मैंने आपको दानापुर से जो पत्र लिखा था, उसमें थोड़ा प्रोग्राम था, आशा है वह मिला होगा। हम कल सुबह मधुपुर से कलकत्ता पहुंचे। अभी तो यहां कोई कार्यक्रम नहीं निश्चित हुआ है। थकावट के कारण माताजी की तबीयत कुछ खराब हो जाने से तुरत में अभी कोई प्रोग्राम नहीं बनाया है। परंतु अभी कुछ दिन तो यहीं रहने का विचार है। आगे का तय होने पर मैं फिर आपको लिख दूंगी।

गोरखपुर से अभी तक का प्रोग्राम इस प्रकार का रहा है :—

ता० १६ से १८ तक गोरखपुर, दानापुर।

आपने तो जेल में बैठे-बैठे ही अपना काम ठीक जमा लिया ! अब तो आपके पास श्रीनगंमन फिर आ गये हैं, ऐसा सुना है।

अभी मेरी पढ़ाई का कोई ठीक इन्तजाम नहीं हुआ है। और अब तो कुछ चले वहां तक पढ़ाई पर खास ध्यान देने की इच्छा भी नहीं होती।

---

१९ बक्सर-आरा, २० दानापुर, २१ गया, २२ मुंगेर, २३ बेगूसराय, २४ साहेबगंज, २५ दुमका, २६ मधुपुर, २७ कलकत्ता।

प्रायः सब जगह व्यापारियों ने आगे से विदेशी माल न मंगाने की प्रतिज्ञा पर सही कर दी है। पर गया और दुमका में तो न कोई स्टेशन पर ही आया, न कहीं ठहरने का ही इंतजाम किया। गया तो हम लोग शाम को ५ बजे पहुंचे। वहां स्टेशन पर सत्याग्रह आश्रम का एक आदमी आया था। हम उसके साथ आश्रम पहुंचे। उस आश्रम की स्थिति तो ऐसी थी कि वहां न तो बैठने की जगह, न खाने-पीने की व्यवस्था। वहां तो दिन में भी मच्छरों का राज था। रात का तो कहना ही क्या। सब काम छोटे-छोटे (१५ साल से नीचे के) लड़के संभालते हैं। वहां से करीब १५० बच्चे ही जेल गये हैं। बड़े लोग तो बहुत डरते हैं। जो थोड़े-बहुत मुखिया थे वे तो सब पहले ही से जेल जा बैठे। इस कारण वहां की पुलिस भी लोगों को खूब डराती है। हमने वहां व्यापारियों की जो सभा रखी थी उसमें भी न तो कोई आया और न कोई जगह ही देने को तैयार हुआ। हम वहां ६ घंटे तक रहे। वह भी किराये की गाड़ी करके सब व्यापारियों के द्वार-द्वार पर जाकर गाड़ी में बैठे-बैठे ही उनको बुलवा कर मिले। हम दो दिन रहने के विचार से आये थे, पर वहां का यह रंग देखकर ६ घंटों में ही वहां से जाना पड़ा। यही हाल दुमका का था। दोनों जगह खाना खिलाने के लिए भी राजी-खुशी कोई तैयार नहीं हुआ। यह पत्र पढ़कर उचित समझें तो पू० पिताजी के पास भेज दें। पत्रोत्तर शीघ्र दें।

विनीत,

मदालसा के प्रणाम

पर हा, काम करते-करते जितना लाभ मिल सके उतना ठीक है।

यहा सब प्रसन्न है। आपकी तबीयत अच्छी होगी। भूल-चूक क्षमा करेंगे। पत्र देंगे।

आपकी प्रिय पुत्री,
मदालसा का प्रणाम

: १०५ :

(१९३०)

चि० मदू,

तुम्हारा प्रोग्राम व दिनचर्या पढ़ कर तो ईर्ष्या होती है कि कितना अच्छा मौका तुम लोगो को मिला है। मुझे ऐसा सीखने व पढ़ने को मिले तो बहुत सतोष मिले। परन्तु अब इस जीवन मे तो यह सभव नही मालूम देता। आगे फिर बालक-जीवन का मौका मिलेगा, तब आनद लूटने का उद्योग किया जायगा।

जमनालाल के आशीर्वाद

: १०६ :

पौष बदी एकादशी
(१९३०)

चि० मदालसा,

चि० कमला, तुम्हारा, तुम्हारी माता के पत्र व खबरे जानकर सुख-सतोष मिला। तुम्हारी माता का श्रीमहावीरप्रसादजी पोद्दार का उतारा हुआ चित्र भी मिल गया। यहा मेरे पास रखा है। तुम्हें भाई श्री महावीरजी ने ठीक प्रमाणपत्र दिया है। मुझे पूरी आशा है कि तुम सबको इस भ्रमण से पूरा लाभ मिलेगा, जो जीवन भर काम आवेगा। सेवा, नम्रता, अतिथि-सत्कार वगैरा सीखने का भी ठीक मौका मिलेगा। तुम लोगो का जो कार्यक्रम निश्चित हो, लिखते रहना। मुझे कोई चिंता नही है, पूरा सतोष है। तुम्हारी माता को कह देना।

जमनालाल के आशीर्वाद

: १०७ :

कलकत्ता, १३-१२-३०

पूज्य पिताजी,

सादर प्रणाम ! मैंने आपको थोड़े दिन पहले पत्र लिखा था, मिला होगा। हमें यहा आये आज १६ दिन हुए । कुछ खास काम तो यहा होता नही है। यहा कुछ रोज पहले महेश्वरी-भुवन मे स्त्री-पुरुषो की सभा हुई थी, उसमें पूज्य माताजी ने करीब सवा घटे भाषण दिया था और परसो से यहा फिर पिकेटिंग शुरू हो गया है। अभी तक यहा कोई गिरफ्तारी नही हुई है। कइयों को मार जरूर पडी है । और तो छोटी-छोटी (मौ-मवामौ की) सभाए तो यहा ६-७ हो गई है ।

पू० माताजी का अभी तो कुछ रोज यही रहने का विचार है । जहातक होगा मेरा भी माताजी के साथ ही रहने का विचार है । कमलाबाई और कमलनयन का २-३ दिन मे वर्धा जाने का विचार है। हम ४-५ रोज से पू० श्रीसीतारामजी सेकसरिया के यहा आ गए है ।

आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। यहा सब प्रसन्न है। पत्र दे।

आपकी नम्र बालिका,
मदालसा

: १०८

(१९३०)

चि० मदालसा,

अपनी माताजी के पत्रो के साथ भेजा तुम्हारा पत्र मिला। पढकर खुशी हुई। तुम्हारी पढाई नही से अच्छी चल रही है, सो ठीक है।

बगाल में बहुत से आदर्श व्यक्ति हो गए है। और अब भी है। श्रीकृष्णदासजी को समय मिलता हो तो उनसे, नहीं तो औरों से, श्री-रामकृष्ण परमहस, गौराग महाप्रभु, स्वामी विवेकानन्द आदि महापुरुषो के जीवन-चरित्र पढ़ना, व पूज्य आचार्य पी० सी० राय, सर बोस आदि के दर्शन कर लेना। यह भी एक बडी भारी पढाई है। तुम पू० मोतीला राजी

से मिल आई, यह ठीक किया। तुम लोगों के बारे में इस समय मेरी क्या इच्छा है, शायद तुम्हें नहीं मालूम। यह तो तुम्हें अपने नाम से ही मालूम हो जाना है। मुझे ऐसा लगता है कि तुम्हें मदालसा का जीवन-चरित्र पढ़ने को अभी नहीं मिला। कलकत्ते में अगर मिले तो तलाश करके मगवा लेना और पढ़ना। वर्तमान में तुम्हारी माताजी व पू० विनोबा व श्री जाजूजी आदि जो तय करें, वही तुम्हें करना चाहिए। हां, भविष्य के लिए मैंने तुमसे बड़ी आशाएं कर रखी हैं, और अगर परमात्मा ने चाहा तो पूरी भी होंगी।

अगर सम्भव हो तो, पढ़ और समझ सको, इतनी बंगला भी वहां सीख लेना।

कलकत्ते में तुम्हारे लिए श्रीकृष्णदासजी और भाई महावीरप्रसाद जो निश्चय करें, सो करना। चि० पद्मा को आशीर्वाद कहना। उसे ओम् से कहना कि वह अपनी दिनचर्या और जलघर के अनुभव मुझे एक विस्तृत पत्र लिखें। अपनी माताजी को कह देना कि भाई घनश्यामदासजी का पत्र मुझे मिल गया था। मैंने भी सविस्तार पत्र लिखा है।

जमनालाल का आशीर्वाद

· १०९ ·

धुलिया जेल, १४-७-३२

चि० मदालसा,

तुम्हारे विचार मालूम हुए। तुम्हारे शिक्षण के बारे में पूज्य विनोबा से अच्छी तरह से बातें हुई हैं। तुम श्रीबालकोबा के पास से शिक्षण लो, यह मुझे पसंद है। हिंदी का अभ्यास भी थोड़ा चलता रहे, यह जरूरी मालूम होता है। तथापि तुम्हें व पूज्य विनोबा को जिस प्रकार संतोष हो वैसी व्यवस्था कर लेना। मेरी इच्छा है कि चि० रामकृष्ण श्रीनाना कुलकर्णी के पास ही रह कर शिक्षण लेवे और हो सके तो नाना के घर पर ही (उनकी पत्नी का स्वास्थ्य ठीक हो तो) रहे। मुझे तो इससे बहुत संतोष मिलेगा। पू० विनोबा की मदद लेकर तुम अपनी मा को समझा सको तो जरूर समझाना, जिससे मेरी हमेशा की चिंता कम हो जाय।

चि० कमलनयन भी विनोबा के पास व साथ रह सकेगा तो मुझे बहुत सुख व सन्तोष मिलेगा। विनोबा ने उसे अंग्रेजी भी बहुत जल्दी और उत्तम तरीके से पढ़ा देना स्वीकार किया है। उसके बारे में भी विनोबा से पूरी बात हो गई है।

चि० नर्मदा, उमा व श्रीराम की हिंदी की पढ़ाई ठीक चलती हो तो मुझे उसमें अभी ज्यादा फर्क करने की जरूरत नहीं मालूम देती। बाई गुलाब का स्वास्थ्य कैसा रहता है? अपने पत्र में सविस्तार लिखना। अबकी मुलाकात में तुम्हारी माता, चि० कमल चि० रामकृष्ण बाई गुलाब व चि० गुलाबचन्द या प्रलाद या वर्धा, बम्बई से जिसे आना हो, वह आ जायगे तो ठीक रहेगा। सब मिलकर ५-६ से ज्यादा नहीं होने चाहिए।

पूज्य मा व बाई केसर का स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। मेरा स्वास्थ्य उत्तम है। शरीर में पहले से, याने जेल के बाहर से ज्यादा ताकत मालूम देती है। रोज सुबह ६० डोल पानी निकालता हू। आजकल ५०० तार भी ज्यादा कात लेता हू। मन प्राय खूब शात व आनद में रहता है। कान का इलाज चालू है।

पू० विनोबा की सगत से बहुत सुख व लाभ मिला है। यह परमात्मा की बड़ी दया हुई। बाई कमला को व उसकी सासू को तुम पत्र भेजना कि मेरी चिंता बिलकुल न करे। चि० शाता, रमा, गोविन्दलालजी के यहा, बिड़लाजी के यहा तथा श्री सुवटादेवी वगैरे को पत्र भिजवा देना। तुम्हारी मा के नाम का पत्र पढ कर नागपुर जेल में भेज देना।

जमनालाल का आशीर्वाद

११० .

(सितवर, १९३२)

चि० मदालसा,

पू० बापू के तुम्हारी माता के नाम के पत्र की नकल तुमने भेजी, उसे पढ कर सुख मिला। तुम्हारी मा को कह देना कि वह बापू के लिखे मुताबिक पूरी तैयारी करने में लग जाय, व बापू की इस परीक्षा में

इस जन्म मे ही पास हो जावे तो उससे खूब सुख व लाभ मिलेगा।

पू० बापू ने मुझे जो पत्र ता० २१-९ को भेजा है उसकी नकल इस प्रकार है—

"चि० जमनालाल,

'तुम परेशान बिलकुल न होना। तुम्हे तो नाचना ही चाहिए कि तुमने जिसे अपना पिता चुना वह तुम्हारे प्रिय कार्य के लिए अपनी पूर्णाहुति दे रहा है। यह तो तुम्हारे लिए उत्सव की बात ही है।

"जानकी मैया के साथ मेरा विनोद चल रहा है।

"सरदार व महादेव तुमको याद करते है।"

बापू की इस भीष्म प्रतिज्ञा ने तो हम सबकी अस्पृश्यता निवारण की जिम्मेदारी बहुत ज्यादा बढा दी है। मै तो परमात्मा से हर रोज प्रार्थना करता ही हू। तुम सब भी किया करो जिससे हम सब लोग अपना कर्तव्य व जिम्मेदारी पूर्णतया समझते रहे व उसे पूरा करने के लिए जी-जान से उद्योग करते रहे।

जमनालाल का आशीर्वाद

· १११ ·

धुलिया जेल, २३-९-३२

चि० मदालसा,

तुम्हारा स्वास्थ्य बराबर नही रहता सो तुम व चि० नर्मदा दोनो का स्वास्थ्य उत्तम बनाने—रखने का ख्याल रखना। पू०बारताई को मेरा प्रणाम कहना। उनका स्वास्थ्य ठीक रहता होगा? चि० शान्ति (सरयू) राजी होगी। इन्हें कोई आवश्यकता हो तो तुम ख्याल करना। कन्या-पाठशाला मे सब लडकिया राजी होगी। श्री बालकोबा के खाने-पीने की व्यवस्था ठीक होगी। नही तो चि० राधाकृष्ण से कहकर बराबर करवा लेना। आश्रम की इमारत वगैरा वापस मिल जाने पर मुझे सूचना भिजवा देना। चि० उमा तो इस बार पास हो जायगी। एक ही बात है, इस बार छोटी बेटी पास होगी तो उसकी मा नापास हो

जावेगी। किसी एक को तो नापास होना ही होगा। परीक्षा का काम खतम हो जाने से चि० राधाकृष्ण व तुम सब लोगों का मिलकर पूज्य विनोबा की सलाह से आगे का कार्यक्रम निश्चित कर लेना ठीक रहेगा। चि० गुलाबबाई, चि० शान्ता, रमा आदि को मेरे राजी-खुशी के समाचार लिख देना।

जमनालाल का आशीर्वाद

११२

बम्बई, १४-११-३४

चि० मदालसा,

पत्र तुम्हारा मिला। तुम्हारी तबीयत अब ठीक है यह जानकर संतोष हुआ। तुमने पूज्य बापूजी की आज्ञानुसार प्रयोग शुरू किया सो ठीक है। यदि पुराने प्रयोग से वजन बढ़ता था तो उसे ही चालू रखना ठीक था। अब भी यदि इस प्रयोग से वजन आदि न बढ़े तो पू० बापूजी को बराबर सब बातें बतानी रहना व जैसा वे कहें उसी प्रकार चलना। मैंने ओम् को भी लिख दिया है कि वह तुमसे बातें किया करे। ओम् व रामकृष्ण की पढ़ाई आदि का तुम भी ख्याल रखना।

किसी प्रकार की चिंता न करना। स्वास्थ्य आदि समाचार बराबर देती रहना।

जमनालाल का आशीर्वाद

११३

बम्बई, १६-७-३५

चि० मदालसा,

तुम्हारा ता० ११ का पत्र डाक से कल मिला। पत्र भिजवाने में ऐसी देरी होती है व लिखे हुए पत्र पड़े रहते हैं, यह ठीक नहीं। पत्र लिखते ही ठीक समय पर डाक में भिजवा देने चाहिए।

तुम्हारे पत्र पढ़कर संतोष तो काफी होता है। तुम ५-६ मील घूम लेती हो तथा कार्यक्रम ठीक चल रहा है, यह जानकर संतोष हुआ। आहार

के बारे मे बापू का पत्र आने पर मुझे लिखना ।

उमा व रामकृष्ण की पढाई श्रीनाना के पास ठीक चल रही है, यह जानकर पढाई के सबध मे चिंता दूर हुई । तुम भी धार्मिक ग्रथो के अभ्यास मे श्रीनाना से सहायता ले सकती हो । परतु अपने स्वास्थ्य का विचार रखते हुए ही बौद्धिक श्रम का कार्य करना ।

चि० ओम् तुम्हारे साथ घूमने आती है तथा उसका कार्यक्रम भी व्यवस्थित चल रहा है, यह जाना । रस्सी से कूदना उसके स्वास्थ्य के लिए हितकर साबित होगा । उसे खूब व्यायाम करना चाहिए ।

पू० विनोबा का कार्यक्रम लिखा सो मालूम हुआ । धूलिया मे उनके हाथो ता० १४ को गोशाला का उद्घाटन हुआ है । तुम्हारी मा अगर रोज दिन मे दो बार बापू या मेरे माफिक कई बार खडखडाहट के साथ हसकर आनद लेने की आदत अपने मे लाने का प्रयत्न करे तथा ईश्वर पर अधिक श्रद्धा बढावे तो उसका मन और स्वभाव तो ठीक होगा ही, आत्मा भी सुखी और शान्त रहेगी । वह बिना कारण इतनी चिंता क्यो करती है ? मै तो बहुत सोचता हू तो भी कारण समझ मे नही आता । तुम उसे धीरे-धीरे समझाती रहो । मुझे उसकी ओर से चिंता रहा ही करती है । क्या किया जाय , यह समझ मे नही आता ।

जमनालाल का आशीर्वाद

११४

ऋतुसहार, खाली, २४-७-३५

पूंज्य पिताजी,

सादर सविनय प्रणाम । आपका ता० १७–७ का पत्र मिला । समाचार जाने ।

मैंने पहले पत्र मे श्री पडितजी[1] से अग्रेजी सीखने की बात का उल्लेख किया था । उस निमित्त मैं दोपहर को उनके पास रोज १-१॥ घटा

---

१ श्री रणजीत पंडित, श्रीमती विजयलक्ष्मी पडित के पति ।

जाती थी। रोज के नये शब्द सुनने तथा उनका उच्चारण करने से जो थोड़ा-बहुत अभ्यास जीभ तथा कान को हुआ है वह तो ठीक ही है, पर हां, इस निमित्त से देश-विदेश की कई नई बातें व इतिहास तथा आधुनिक गतिविधियों का हाल जानने को जरूर मिला। श्रीपंडितजी पाश्चात्य सभ्यता के तथा प्रगतिशील आधुनिक विज्ञान—मोटर, रेलवे, हवाई जहाज, बम, मशीनगनें, पानी के जहाज तथा लड़ाकू विमान इत्यादि सांइंटिफिक तथा बौद्धिक विकास के आविष्कारों के अत्यंत प्रेमी तथा उनके प्रचार के लिए अतिशय उत्कंठित व्यक्ति मालूम दिए। वे हजार-पांच सौ साल पिछड़े हुए, पुराने खयालों को माननेवाले, जड़ और आलसी, लकीर के फकीर बने हुए, धर्म के नाम से ढोंग करनेवाले भारतीयों से बहुत अधिक नफरत करते हैं। उपरोक्त दुर्गुणों से नफरत रखने में तो कोई बुराई नहीं, किंतु वे सोचने में कुछ शीघ्रता करते हैं तथा अधीर हो जाते हैं। दिमाग कुछ अधिक तेज होने से तटस्थ न्यायवृत्ति से खिसक जाते हैं। चर्चा में जब हिन्दुस्तान की आज की पिछड़ी हुई हालत से पाश्चात्य देशों की प्रगतिशील तथा उन्नत सभ्यता का जिक्र छिड़ने पर वे कई बार अत्यधिक बेचैन हो जाते हैं और खूब जोश में आकर सारे हिन्दुओं को तथा (एक महात्मा गांधी को छोड़) धर्म के नाम पर ढोंग मचानेवाले आश्रम-वासियों को खूब खरी-खोटी सुनाने लगते हैं— ४-५ दिन पहले पढ़ने के लिए मैं उनके पास गई तो उस दिन "यूरोप की सफर" विषय के जरिये कुछ नये शब्द बताते हुए वे स्वभाववश ही अपने प्रिय विषय की सघन घाटी में प्रविष्ट हो गए। श्रोता तो अकेली एक मैं ही थी। सतर्क होकर शांतिपूर्वक सब बातें सुनने की कोशिश कर रही थी। मुझे शांत देख कर तो उनका वेग अधिक-से-अधिक तेज होता जा रहा था। कभी-कभी उनकी दलीलों का तथा प्रश्नों का मैं ठीक से और जल्दी-जल्दी जवाब नहीं दे पाती थी, इससे उन्हें और भी जोश चढ़ने लग जाता। कहने लगे, "देखो यह है तुम लोगों की हालत। १८-१९ साल की उम्र है, पर स्वतन्त्र व्यक्तित्व का तेज या शक्ति कुछ है ही नहीं। बड़े बुजुर्ग जो सिखलाते हैं बस वही तुम रटते जाते हो। १९३५ को प्रगतिशील दुनिया का तुम्हें कुछ खयाल ही नहीं

है । ऐसा [illegible] कुछ पढ़ूं तो [illegible] लिए मुझसे [illegible] में फिर पढ़े हो और आपकी पद-रचना [illegible] अमूल्य विचारों का नष्ट कर रहे हो। मुझे तो इन आश्रमों का नाम ही नहीं सुहाता। मैं ऐसी जगह रहना भी नहीं चाहता था। [illegible] इन विचारों में कभी [illegible] लिखा था मैं [illegible] (पाश्चात्य [illegible] कई विद्वानों के उन्होंने नाम बताये पर वो मैं भूल गई हूं) [illegible] एक [illegible] में [illegible] करके एक मिनिट में खतम कर दूं,' वगैरा-वगैरा। मैं चुपचाप सब सुन रही थी, मेरे दिल में भी कुछ हलचल सा मची। मैंने कुछ सोच कर कहा कि अलग रहना ठीक हो सकता है, पर वह हमें सुना कर कोई लाभ नहीं। पंडितजी जिस वातावरण में हम और हमारी बुद्धि पकी है उस वातावरण को [illegible] के गले उतार कर ही इन बातों का प्रचार आप कर सकते हैं। अन्यथा हम तो जहा इतने बड़े हुए, तथा जहा हमारी पहले से श्रद्धा जमी है वहीं हमें आगे भी रहना है और सीखना है। वहीं से हमें जो कुछ प्रेरणा मिलेगी उसी पर हमें चलना होगा। यह सुनकर वह बोले—"पकी बुद्धि को बदलना कहाँ मुमकिन हो सकता है भला ! हा तुम जैसे लोग जिनकी बुद्धि अभी पकी हुई नहीं है उन लोगों को समझा कर ही आगे की पीढ़ी सुधारी जा सकती है।" इस प्रकार चर्चा प्रवाह १॥ घंटे तक चला। इतने में श्रीविजयाबहनजी सोते से उठ कर आईं और उन्होंने मेरा पक्ष लेकर पडितजी के आवेश को शान्त कर दिया।

इस एक महीने में पडितजी की ऐसी चर्चाओं तथा व्याख्यानों से मेरे विचारों को कुछ गति जरूर मिली है। यही मुझे बड़ा लाभ मालूम देता है। पडितजी बहुत ही रसिक, विनोदी, तत्वज्ञानी तथा अनुभवी विचारों के पुरुष है, ऐसा प्रतीत हुआ। उनके इस स्वभाव से हमारा काफी मनोरंजन तथा ज्ञानवर्धन हुआ। हम लोग यहा खूब आनद में है। दोनों का स्वास्थ्य अच्छा है। मन शात है। आप जरा भी चिंता न करे। हम लोगों ने अपने हाथ से रसोई बनाकर एक दिन श्री बद्रीदत्तजी पाडे और मथुरादत्तजी जोशी को तथा एक दिन पडितजी को व तीनों बच्चों को खाना खिलाया था। सबों को खूब आनद आया। पत्र बहुत लंबा

हो गया है, क्षमा करें। सब अतिथिजनों को सादर अभिवादन !

आपकी नटखट नम्रबाला
मदालसा

२५-७-३५

पुनश्च—श्री पंडितजी परसों सुबह गये। कल दोपहर के बाद से यहां की निसर्ग माता ने रंग में आकर नाना प्रकार से हमको अपने खेल-तमाशे दिखाये और दिल खोल कर हमसे बातें कीं। निसर्गदेवता के कल के रूप का तथा उसके परिवार का परिचय कुछ इस प्रकार है।

शाम के ५-५।। का समय था। उत्तर में बिनसर की ओर हिमालय के उच्च धवल शिखरों की झांकी हो रही थी। हमलोग बिनसर के रास्ते घूमने निकले। हिमालय हमारे साथ चल रहा था। कभी ऊंचा, कभी ठिगना, कभी चौड़ा, कभी गहरा। इसी प्रकार वह अपने रंग भी बदलता जाता था, कभी धवल, कभी नीला, कभी भगवा और कभी लाल। इस प्रकार के दिव्य रंगों से नगाधिराज हिमालय मानो हमारे साथ लुका-छिपी का खेल ही खेल रहे हों! फिर थोड़ी देर बाद ही सूर्याग्नि की अंतिम किरणों को साथ लेकर अपने उच्च धवल शिखरों पर किरणों का सुनहरी मुकुट धारण करके बिदायगी का भव्य नृत्य दिखाने लगे। और फिर धीरे-धीरे उस देवता ने अपने अनुपम महल के पट शुभ्र बादलों के दिव्य पटों द्वारा बंद कर लिये और हम घर लौट आये। लौटने में ऐसा लग रहा था मानो बादलों के झुंड आपस में कबड्डी का खेल खेल रहे हों। आकाश में चारों ओर लाली छा गई और पश्चिम दिशा में दीपावली का अद्भुत साज सज रहा था। सूर्य धीरे-धीरे पहाड़ों की ओट में छिप गया। कल ही शाम को हमने लकड़बग्घे का गुर्राना और बिनसर में भालू के आगमन की खबर भी सुनी। इस प्रकार हमने निसर्ग माता के घर का परिचय पाया। हम यहां अच्छी तरह मौज से रहते हैं। आप कुछ सोच-फिकर मत कीजिए।

मदालसा

: ११५ :

वर्धा, २८-७-३५

चि० मदालसा,

मेरे पहले पत्र तो मिले ही होगे । चि०······ व उसके पिताजी के पत्रो की नकल इसके साथ भेजता हू । तुम अपनी मा को पढकर सुना देना । चि० कमल ने यह घटना बहुत ही बहादुरी व हिम्मत के साथ बर्दाश्त की है । इस सबध के छूटने से तुम्हें व तुम्हारी माता को तो चिंता का कारण होना नही चाहिए । लडके व लड़की को शुरू मे ही असंतोष रहता हो तो फिर हम लोगो के ध्येय के मुताबिक सबध कैसे किया जा सकता है ?

आजकल यहा मेहमानो की चहल-पहल है । पाच-सात दिन रहेगी । तुम्हारी मा को तो प्राय: बहुत से लोग याद किया करते है । इस बार वर्किग कमेटी की बैठक महत्व की हो रही है ।

आशा है तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक सुधरता होगा । तुम्हारी मा शात रहकर अतर-विकास का विचार करती होगी ।

मेरा स्वास्थ्य ठीक है ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ११६ :

जयपुर, २२-८-३५

चि० मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला, तुम्हारी माता का भी । तुम्हारी दावत के लोभ से वहा जाने को जी तो चाहता है, परतु इस समय कार्यवश आना असंभव है ।

सीकर के जाटो की कठिनाइया दूर करने मे कुछ सहायता करने के हेतु मै सीकर आया था । कैप्टेन वेब से दो-तीन बार मिला । श्रीमणिलाल-जी कोठारी भी यहा आ गये थे । उनके साथ भी एक रोज वेब से मिला । वेब आदमी अच्छा मालूम होता है । इसके द्वारा किसानो का कुछ हित

होने की आशा तो है। पुलिस आफिसर मि० यग से भी हम लोग मिले। यह आदमी भी कुछ समझदार है, परन्तु जयपुर कौंसिल के वाइस प्रेसिडेंट सर बीचम सेन्ट जॉन बहुत सख्त आदमी हैं। उसके साथ बातचीत की है। उससे कुछ विशेष आशा नहीं प्रतीत होती।

जमनालाल का आशीर्वाद

११७

वर्धा, १४-११-३६

चि० मदालसा,

तुम सब अच्छे होगे। आजकल यहा काफी मेहमान हैं और आ रहे हैं। श्री एन्ड्रूज तो थे ही और उनके कारण डा० मोट, अमेरिका के बहुत प्रसिद्ध पुरुष, जिनका क्रिश्चियन धर्मवालो पर बहुत प्रभाव है, दो रोज रहकर गये है। उन्हे यहा का भारतीय रहन-सहन पसद आया। कल दिवाली देखने शहर मे व मंदिर गये थे। मेरा आगे का कार्यक्रम परसो निश्चित होगा। तुम्हारा व रामकृष्ण का क्या विचार ठहरा? यहा सब अच्छे है। तुम सबो के बिना थोडा सूना-सा लग रहा है। तुम्हारी मा अच्छी होगी, खूब हसती रहती है न? चि० उमा से तुमने पेट-भर बातें की होगी। चि० कमल के इन दिनो दो पत्र आ गए हैं। वह डब्लिन में है और राजी है।

जमनालाल का आशीर्वाद

११८

वर्धा, १७-११-३६

चि० मदालसा,

तुमने जो लबा पत्र भेजा है वह प्राय सबने पढा है। तुम अपनी वर्णन-शैली का विकास कर सको तो अच्छा है।

चि० राधाकृष्ण का विवाह जनवरी मे होगा। यानी जनवरी मे यहा चार विवाह होगे। प्रलाद, भैरू, राधाकृष्ण व बम्बई मे सोफिया का। इसलिए तुम लोग यहा २२ दिसम्बर तक पहुच जाओगे तो ठीक रहेगा।

दिसबर के आखिरी सप्ताह मे यहा 'फैलोशिप' (ब्रदरहुड) के लोग आवेगे। करीब पचास से ज्यादा अग्रेज (सभीपुरुष) रहेगे। यहा पाच दिन रहेगे। प्राय सबकी व्यवस्था अपने को ही करनी होगी। तुम्हे या तुम्हारी मा को याद होगा कि जब हम लोग साबरमती रहते थे, तब भी ये लोग वहा आये थे। वहा तो बापूजी ने काम का बटवारा कर दिया था। भोजन के लिए अपने घर भी आया करते थे। इनका सम्मेलन देखने योग्य होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ११९ :

वर्धा, १७-७-३७

चि० मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। पढ कर खुशी हुई। तुम्हारी इच्छानुसार वह पत्र तुम्हारी माताजी के पास भेज दिया है।

मेहमान करीब-करीब सब चले गए। रमा के लिए तार आया था, इससे वह तीन दिन हुए चली गई। सावित्री, नन्नू तथा सोफिया आज गये, गजानन कल चला जायगा। मेहमानो की भीड तो कम है मगर मैं केस के काम मे पडा हुआ हू और उसी मे मेरा काफी समय लग जाता है।

गहनो के सबध मे तुमने लिखा, सो जाना। मैं समझता हू कि यह गहने थोडे समय के लिए तुम्हे पहनाये गए होगे और एक-दो दिन के बाद तुमने उतार दिए होगे। मेरी राय में तो गहने न पहनने का आग्रह करने का तुम्हें पूरा अधिकार है और वह आग्रह तुम्हें रखना चाहिए। तुम घर-वालो को प्रेमपूर्वक समझा सकोगी। तुम्हारे लिए किस तारीख को पहुचना सभव है? श्रीमन् को तो अब जल्दी आना ही चाहिए। कब तक आयगे? लिखना।

जमनालाल का आशीर्वाद

१२०

वर्धा, ८-३-३८

चि० मदालसा,

तुम्हारे पत्र मिले। मैं आज ही रांची जा रहा था, परन्तु श्रीसुभाष बाबू आज नागपुर से फिर वापस यहां बापूजी से मिलने आये और मुझे टेलीफोन से रहने को कहा, इसलिए मैं अब कल रवाना होकर ता० १० को रांची पहुंचूंगा। श्रीमहादेवी का पत्र तो मुझे अभी तक नहीं मिला। तुम्हारी माता के स्वास्थ्य की चिंता बराबर बनी रहती है। आशा है ईश्वर की कृपा से स्वास्थ्य जल्दी ही ठीक हो जायगा, जिससे एक भारी चिंता से मुक्ति मिलेगी।

जमनालाल का आशीर्वाद

१२१

कलकत्ता ७-४-३८

चि० मदालसा,

तुम्हारा तारीख २९-३-३८ का पत्र मिला। पढ़ कर तुम्हारी मा के स्वास्थ्य व मन की स्थिति का पता चला। वैसे तो मुझे मालूम था ही, परन्तु दूर रहने पर भी इतना विचार रखती है यह थोड़ा विचारणीय है। अबकी बार जब मैं वहां आऊंगा तब इसका सन्तोषजनक मार्ग निकालने का पूरा प्रयत्न करूंगा। परमात्मा ने चाहा तो मार्ग निकल सकेगा।

तुम्हारी मा के स्वास्थ्य की चिंता के कारण व अन्य कई कारणों से मेरा मन भी शांत नहीं रह पाता। परमात्मा की दया से सब सुख होते हुए भी यह हालत है। ईश्वर से ही प्रार्थना करते रहने पर कोई मार्ग निकलना संभव है। विचारों में काफी अन्तर पड़ता जा रहा है। तुम चिंता मत करना।

पू० बापूजी की इच्छा बालकोबा को जुहू भेजने की हो रही है। उनके लिए अलग दो आदमी रहें ऐसा झोंपड़ा बनाना ठीक रहेगा या पक्की इमारत। श्रीआबिद अली व अपनी मा से सलाह करके मुझे लिखना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२२ :

जुहू, १७-५-३८

चि० मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम लोग जब वहा पहुच गए हो तो आठ-दस रोज वही रहना, जिससे स्वास्थ्य को कुछ लाभ पहुच सके। तुम्हारी मा की भी यही इच्छा है।

गौरीशकर भाई के बारे में तुमने लिखा सो समझा। मुझे भी इस बात का दुख है कि अपने कारण उन्हें ऐसा निश्चय करना पडा। परतु मैं यह नही समझ पाया कि इस काम मे तुम्हे बीच मे डालने की क्या आवश्यकता थी ?

मै गया उसी रोज अगर वे मुझसे बात कर लेते तो कोई गलतफहमी नही हो पाती। क्योकि जब मेरा तार यहा पहुच गया था तो तुम उन्हे उस तार की तारीख बता कर गलतफहमी दूर कर सकती थी। तार की तारीख देख कर उनको भी सतोष मानना चाहिए था। दूकान पर कुछ गलती हो गई हो तो उसके लिए इतनी गलतफहमी कर लेने का कारण तो नही होना चाहिये। यह तो ठीक हुआ कि मेरे पास तुम्हारा खत भी समय पर पहुच गया व मैंने तार भी समय पर कर दिया। पर प्रवास में तो ऐसा भी हो सकता है कि महत्व की चिट्ठी भी कभी-कभी २-४ रोज बाद ही मिल पाती है। उस हालत मे जवाब भी यथासमय कैसे मिले ? अब हम लोगो को इस बात का पूरा खयाल रखना होगा कि उनके निश्चय को अपने लिए तोडने का मौका न आये। आगे से किसी के साथ भी व्यवहार करते व सबध बढाते वक्त खूब सोच कर ही व्यवहार करना चाहिए। तुम्हे सब हाल मालूम रहे, इसी खयाल से यह सब लिखा है। पर इस मामले मे तुम अपने दिल पर कोई बोझ नही रखना।

मेरा प्रोग्राम अभी अनिश्चित है। ८-७ रोज यहा रहना पडेगा। फिर शायद एक बार वर्धा जाना पड़े। पू० बापू कल वर्धा जा रहे हैं।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२३

मोरासागर, (होली) ५-३-३९

चि० मदालसा,

तुम्हारा २६-२ का पत्र मिला। तुम्हारी मा के नाम जो पत्र लिखा है, उसमें विस्तारपूर्वक समाचार लिखे है। तुम जरूर पढ लेना। आश्रम की प्रवृत्तियों मे तुम्हे जिन बातो मे असतोष हो, वे बाते तुम्हे पूरी तरह समझकर श्रीकाशीनाथजी, भागीरथी बहन व शान्ता से कहना चाहिए। जब इतने तुम्हारा समाधान न हो पाए तो पू० काका साहब या दादा से। मेरे लिखने का मतलब तो आश्रम कमेटी के मेबरो से है। उनके बाहर चर्चा नहीं होनी चाहिए। श्रीमन् से भी सलाह कर लेना। तुम्हे ज्यादा चिता करने का कारण नहीं। अपने बडो से, जिनके हाथ मे काम की बागडोर है उनसे कह देना चाहिए। या ताकत हो तो काम को अपने हाथ मे लेकर सभालने की तैयारी होनी चाहिए। केवल टीका करने से लाभ नहीं। तुम विद्यार्थिनी हो, इस नाते वहा से जितना लाभ उठा सको, उठाने का खयाल रखो। तुम्हारे इधर आने के बारे में मैंने तुम्हारी मा के पत्र में लिखा ही है। वह बराबर समझ लेना। श्रीमन् व विनोबाजी की राय मिलने पर व तुम्हारी आतरिक भावना को जिससे शाति मिले, वही निश्चय करना ठीक रहेगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

१२४

मोरासागर, १३-४-३९

चि० मदालसा,

तुम्हारे व श्रीमन् के तारीख ३०-३ के लिखे हुए पत्र मुझे कल यहा मिले। मेरा स्वास्थ्य अब उत्तम है। खासी बिलकुल चली गई है। पाव मे दर्द भी नहीं है। वजन भी कम हुआ है, जो होना जरूरी था। यह सब प्रकार से समाधानकारक है।

तुमने भी 'सुख आणि शान्ति' पुस्तक पढ़ना शुरू किया, सो ठीक किया। आशा है, तुमने वह पूरी कर दी होगी। तुम्हें जो प्रसग ठीक मालूम

हुए हो, वे नोट लिए हैं क्या ? मैंने यह पुस्तक अबसे कोई बीस वर्ष पहले पढ़ी थी। फिर दोबारा पढ़कर सुख मिला।

तुम किशोरलाल भाई की 'विदाय वेलाए' तथा 'तिमिरमा प्रभा'¹ ये दोनों गुजराती पुस्तकें समय मिले तब पढ़ना। ये दोनों मुझे बहुत पसंद आई हैं।

अगर तुम सबकी इच्छा हो तो इधर आओ। मुझसे मिलना हो जायगा। वैसे यह प्रदेश भी घूम कर अभ्यास करने योग्य तो है। मेरे पास आओ तो जयपुर से खानगी मोटर लेकर व श्रीयंग साहब से परवानगी का पत्र लेकर आओगे तो इधर एक-दो रोज मोराकुण्ड वगैरा भी देख सकते हो। तुम यह पत्र कमल, उमा वगैरा सभी को पढ़ा देना।

यहा कोई आये और उसकी सूचना मुझे पहले मिल जाय तो आटा, दाल वगैरा सामान मगाकर रखने मे सुभीता रहेगा। यहा तो दो-दो आने, चार-चार आने का सामान आया करता है। उसमें फिर गाय का घी व दूध तुम लोग जो कोई भी आयगा एक ही बार मे सब खतम कर देगा। अत आने की पूर्व सूचना मिलने से थोडी गृहस्थी के ढग का संग्रह कर लिया जायगा। तुम लोगो के पत्रो पर दादा (धर्माधिकारी) से 'मार्क' दिलाने की इच्छा है।

जमनालाल का आशीर्वाद

१२५

कर्णावतो का बाग, १६-७-३९

चि० मदालसा,

तुम्हारे दोनो खत मिले। पहले खत का उत्तर उमा को देने के लिए कहा था।

मेरे पैर का बिजली का इलाज चल रहा था। पर बिजली ज्यादा

¹ खलील जिब्रान के 'दी प्रोफेट' और टाल्स्टाय के 'लाइट-शाइन्स इन द डार्कनेस' के गुजराती अनुवाद; इनके हिन्दी अनुवाद सस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली से उपलब्ध है।

हो जाने से घुटने के नीचे की जगह जल गई है। इस कारण अभी तो उसी जगह का इलाज चल रहा है। १०–१५ दिन में ठीक हो जायगा।

५–७ दिन में काफी वर्षा हो गई है। चारों ओर हरियाली नजर आती है। मोर सुबह-शाम खूब नाचते है। रात को मोरों की आवाज कई बार सुनाई देती है।

तुम्हारी भेजी हुई पूनिया मिल गई हैं। श्रीकुन्दन बहन का क्या कार्यक्रम है? उन्हें वर्धा की सब संस्थाओं से पूरी तरह परिचित करा दिया होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

१२६

नई दिल्ली, १-१०-४०

चि० मदालसा,

तुम्हारा पत्र मिला था। दौरे की वजह से जवाब जल्दी नहीं दे सका। तुम्हारी चिट्ठी इस वक्त नहीं मिल रही है। तुम्हारी बातों का जवाब पत्र सामने होने से दिया जा सकता था। अगर तुम्हारी उदयपुर देखने की इच्छा हो तो ५ को सवेरे जयपुर, न्यू होटल (स्टेशन के पास ही है) पहुंच जाना। अपने आने की सूचना श्रीहरि डॉ० राव साहब न्यू होटल जयपुर को दे देना। वह स्टेशन पर गाड़ी भेज देंगे।

उदयपुर से ८ को लौट कर फिर जयपुर आना है और १० को सवेरे वनस्थली पहुंचना है। वहां १०–११ को बालिका विद्यालय का वार्षिकोत्सव है। यदि तुम उदयपुर न आकर सिर्फ विद्यालय का उत्सव देखना चाहो तो जयपुर पहुंच सकती हो। वह संस्था देखने योग्य है। साथ तुम जिसको लाना चाहो, ला सकती हो। तुम्हारी सासजी या जिठानी ([illegible]) साथ आवें तो मुझे बहुत खुशी होगी। छोटे बच्चे साथ रहने से कष्ट रहेगा।

और सब कुशल है। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। पू० बापू का भी स्वास्थ्य अच्छा है। वह सीकर से [illegible] [illegible] जाऊंगा।

पू० बापूजी शिमला मे आ गए है। अब वही की तैयारी कर रखनी है।[1] तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक है यह जानकर खुशी हुई।

जमनालाल का आशीर्वाद

१२७

नासिक रोड, १-७-४१

चि० मदू,

मेरा पत्र मिल गया होगा। परसो रात मे यहा बारिश की झड़ी लग रही है। रात को तो रजाई ओढ़नी पड़ी थी। सर्दी के कारण दाहिने पाव के गोडे मे थोडा दर्द-सा व भारीपन मालूम होता है। तकलीफ कोई खास नही है। भूख लगती है। पेट ठीक साफ हो जाता है।

मुझे अनुभवी लोग कह रहे है कि नासिक मे थोड़ी ठड मे भी गोड़े मे दर्द का डर है, सो शिमला मे तो बरसात भी ज्यादा होती है और साथ मे ठड भी। अत तुम पू० बापूजी से बात कर लेना। वैसे शाति तो यहा भी है। पर बापू का शिमला ही भेजने का विचार होगा तब तो मैं यहा से अगले मगलवार को निकल कर बुधवार को वर्धा पहुच जाऊगा। जल्दी हो तो सोमवार को भी पहुच सकता हू। अगर उनकी इच्छा हो कि मै नासिक ज्यादा दिन रह सकता हू, तो इसकी सूचना मुझे जल्दी मिल जाने से मै यहा एक-दो महीने के लिए कोई छोटा-सा बगला किराये पर ले लूगा। साथ ही रसोइये की भी व्यवस्था कर लूगा। अभी तो मैं श्रीगोपाल नेवटिया का मेहमान हो रहा हू। पर ज्यादा दिन तो मेहमानदारी नही चल सकती। वैसे वह तथा उनकी स्त्री सुभद्रादेवी दोनों बड़े प्रेम से मेरा खयाल रखते है।

मेरा वजन आज लिया था। १५० हुआ। करीब चार-साढ़चार इन दिनो मे बढा। यहा आम खूब चूस रहा हू क्योकि रुपए के सौ आम आते है। बहुत स्वादिष्ट हैं। बरसात बद होती तो तुम्हे भिजवाता।

---

[1] जेल जाने की। गांधीजी और वायसराय की राजनैतिक वार्त्ता का कोई परिणाम नहीं निकला था।

तुम्हारी मा राजी होगी। श्री महेश का हाल लिखती रहना। उसकी सेवा-सुश्रुषा की व्यवस्था ठीक रहे, इसका खयाल रखना।

श्रीपार्वतीदेवी डीडवानिया व चि० गिरधारी तो सुबह की मेल से वहां पहुंच जायगे। तुम्हारी मा के पास ८-१० दिन से रहना चाहते हैं। समय मिले तो बापू से भी घूमते हुए एक-दो बार बात करवा देना, जिससे इन्हें शांति मिलेगी।

जमनालाल का आशीर्वाद

१२८

नासिक रोड, ८-३-४१

चि० मदू,

तुम्हारा तारीख ३-३ का पत्र मिला। चि० कमला का भी। चि० रामेश्वर से ठीक-ठीक बातचीत हो गई है। वह फिर श्री केशवदेवजी के साथ आने वाला है। बहुत करके इनका बंबई रहना संभव है। श्री पार्वती बाई डीडवानिया व गिरधारी तो आज पहुंच ही गए होंगे। उनके साथ पत्र दिया है। तुम थोड़ा ख्याल रखना। मदालसा के पेट में फिर दर्द शुरू हुआ, सो अभी तक निदान नहीं हो पाया दिखता। आशा है जल्दी ही निदान हो जायगा। अभी तक मैं काफी भूख रखकर खानपान का ख्याल रखता हूं तो भी वजन बढ़ता है। अगर अभी खाता हूं उससे कम खाऊं तो वजन नहीं बढ़ेगा, परन्तु मन में असंतोष भी रहेगा, व कमजोरी भी। खैर, इस बारे में वर्धा आने पर पू० बापू व डाक्टर के समक्ष फैसला हो जायगा। चिंता का कारण नहीं है।

अभी तो मंगल को निकल कर बुध को पहुंचने का ही विचार है।

जमनालाल का आशीर्वाद

१२९

दिल्ली, १६-३-४१

चि० मदू,

मैं यहां सकुशल पहुंच गया। रेल से घर तक आते-आते बहुत [illegible]

मिला, उसमे तुमसे बात हो सकी उससे मुझे सुख व संतोष मिला। मन में यही रह गया कि ज्यादा समय मिलता तो ठीक रहता। खैर, फिर मिलेगा। तुम्हारी मा के तुम नजदीक आ रही हो और वह भी अपने स्वभाव में परिवर्तन कर रही है, यह अच्छे चिह्न है। मै भी देखता हू कि मै अपने स्वभाव व बर्तन मे कुछ परिवर्तन कर सकता हू क्या ?

यहा तो गर्मी बहुत ही ज्यादा पडती है। मै गाड़ोदियाजी के यहा ठहरा हू।

पू० बा से कहना कि देवीदास भाई मिले थे, राजी है।

हरिजन कालोनी मे दो-तीन घटे के लिए गया। श्रीठक्कर बापा से मिलना हुआ। वियोगी हरिजी तो साथ मे थे ही। वहा मोरासागर का हरिजन-मेहतर लडका बुद्धि भी मिला। उसे देखकर सुख मिला। उसके भजन सुने।

वर्धा से मथुरा तक रास्ते मे श्रीरामकृष्ण डालमिया से बाते व विचार विनिमय हुआ।

जमनालाल का आशीर्वाद

शिमला, १७-७-४१

पुनश्च—कल पत्र भेज नही सका। आज यहा देर हो गई थी। कुशल-पूर्वक पहुच गया।

कालका से शिमला वेस्ट ५६ मील है। कायदे से तीन घटे से पहले नही पहुचना चाहिए। याने ड्राइवर को १८ मील प्रति घटे से ज्यादा तेज गाडी नही चलानी चाहिए। इस कारण दस बजे करीब जहा तक मोटर आती है, वहा पहुचा। वहा पू० राजकुमारी बहन का नौकर नबीबख्श रिक्शा व मजदूर लेकर तैयार खडा था। एक तो वर्षा हो रही थी, दूसरे नबीबख्श का आग्रह था, तीसरे राजकुमारी बहन भोजन की राह देख रही थी, इसलिए आज जीवन मे पहली बार रिक्शा मे बैठना पडा। मन में विचार तो खूब रहा, परतु उस समय लाचार हो गया था। नबीबख्श माननेवाला नही था।

राजकुमारी बहन ने मेरे वास्ते खाने-पीने, रहने व आराम आदि का बहुत ही सुंदर इन्तजाम कर रखा था। इतनी अच्छी व्यवस्था राजा-महाराजाओं के यहां भी होना कठिन है, ऐसा मालूम दे रहा है।

यहां कुछ सीखने को व विचार करने को मिलेगा ऐसी आशा है। यह मकान भी बड़ी सुंदर जगह बना हुआ है। रास्ते में विट्ठल को तो मोटर में चक्कर व उल्टी हुई। मैं तो दृश्य देखता रहा। थोड़ा पैदल भी चल लिया था।

श्रीमन् से कहना कि आगरा गाड़ी एक घंटा लेट पहुंची थी। विट्ठल ने और मैंने भी गाड़ी से उतर कर देखभाल की। श्रीहृदयनारायणजी नहीं मिले। मैंने श्रीरामकृष्ण (डालमिया) से बात तो इनके बारे में की थी। परन्तु वह मिल जाते तो शायद निश्चय ही हो जाता।

पू० बापू को तो तार व पत्र राजकुमारी बहन ने दिया ही है। मैं तुम्हें लिखता रहूंगा। उसमें जो हिस्सा जिसके योग्य मालूम दे, उन्हें कह दिया करना। विनोबा को तो एक वर्ष का आराम मिल ही गया है। ज० ब०

१३०

शिमला, १९-७-४१

चि० मदू, —

तुम्हारा १७-७ का पत्र अभी मिला। वर्णन पढ़कर खुशी हुई। वजन सचमुच तीन पाउंड बढ़ा होगा और पू० बापू को विश्वास हो गया होगा।

मीरा बहन के पास रह आई यह बहुत ठीक किया। मुझे भी मीरा बहन की तपश्चर्या, सेवा भाव आदि की याद आया करती है। मेरा यहां ठीक चल रहा है। पांच-छ मील रोज घूम लेता हूं। प्रेम व शांति का वातावरण है। श्रीराजकुमारी बहन और घर के सब लोग खूब प्रेम से रख रहे हैं। मुझे अच्छी शांति मिल रही है।

यहां एक ताफा बाई है। इसकी सेवा व प्रेम सब घर के लोग इतनी ज्यादा करते हैं कि सचमुच आश्चर्य होता है। तुम्हारी मां व बाप इतना प्रेम या सेवा पू० बापू या विनोबा या अन्य गुरुजनों की या बालकों की

कर सके तो कितना अच्छा हो। यह तोफा बाई कौन है ? पू० बापू से पूछ लेना, वह जानते है। उनकी गोद मे भी बैठने का इसे सौभाग्य मिला है। इस पर खूब खर्च होता है। यहा के मुशीजी का हाल फिर लिखूगा।

सेवाग्राम पहुचने तक टिक सके ऐसे फल व सेव भेजने का ख्याल रखूगा।

बापू को पत्र इसलिए नही लिखता कि उन्हे जवाब लिखना पडेगा। बहन तो रोज लिखती ही है। बापूजी भी उन्हे लिखते रहते है। फिर बापू का दुहरा काम क्यो बढाऊ ? तुम भी हालचाल कह ही देती होगी।

आज तुम्हारे लिए एक पार्सल भेजा है। फोन करके जल्दी मगा लेना। यहा के फल सस्ते है। सेब (चार सेर), नाशपाती (२ सेर), आडू (१ सेर)। इनमे से कौन से ठीक तरह से पहुचते हैं, यह लिखना। राजकुमारी बहन को तो पूरा डर है कि ठीक नही पहुचेंगे। अगर ठीक पहुच जावेंगे तो खान साहब को सेब, नाशपाती भाप से सिजा कर व मलीदा बना कर खिलाना। तुम तो खाओगी ही। इन पर तुम्हारी पूरी मालकी है (जनरल भडार की नही है)। घूमने जा रहा हू।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च:—

तुझे तो गवारपाठे का पाक बापू खिलाते हैं। मुझे पेट भर कर रोटी भी नही देते। (मिठाई, खटाई की तो बात ही कहा ?) क्या यह इन्साफ है ? महेश खूब अच्छा होगा।

—ज० ब०

· १३१ ·

शिमला वेस्ट, २८-७-४

ल गया होगा। मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है। जुकाम व गया। कल से मेरा घूमना-फिरना फिर चालू हो गया है। की आबहवा की आदत पडती जा रही है।

पू० बापू ने कह दिया कि उनका ता० २१-७ का पत्र मिल गया है।

ज्य बहन राजकुमारी जी व उनके परिवार के प्रेम-व्यवहार से ठीक लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहा हू। मैंने अपने को राजकुमारी बहन के सुपुर्द कर रखा है। वह जो देती है, खाता हू। भूख ज्यादा लगती है तो प्रेम के साथ मीठी लड़ाई लड़ लेता हू। उनके भाई कर्नल भी मेरे लिए बहन से लड़ते रहते है कि वह मुझे भूखा क्यों मारती है? लड़ने में अच्छा आनद आता है। बहन खान-पान का बापू के लिखे मुताबिक पूरा ख्याल रखती है। मैं भी ख्याल तो रखता ही हू, पर थोड़ा, क्योंकि दो जनें चिंता क्यों करे? जब एक समझदार नर्स अपने कर्त्तव्य का ठीक पालन करती हो तब फिर मरीज को चिंता रखने की क्या जरूरत? उसे तो फिर नर्स व डाक्टर से विनोद की लड़ाई लड़ने में ही आनद आना चाहिए। वानी खाने-पीने की फिकर को भूलना चाहिए। यहां फल व साग तो ताजे व अच्छे आते ही है। यहां के बाग में से भी निकलते रहते है।

जमनालाल का आशीर्वाद

१३२

शिमला २७-२८-७-४१

चि० मदू,

तुम्हारा २१-७ का पत्र कल मिला व २५-७ का बहन के पत्र के साथ आज मिला। बापू का पत्र भी मिला। बापू को मैंने उत्तर बहन के पत्र में ही लिख भेजा है। तुम बापू से माग कर पढ़ लेना जिससे मेरी इच्छा मालूम हो जायगी।

तुम्हारी सूचना अक्षरों के बारे में बिलकुल ठीक है। यहां समय मिल जाता है, इसलिए अक्षर थोड़े सुधर जाने की आशा है।

पू० राजकुमारी बहन मेरे खान-पान घूमने-फिरने, मुलाकात आराम आदि का पूरा ख्याल रखती है। मुझे यहां घर से ज्यादा आराम, स्नेह व प्रेम का वातावरण मिल रहा है। इतना होते हुए भी यहां से बाद ज्यादा समय तक ठहरने का उत्साह नहीं हो सकता। विट्ठल मास्टर वगैरा अपना काम बहुत अच्छी तरह से करता है।

कुछ परिवर्तन से अगर तुम्हारे मन को संतोष मिलता है तो तुम्हारा

य बहन राजकुमारी जी व उनके परिवार के प्रेम-व्यवहार से ठीक लाभ
ठाने का प्रयत्न कर रहा हू। मैंने अपने को राजकुमारी बहन के सुपुर्द
र रखा है। वह जो देती है, खाता हू। भूख ज्यादा लगती है तो प्रेम के
ाथ मीठी लड़ाई लड़ लेता हू। उनके भाई कर्नल भी मेरे लिए बहन से
ड़ते रहते है कि वह मुझे भूखा क्यो मारती है? लड़ने मे अच्छा आनद
ाता है। बहन खान-पान का बापू के लिखे मुताबिक पूरा ख्याल रखती
। मैं भी ख्याल तो रखता ही हू, पर थोड़ा, क्योकि दो जने चिता क्यो
रे? जब एक समझदार नर्स अपने कर्त्तव्य का ठीक पालन करती हो
व फिर मरीज को चिन्ता रखने की क्या जरूरत? उसे तो फिर नर्स
डाक्टर से विनोद की लड़ाई लड़ने मे ही आनद आना चाहिए। यानी
ाने-पीने की फिकर को भूलना चाहिए। यहा फल व साग तो ताजे व
च्छे आते ही है। यहा के बाग मे से भी निकलते रहते है।

जमनालाल का आशीर्वाद

१३२

शिमला, २७/२८-७-४१

चि० मदू,

तुम्हारा २१-७ का पत्र कल मिला व २५-७ का बहन के पत्र के साथ आज मिला। बापू का पत्र भी मिला। बापू को मैंने उत्तर बहन के पत्र मे ही लिख भेजा है। तुम बापू से माग कर पढ लेना, जिससे मेरी इच्छा मालूम हो जायगी।

तुम्हारी सूचना अक्षरो के बारे मे बिलकुल ठीक है। यहा समय मिल जाता है, इसलिए अक्षर थोड़े सुधर जाने की आशा है।

पू० राजकुमारी बहन मेरे खान-पान, घूमने-फिरने, मुलाकात, आराम आदि का पूरा ख्याल रखती है। मुझे यहा घर मे ज्यादा आराम, शाति व प्रेम का वातावरण मिल रहा है। इतना होते हुए भी पहली बार ज्यादा समय तक ठहरने का उत्साह नहीं हो सकता। विट्ठल मालिश वगैरह अपना काम बहुत अच्छी तरह से करता है।

कुछ परिवर्तन से अगर तुम्हारे मन को शाति मिलती है तो बापूजी

कर सके तो कितना अच्छा हो। यह तोफा बाई कौन है ? पू० बापू से पूछ लेना, वह जानते हैं। उनकी गोद में भी बैठने का इसे सौभाग्य मिला है। इस पर खूब गर्व होता है। यहां के मुरीजी का हाल फिर लिखूंगा। सेवाग्राम पहुंचने तक टिक सके ऐसे फल व सेब भेजने का ख्याल रखूंगा।

बापू को पत्र इसलिए नहीं लिखता कि उन्हें जवाब लिखना पड़ेगा। बहन तो रोज लिखती ही हैं। बापूजी भी उन्हें लिखते रहते हैं। फिर बापू का दुहरा काम क्यों बढ़ाऊं ? तुम भी हालचाल कह ही देनी होगी।

आज तुम्हारे लिए एक पार्सल भेजा है। फोन करके जल्दी मंगा लेना। यहां के फल सस्ते हैं। सेब (चार सेर), नाशपाती (२ सेर), आड़ू (१ सेर)। इनमें से कौन से ठीक तरह से पहुंचते हैं, यह लिखना। राजकुमारी बहन को तो पूरा डर है कि ठीक नहीं पहुंचेंगे। अगर ठीक पहुंच जावेंगे तो खान साहब को सेब, नाशपाती भाप से सिजा कर व मलीदा बना कर खिलाना। तुम तो खाओगी ही। इन पर तुम्हारी पूरी मालकी है (जनरल भंडार की नहीं है)। घूमने जा रहा हूं।

जमनालाल का आशीर्वा

पुनश्च —

तुझे तो गवारपाठे का पाक बापू खिलाते हैं। मुझे पेट भर कर रोटी भी नहीं देते। (मिठाई, खटाई की तो बात ही कहां ?) क्या यह इन्साफ है ? महेश खूब अच्छा होगा।

——ज० ब०

· १३१

चि० मदू,

शिमला वेस्ट, २४-७-४

मेरा पत्र मिल गया होगा। मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है। जुकाम व ज्वर तो चला गया। कल से मेरा घूमना-फिरना फिर चालू हो गया है। अब यहां की आबहवा की आदत पड़ती जा रही है।

पू० बापू से कह देना कि उनका —७ का पत्र मिल गया है।

पूज्य बहन राजकुमारी जी व उनके परिवार के प्रेम-व्यवहार से ठीक लाभ उठाने का प्रयत्न कर रहा हू। मैंने अपने को राजकुमारी बहन के सुपुर्द कर रखा है। वह जो देती है, खाता हू। भूख ज्यादा लगती है तो प्रेम के साथ मीठी लड़ाई लड़ लेता हू। उनके भाई कर्नल भी मेरे लिए बहन से लड़ते रहते है कि वह मुझे भूखा क्यों मारती है? लड़ने में अच्छा आनंद आता है। बहन खान-पान का बापू के लिखे मुताबिक पूरा ख्याल रखती है। मैं भी ख्याल तो रखता ही हू, पर थोड़ा, क्योंकि दो जने चिंता क्या करें? जब एक समझदार नर्स अपने कर्तव्य का ठीक पालन करती हो तब फिर मरीज को चिंता रखने की क्या जरूरत? उसे तो फिर नर्स व डाक्टर से विनोद की लड़ाई लड़ने में ही आनंद आना चाहिए। यानी खाने-पीने की फिकर को भूलना चाहिए। यहां फल व साग तो ताजे व अच्छे आते ही है। यहां के बाग में मैं भी निकलते रहते है।

जमनालाल का आशीर्वाद

१३२

शिमला २७-८-४१

चि० मदू,

तुम्हारा २१-७ का पत्र कल मिला व २५-७ का बहन के पत्र के साथ आज मिला। बापू का पत्र भी मिला। बापू को मैंने उत्तर बहन के पत्र में ही लिख भेजा है। तुम बापू से मांग कर पढ़ लेना, जिससे मेरी इच्छा मालूम हो जायगी।

तुम्हारी सूचना अक्षरों के बारे में बिलकुल ठीक है। यहां मसविदा लिखा जाता है, इसलिए अक्षर थोड़े सुधर जाने की आशा है।

पू० राजकुमारी बहन मेरे खान-पान घूमने-फिरने, मुलाकात आराम आदि का पूरा ख्याल रखती है। मुझे यहां घर से ज्यादा आराम [illegible] व प्रेम का वातावरण मिल रहा है। इतना होते हुए भी यहां पर ज्यादा [illegible] समय तक ठहरने का उत्साह नहीं हो सकता। [illegible]

अपना काम बहुत अच्छी तरह [illegible]

कुछ परिवर्तन से [illegible]

से पूछ कर बीच-बीच मे थोडा-सा परिवर्तन जरूर कर लिया करो। तुम्हारी मा राजी रहती है, तुम्हारा उससे ठीक जम रहा है, यह सब जानकर मुझे सुख मिल रहा है। परमात्मा ने चाहा तो थोडी उदारता और बढ जायगी, जैसी कि आशा है, तो सबो को सतोष हो जायगा। उनमें गुण तो बहुत ज्यादा है, परंतु हम लोग पूरी तरह से समझ नही पाये हैं। तुम कोई व्यावहारिक रास्ता ढूढ निकालो, जिससे उसे खूब आनद व सुख-सतोष मिल सके। मेरे मन मे यह विचार तो प्राय आते रहते हैं व चिंता भी बनी रहती है। परतु कोई राजमार्ग अभी तक मिल नही पाया। इसका मुख्य कारण तो यह है कि मेरे विचार करने की पद्धति व उसके विचार करने की पद्धति मे बहुत ज्यादा फरक है। अब यह फरक तो शायद पू० बापू ही निकाल सकेंगे। तुम भी मदद कर सकोगी। मुझे तो अपनी कमजोरियो के विचार ही सताते रहते है। इसलिए मैं एक तरह से खुद ही इस मानसिक बीमारी की हालत मे रहने के कारण (मुझे खुद के लिए ज्यादा प्रेम, उदारता व आनद के वातावरण की जरूरत रहती है) ज्यादा नही कर पाता। तो भी मुझे ही अधिक प्रयत्न करना चाहिए। उनसे अधिक उदारता की आशा रखना, शायद मेरे लिए उचित भी न हो। हा एक बात अगर वह कर सके, यानी पूज्य बापू पर पूरी श्रद्धा हृदय से बढा सके तो मुझे आशा है, उसे खूब लाभ पहुचेगा। बीच-बीच मे बापू से उसे बात करने का मौका मिलता रहेगा तो ठीक रहेगा। तुम भी इस बात का ख्याल रखना। मैंने भी बापू को सूचित तो कर दिया है। बापू पर बोझ न पडते हुए उनके अनुभवो से हम लोगो को लाभ अवश्य उठाना चाहिए। बापू से ज्यादा शुद्ध प्रेम और कहा से मिलनेवाला है ?

पूज्य राजकुमारी बहन आज देहरादून जा रही है। परसो वापस आ जायगी। राजकुमारी बहन के परिवार का परिचय तुम्हे अलग से भेज रहा हू। बलवतसिह से कह देना कि वह उस जमीन को, जो वर्धा के रास्ते मे मुझे दिखाई थी, जरूर ले लें।

डा० दास व महेश को प्रणाम व प्यार कहना। महेश का क्या प्रयोग चल रहा है ? कब तक चलेगा ? तुम उससे खूब बाते सुना करो।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३३ :

शिमला वेस्ट, ३-८-४१

चि० मदू,

तुम्हारे ता० २७-७ व ३०-७ के पत्र समय पर मिल गये थे। फल यहा से भेजे थे। वह नबीबक्ष ही लाया था। बहन राजकुमारी की आज्ञानुसार ही उसने पार्सल किया था।

क्या दीमक की रानी मिल गई? कुटिया कुछ बडी व ढग की गुलाटीजी बना सके तो कह देखना। वैसे तो जैसी बापू की इच्छा होगी वैसी बनेगी।

डा० दास को बापूजी ने इजाजत नही दी, सो उन्होने सोच कर ही ऐसा किया होगा। डा० दास के खाने-पीने व आराम का ख्याल रखना। उनके रोष का ज्यादा विचार नही करना। सरल हृदय सज्जन पुरुष हैं। मेरा प्रणाम कहना। उनका बच्चा (नेमि) खुश होगा।

तुम्हारी मा को बापूजी चिढाते है। कहते है कि 'बछडे के पीछे गाय की तरह ही सदा साथ रहना!' सो ठीक है। परन्तु बछडा बडा होने पर अपनी मा को भूल जाता है और मा भी बछडे को भूल जाती है, सो ऐसा दोनो मे न होने पाय, इसकी सभाल रखना।

मीरा बहन नई कुटिया मे आ गई। तुम दिन भर उनके पास रही, खाया, पकाया, सो ठीक। उन्हे इस प्रकार सतोष व शाति मिलती है या नही यह भी देख लिया करना। मीरा बहन की याद तो मुझे भी आया ही करती है। तुम्हारी जब कभी इच्छा हो तो आशा बहन के पास भी, जा-आ सकती हो। कमल (खाडीकर) तो वहा होगी ही। उसे बुला लिया करो या तुम ही चली जाया करो। जिस प्रकार तुम्हारा मन प्रसन्न रहे, वैसा सोचती व करती रहो।

पू० बापूजी से कहना कि उनका ३०-७ का पत्र मिल गया है। अभी तो मै यहा पर हू ही। आगे बहन की सलाह से कार्यक्रम बनाने की इच्छा होगी, तब बनाऊगा।

यहा पर भी कैद मे तो हू ही। यह कैद अमीरी या 'स्टेट गेस्ट' की तरह की है।

मेरा जहातक वश चलता है, वहा तक बहन को व दूसरो को भी

मेरी चिंता व बोझ कम मालूम पडे, इसकी पूरी कोशिश रखता हूं। उसीमें मुझे आनद व सुख मिल सकता है। इसमे बहुत हद तक तो सफल हो सका हू। अगर पूरा सफल हो गया तो शायद ज्यादा समय भी रह सकूंगा।

बापू से कहना कि अगर देहरादून जाना हुआ और माता आनदमयी से सुगमता के साथ मिलना हो सका, तो ख्याल रखूगा।

गुलाबबाई ने राखी भेजी है। वह बहन राजकुमारी से बधवा लूगा।

चि० शाता को यहा से सब्जी भेजी थी। थोडी तुम्हे भी मिली होगी।

महेश को खर्च के लिए जो चाहिए, सो देना। उसका हिसाब अलग लिख रखना।

जमनालाल का आशीर्वाद

१३४

शिमला वेस्ट, ५-८-४१

चि० मदू,

मेरा पत्र मिल गया होगा। तुम्हारा २-८ का पत्र मिला।

तिलक जयती पर बापू का खादी विद्यालय का उद्घाटन का भाषण, स्पष्ट (हृदय की आवाज) था। अखबार मे जितना आया है उतना पढा है। बाकी 'खादी जगत' या 'सर्वोदय' मे देखने को मिल जायगा।

खान साहब के निमत्रण का उपयोग तो एक बार करने की इच्छा जरूर है।

चि० तारा का स्वास्थ्य कैसा है? वजन बढ़ा होगा? कितना है? आगे का क्या प्रोग्राम है? उसके पास कौन रहता है?

कल बहुत करके तुम्हे आडुओ का पार्सल करेंगे। ता० ९ को तलाश करवा लेना। यहा रुपये सेर का भाव आजकल हो रहा है।

पू० राजकुमारी बहन का देहरादून से आने के बाद स्वास्थ्य थोडा नरम रहता है। पू० बापू से विनोद करना कि मुझे बीमार समझ कर उनकी देख-रेख मे भेजा है। परंतु बीमार तो सचमुच वह हैं। मुझे उन्हें हसाना पड़ता है। उनके दिल-बहलाव के लिए भी ताश, शतरज व अनेक तरह के खेल प्राय. रोज ख[illegible] खेलना पड़ता है। वह शायद समझती

हैं कि मेरे मन-बहलाव के लिए है। यह भी ठीक हो सकता है। हा, यह बात जरूर है कि उनको हराने मे बाकी के हम सबो को अच्छा मजा आता है, क्योंकि खेलने मे वह बहुत होशियार—'एक्सपर्ट' समझी जाती हैं।

आज अभी डा० बतरा के घर जा रहा हू। यहा से करीब छह मील है। रिक्शा पर बैठने का हुक्म (आर्डर) मिला है। कुछ डर दूर हो जायगा।

चि० राम का कार्यक्रम लिखना। उसके लिए दो-चार आडू रख छोड़ना।

राम से मिलने की तो मेरे मन मे भी इच्छा होती थी। जेल जाने पर मिल लूगा।

बहन राजकुमारीजी ने तुम्हें प्रेम आशीर्वाद लिखवाया हैं। सावित्री को भी। उन्होंने कहा है कि मैंने उनके बारे मे जो लिखा, उसे तुम सही मत मानना।

जमनालाल का आशीर्वाद

१३५

शिमला वेस्ट, ९-८-४१

चि० मदू,

मेरे पत्र मिल गए होंगे।

कल राखी ठीक से हो गई। पू० बहन राजकुमारी ने अपने हाथ के सूत की सुन्दर राखी बनाकर बाधी। गुलाबबाई, दुर्गाबाई डालमिया व सौभाग्यवती दानी की राखी पहुच गई थी। एक बार तो सबो को ही उनसे बधवा ली थी। राखी बाधने के बाद ही गुरुदेव की मृत्यु के समाचार मिले। दुख सभी को होना स्वाभाविक था। तार वगैरा भेजा।

— चि० राहुल ज्यादा कहा रहता है? मेरी ओर से ९ बार चखना व धीरे से एक थप्पड़ मारना या कान पकड़ना। कान तो सावित्री का भी पकड़ सकती हो।

श्री किशोरलालभाई का पत्र उन्हें दे देना। बापू, बा को प्रणाम।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३६ :

शिमला वेस्ट, १४-८-४१

चि० मदू,

चि० राम का पत्र तो मुझे मिला था, परंतु उसे मेरा पत्र मिला या नही, उसने यह नही लिखा। चि० राम की गिरफ्तारी की खबर तो अखबारो मे पढ़ी है। सजा का हाल अभी मालूम नही हुआ है।

मैं कल यहा से देहरादून जा रहा हू। वहा से संभव हुआ तो हरिद्वार होकर नैनीताल जाऊगा। वहा से एक बार वर्धा आने का ही विचार कर रहा हू। वर्धा आने के बाद सीकर जाने का, बापूजी की आज्ञा से, निश्चय होगा।

श्रीकिशोरलालभाई से कह देना कि मेरे पत्र के जवाब मे उनका पत्र मिला है। मैं वहा आने पर उनसे बात करूगा।

कल यहा से चलते समय थोडा कष्ट मालूम होगा। एक प्रकार से इस घर से मोह-सा हो गया है। मेरे प्रति भी सब घरवालो का मोह दीखता है। सभी लोग कह रहे है कि मैं अभी न जाऊ। परतु मैंने अपने दिल में एक महीने का विचार किया था, वह प्राय. पूरा हो जायगा।

जवाहरलालजी से मिलने की तारीख ५-१० दिन आगे की मिलती तो शायद उतने रोज और ठहर जाता। डेढ़ सौ रुपये पूज्य बापूजी को देने के लिए राजकुमारी बहन की भतीजी कुमारी बेरिल ने दिये है, सो मेरे हस्ते खाते मे नामे लिखवा कर दूकान से मगवा लेना व बापूजी को दे देना। और बापू से उनकी पहुच याद रख कर यहा भिजवा देना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३७ :

देहरादून, १८-८-४१

चि० मदू,

मैं परसो सुबह यहा पहुच गया था। भाई जवाहरलालजी ने श्री काशीनारायणजी तनखा के पुत्र श्रीराजेन्द्रनारायण (रज्जी) तनखा

का स्टेशन भिजवा दिया था। मैं उनके घर ही ठहरा हू। भले सज्जन पुरुष है। कश्मीरी ब्राह्मण है। ठेके का व्यवसाय करते हैं। श्रीकमला नेहरू उनके घर ही ठहरा करती थी। जवाहरलालजी से खूब अच्छी तरह से मिलना, बातचीत, विनोद वगैरा हुआ। फलाहार भी हुआ। उनका स्वास्थ्य उत्तम है। श्रीरणजीत पडित का स्वास्थ्य साधारणत ठीक है। चिंता की कोई बात नहीं है।

परसों हम यहा से श्रीमाता आनदमयीजी, जो कमला नेहरू की गुरु है और यहा से ५ मील दूर रायपुर नाम के देहात मे रहती है, से मिल आये। पूज्य बापू ने इनसे मिलने के लिए लिखा था। करीब दो घटे उनके पास रहा। उनसे स्वामी बातचीत हुई। मुझे उनके पास बैठ कर बातचीत करने से सतोष मिला। करीब आध घटा एकात मे भी बाते हुई। मैंने उनसे कहा, 'मातृवत् परदारेषु, परद्रव्येषु लोष्ठवत्। आत्मवत् सर्वभूतेषु य पश्यति स पश्यति।' इस प्रकार की मेरी भावना इस जन्म मे जिस प्रकार हो सके, वह मार्ग बतावे। उन्होंने प्रेमपूर्वक कुछ बाते बताई है। मैं आज फिर उनके पास जा रहा हू। वहा एक दिन व रात रहने का विचार है। वहा स्थान आदि देख आऊगा। बाद मे पूज्य बापू की इजाजत लेकर कुछ समय वहा और रहने की भी इच्छा हो रही है। वहा का वातावरण सात्विक दिखाई देता है।

कल मसूरी जाकर चि० इन्दू से मिल आया था। जवाहरलालजी ने भी कहा था। मेरी भी इच्छा थी। उपाध्याय वहा पर है ही। यहा से श्रीरजी तनखा मेरे साथ गये थे। १६॥ रुपयो की जगह छह रुपये मे आना-जाना, सफर मोटर-बस द्वारा किया था। इन्दू ने मेरे साथ अच्छा प्रेम का व्यवहार किया।

कल हरिद्वार होते हुए गुरुवार को ११ बजे ... के पास पहुचने की इच्छा है। पूज्य बापू को यह पत्र ... मा को भी।

मे ही निवृत्त हो लेता हू। छोटा फावड़ा-कुदाली साथ रखता हू। उससे जगह ठीक कर लेता हू। यहा से लगभग तीन फर्लांग पर सुंदर झरना व रमणीक स्थान है। जल स्वच्छ व पीने मे उत्तम है। वहा मुह-हाथ धोकर झरने के नीचे ठडे जल मे स्नान कर लेता हू। लौट कर ८ बजे के करीब नाश्ता करता हू। फिर अढाई घटे मा के पास बैठकर जो चर्चा, विचार-विनिमय होता है, वह सुनता रहता हू। खूब शाति मिलती है। साढे ग्यारह के करीब भोजन कर लेता हू। अनाज एक बार ही लेता हू। यहा आने के बाद दो-तीन बार थोडी दाल मिली थी। अभी ज्यादा स्वराक साग, दूध, फल की ही चालू है। भोजन के बाद थोड़ा आराम। फिर कभी-कभी एकाध पत्र लिखता हू। फिर दो बजे करीब झरने पर जाकर निपटना हू। वापस आकर मा के पास एकाध घटा एकान्त मे विचार-विनिमय शका-समाधान होता है। बाद मे चर्खा यहा रोज कातता हू। चर्खे का ठीक प्रचार होने की सभावना है। फिर हरिकीर्तन मे बैठता हू। यहा मौन भी रखा जाता है। सब ठीक चल रहा है। स्थान रमणीक व सुदर है। अगर कोई जमीन मिल जाय तो लेने का विचार कर रहा हू। स्थान तो तपोभूमि जैसा मालूम देता है।

पूज्य बापू को इसमे से जो समाचार सुनाना चाहो सुना देना। ओम् नैनीताल आने की जल्दी कर रही है। मै अभी यहीं हू। जवाहरलालजी से भी दूसरी बार मिलने की सभावना है।

जमनालाल का आशीर्वाद

१४०

देहरादून, २६-८-४१

चि० मदू,

तुम्हारा २२-८ का पत्र मिला। बापू के पत्र व तार भी मिले। पू० बापूजी के नाम का पत्र इसके साथ भेज रहा हू। तुम पढकर उन्हें पढा देना। पत्र अपने पास ही रख छोडना। यहा के फोटो तो अब मै आऊगा तब बहुत से साथ मे लाऊगा। वे मैने तुम्हारे लिए सग्रह किये है। ओम् ने न चुराये तो तुम्हारे पास पहुच ही जायगे।

श्रीखुर्शेद बहन सेवाग्राम कबतक रहनेवाली है ? चि० प्रभावती का पत्र उसे दे देना ।

महेश का पत्र मिल गया है । उसे कह देना ता० २१ सितंबर तक खूब चंगा हो जाय । फिर मेरे साथ रहना पड़ेगा । जेल या बाहर । बापू से कहना कि इससे लिखा-पढ़ी का जवाबदारी का काम लिया करें ।

जमनालाल का आशीर्वाद

१४१ : कनखल, १-९-४१

चि० मदू,

पूज्य बापूजी का तार कल मिला था । पूज्य आनंदमयी माताजी का पहले ही दिल्ली होकर विंध्याचल जाने का निश्चय हो गया था, इसलिए इस बार तो वह नहीं आ सकेंगी । कुछ समय बाद शायद आ जावेंगी । इनका प्रोग्राम अनिश्चित-सा रहा करता है ।

बापू का तार आजाना एक तरह से ठीक ही रहा । आज मैं नैनीताल जा रहा हूं । माताजी दिल्ली जा रही हैं । नैनीताल से मैं अपना आगे का प्रोग्राम लिख भेजूंगा ।

परसों मैंने यहां पर अपना वजन किया था । १५८ रतल निकला । यानी वर्धा छोड़ते समय व शिमला छोड़ते समय जो वजन था उससे करीब तीन रतल कम ही हुआ । इससे मुझे संतोष ही रहा ।

यहां से (पंजाब में) रामप्यारी बहन, जो एम० ए० तक पढ़ी हुई है, कुमारी है, महिलाश्रम देखने जा रही है । यह अच्छे घराने की लड़की व त्यागवृत्तिवाली बहन दीखती है । इनका मन लग गया तो वर्धा रहने का स्थायी विचार करेंगी । तुम इनसे ठीक बातचीत करना । तुम्हारे पास स्थान हो तो एक-दो रोज रख लेना । इन्हें भजन के समय एकान्त जगह की जरूरत रहती है । इसका ध्यान रखना ।

पूज्य बापूजी से भी इन्हें मिला देना । श्रीमती रामेश्वरीजी (देहगांव) ने इनका परिचय कराया है ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४२ :

अलमोडा, १०-९-४१

चि० मदू,

मैं, उमा और राजनारायण नैनीताल से ७ तारीख को सुबह निकलकर कोसानी दो रात रहे। यह स्थान चनोदा गाधी-आश्रम से तीन मील आगे है। बहुत अच्छा स्थान मालूम हुआ। पूज्य बापूजी यहा ८-१० रोज रहे थे। सुना है उन्हे यह स्थान पसद आया था। इस स्थान का वर्णन सुनना चाहो तो श्रीकृष्णदास गांधी से सुन लेना। हम सबो को भी पसद आया है। ज्यादा दिन रहने का मन हुआ था।

यहा अल्मोडा मे कल श्रीगोविदवल्लभ पत से मुलाकात हुई। और मित्रों से भी। सब आनद मे है। देर तक बातचीत व विनोद होता रहा। करीब दो महीने मे ये सब छूट जानेवाले है। यहा के डिप्टी कलक्टर श्री धर्मवीर, आई० सी० एस०, सज्जन पुरुष है। राजा ज्वालाप्रसादजी के पुत्र हैं। सर गगारामवालो की पोती दयादेवी इनकी स्त्री है। मेरे परिचित है। आज का भोजन इनके यहीं है। डि०क० की हैसियत से नही, मित्रता के नाते।

आज रणजीत पडित के बागीचे जाने की इच्छा थी। परन्तु साथियो की कमजोरी के कारण जाना नही हो पाया। कल सुबह यहा से निकल कर रानीखेत होते हुए शाम को नैनीताल पहुच जाऊगा। वहा ता० १६ तक तो रहने का विचार है।

पू० बापूजी से मिलने पर खान-पान के बधन थोडे ढीले करने की इच्छा है, अन्यथा सफर में जरा कष्ट होता है। खर्च भी ज्यादा आता है। मौका लगे तो मेरे पत्र का साराश पू० बापू से कह देना।

बापू जेल नही भेजेगे तो नेपाल जाने का विचार कर रहा हू। पैदल-भ्रमण का उत्साह व इच्छा बढ़ती जा रही है। रेल व मोटर की यात्रा का उत्साह कम होता जा रहा है। कैलास, मानसरोवर भी जाने का मन होता है। देखे क्या होनेवाला है।

जमनालाल का आशीर्वाद

१४३

बम्बई, ८-७-३३

काकाजी,

सादर सविनय प्रणाम ।

अभी आपका भेजा हुआ कमलनयन के नाम का तार मिला । तार मैंने मा को सुना दिया है । अभी तो कमल के सामान की यारी हो रही है । उसका मुख्य सामान तो करीब सब तैयार हो गया है । थोडा-बहुत और रहा है ।

वर्धा से आते हुए रेल मे कमलनयन की बातो मे दिन बहुत आनंद व मजे मे कट गया । मा को तो खूब हसाता रहा । पू० केशवदेवजी लेने आ गए थे । उनके आग्रह से माटुगा मे ही ठहरे । कमल तो नहा-धोकर दुकान पर आ गया था । हम आज सुबह यहा दुकान पर ही आ गए हैं ।

अभी पू० राजेन्द्रबाबू, वल्लभभाई, मणिबेन और मीराबेन, यहा कमल से मिलने आये थे । आधे घटे के करीब बैठे । हसी-मजाक करते रहे । वल्लभभाई पू० मा को कहते थे कि क्यो लडके को बिगाडने भेज रही हो । अगर थोडा इधर-उधर घूमधाम कर ३-४ महीने मे आ जावे तो कोई हरकत नहीं, पर यदि वहा रहेगा तो फिर घर के काम का नहीं रहेगा, निकम्मा हो जायगा । यहाँ दुकान पर रखो और व्यापार का काम सिखाओ । कमल से भी यही कहते रहे, पर वह थोडे ही अपनी बात मे अब हटनेवाला है ।

अभी तो हम सब जल्दी मे हैं । पर कल कमल के जाने के बाद तो बहुत सूना-सूना-सा लगेगा ।

आपकी बरनाता
ओम्

: १४४ :

मोरासागर (जयपुर जेल)
होली, ५-३-३९

चि० उमा,

तुम्हारा बिना तारीख का पत्र मिला। तुम अभ्यास ठीक करती हो यह मालूम हुआ। तुमने लिखा कि अबके बेडा पार है, तो तुम्हारा तो सदैव ही बेडा पार रहता है। और मेरा आशीर्वाद तो तुम्हारी भलाई में रहता ही है। भलाई परीक्षा पास होने में है या नापास होने में, इसका अभी पूरी तौर से समाधानकारक फैसला मैं नहीं कर पाया हूं। 'जयपुर स्टेट प्रिजनर' की तो कई बातें हास्य-विनोद से भरी हुई हैं। तुम्हारे भाग्य में वह आनन्द नहीं है। तुम्हारी परीक्षा समाप्त हो जाने पर लंबा पत्र लिखना। टहू (गुणाजी) राजी होगी।

उषा आई है क्या? बजाजवाडी के मालिकों को (रहनेवालों को) मेरा प्रणाम, वन्देमातरम्, आशीर्वाद वगैरे कहना। कभी-कभी बिना इच्छा ही सबोंकी याद तो आ ही जाती है। खास कर 'घनचक्कर क्लब'[1] वालों की। श्रीकिशोरलालभाई, गोमती बहन के मोटे होने की धारो-बहुत भी आशा है क्या? कम-से-कम अगली होली तक 'ज्योतिष' कर या किसी अच्छे ज्योतिषी से पूछकर लिखना।

तुम्हारे मास्टरों से, पूज्य काका साहब आदि से मेरी ओर से हर्ष मनाना।

---

[1] श्री जमनालालजी के छोटे पुत्र रामकृष्ण व उसके विद्यार्थी साथियों ने मिलकर बजाजवाड़ी में खेलने के लिए एक क्लब स्थापित किया था। उसका नाम उन्होंने 'घनचक्कर क्लब' रखा। शुरू शुरू में तो उसमें वालीबाल, फुटबाल, हाकी, क्रिकेट आदि खेल हुआ करते थे। फिर धीरे-धीरे राजनैतिक नेताओं के भाषण आदि भी होने लगे। इन सब नेताओं की प्रेरणा से धीरे धीरे वहां सूत-कताई और पास-पड़ोस के गांवों में जाकर ग्राम-सफाई, शिक्षा आदि का काम भी उसके सदस्यों ने जारी किया। व्यक्तिगत सत्याग्रह और सन १९४२ के 'भारत छोड़ो' आंदोलन में इसके कई सदस्यों ने हिस्सा लिया और कई जेल भी गये।

चि० सेवू, बिच्छू व गौतम को हलके से थप्पड़ लगाना। खूब ऊधम मचाते होंगे ? तुमसे ज्यादा शरारती कौन होगा ?

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४५ :

मोरासागर, १५-३-३९

चि० उमा,

तुम तो परीक्षा की तैयारी मे मस्त होगी। तुम्हारी मा के दो पत्र ता० ७ व ८ के विट्ठल के पत्र मे भेजे हुए, व चि० कमला का ७-३ का पत्र अलग से मिले। इस समय तुम्हारी मा कहा है ? मालूम न होने से तुम्हें ही पत्र लिख रहा हू। मेरा मन व स्वास्थ्य ठीक है, कमला से कह देना। उसे तो डर है कि मेरा समय अकेले मे कैसे कटता है ? और मेरी कठिनाई यह है कि मुझे समय बहुत कम मिलता है। दिन व रात बहुत अच्छी तरह बीत जाते है। इसके कारण कभी-कभी तो गुस्सा भी आता है कि दिन क्यो इतने जल्दी बीतते है। क्योंकि आजकल ११ तारीख से रोज अखबार मिल जाते है। दूसरे 'सर्वोदय' व किशोरलालभाई की अन्य पुस्तके पढता रहता हू। वे बहुत विचार करने योग्य होती हैं, जिन्हें मैं पूरा ही नही कर पा रहा हू। इन दिनो न तो शतरज खेलने का समय मिलता है न उर्दू पढने के लिए। सोने के घटे भी कम कर दिए हैं। पहले ५-६ के बीच उठता था, अब ४-५ के बीच। मुझे तो अब इससे भी ज्यादा एकात मे रहने की इच्छा होती है। बोलना बहुत कम कर रखा है। कई बार तुलसी रामायण चर्खा कातते ही सुननी पडती है। मानसिक आनद का सुख जो यहा मिला है वह इन वर्षों मे तो मुझे कभी मिला हो नही। अब यही डर लगता है कि यहा शायद ज्यादा दिन रहने को नही मिलेगा। कम-से-कम बारह महीने मिल जाते तो अच्छी तरह से शाति मिल जाना सभव मालूम देता था। तुम्हारी मा वगैरे को यह सूचना भेज देना। विट्ठल राजी है। उसे तुम्हारी मा का पत्र मिल गया है।

जमनालाल का आशीर्वाद

१४६

मोरासागर, २६-४-३९

चि० उमा,

तुम्हारा १७-४ का पत्र मिल गया था। कमल से तुम्हारे बारे में थोड़ी बात हो सकी। जब मैं स्वतंत्र होऊंगा और कुछ समय तक तुम मेरे साथ रहोगी, तभी अधिक विचार व खुलासा हो सकेगा।

तुम कोई जवाबदारी का काम करोगी तो मुझे तो खूब खुशी व सुख मिलेगा। मुझे तो आशा है कि तुम यह जरूर कर सकोगी। तुम्हारे कार्य का कोई ध्येय निश्चित हो जाय तो फिर जितना समय तय हो उस मुताबिक शिक्षण व अनुभव की व्यवस्था करनी ठीक रहेगी। मैं तुम्हारे विचार के लिए कुछ सूचनाएं देता हूं।

१. किसी संस्था—जैसे महिलाश्रम वगैरा (स्त्री-जाति के उपयोगी) का जवाबदारी का कार्य करना।

२. मेरे साथ रह कर मेरी सेक्रेटरी व पत्र-व्यवहार आदि का कार्य करना।

३ ग्राम्य-जीवन का कार्य करना हो तो आशा बहन या प्रेमा बहन कंटक के पास या विनोबा के पास रहकर कार्य करना व सीखना।

४ अच्छा साथी मिल जाय तो विवाह करके दोनों मिलकर आदर्श गृहस्थ-जीवन के उपयोगी बनना।

फिलहाल तो मेरी राय यही थी कि अगर गर्मियों से न घबराती हो तो कलकत्ते से वापस आने के बाद तुम व शांताबाई जयपुर राज्य में घूम कर स्त्री-जाति की स्थिति व यहां के रीति-रिवाज आदि से वाकिफ हो जाओ। वनस्थली कुछ दिन रहकर बाद में जयपुर, सीकर, रामगढ़ वगैरा में या लासल में गुलाबबाई के पास कुछ समय रहो।

मेरा यहां सब ठीक चल रहा है। श्रीआशा बहन व तुम्हारे मास्टरजी आदि को वंदेमातरम् कहना। इन्दु अपने घर गई होगी। कलकत्ते गई हो तो वहां के पूरे समाचार लिखना।

जमनालाल का आशीर्वाद

. १४७ .

महिलाश्रम, वर्धा, ८-१२-३९

पू० काकाजी,

सादर प्रणाम ।

आपका ता० २ का खत और पूज्य किशोरलालभाई के खत की नकल मिली । रामकृष्ण के अभी तक के पर्चे ठीक हुए है । मेरा अभ्यास ठीक चल रहा है । मेरी परीक्षा मार्च की पहली तारीख को या दूसरे सप्ताह से शुरू होगी । निश्चित तारीख मालूम होते ही लिखूगी ।

शादी तो अब कभी-न-कभी करना ही है । तब वह इस साल ही करना उचित होगा । पर परीक्षा के पहले करना भी नही है । मार्च के आ या अप्रैल के शुरू मे ठीक रहेगा, ऐसा मेरा ख्याल है । फिर मार्च मे काग्रेस की तारीखो का ख्याल तो रखना ही होगा । परीक्षा पूरी होगई तो मै भी काग्रेस में जाऊगी न ? तीन साल से काग्रेस में जा नही सकी । परीक्षा के कारण काग्रेस छोडनी पडी तो कोई बात नही, लेकिन शादी, जो कभी होने ही वाली है, (और कम से कम मेरी शादी जो मेरे बगैर हो ही नही सकती) के लिए इतना बड़ा त्याग नही किया जा सकता । वह अनेच्छिक भी होगा । आशा है आप भी इससे सहमत होगे ।

दूसरे इसमे एक विचारणीय बात और है । अब श्रीप्रेमनारायणजी का सबध हो गया है । सगाई मैंने पहले कर ली तो अब शादी का 'फर्स्ट चान्स' तो हमारी भावी भाभी को ही देना चाहिए। उस हालत मे मेरे लाड-प्यार अधिक होगे, वरना नये होने पर भी पुराना कहलाना पड़ेगा। और बाद में जाने पर मुझे जाते ही एक समान स्थिति वाली सहेली मिल जायगी । ऐसी कई बाते हैं । इसमे यदि कोई गैर-फायदा है तो इतना ही कि मुझे वह शादी देखने को नही मिलेगी । सो अधिक लाड-प्यार करवाने हो तो उसके लिए इतना त्याग करना ही चाहिए ।

वहा, कमल, राहुल, मुन्नी के आ जाने से खूब चहल-पहल रहती होगी । राहुल ने आरंभ दोस्ती कर ली है क्या ? बहुत तंग करता होगा । उसे प्यार । पू० मा तो अपने पोते-पोती मे ही बावली होगी । उन्हें तो राहुल खूब सताता होगा । उसे मेरे प्रणाम ! कमल, भाभी, मदालसा,

र और ब्रिजमसमाज को भी प्रणाम ।
आशाबेन के लड़के आनद की दुखद खबर मिली होगी । यह एक
अकस्मात घटना हो गई । २॥ बजे तक लडका अच्छी तरह से खेल
। फिर एकदम आया और बोला कि मा पेट दुखता है । उसे लिटाया
फिर एक उल्टी हुई और कपकपी आकर १५-२० मिनट के भीतर

ही थे । इससे उसे दूसरे दिन सुबह तक रखा । आशाबेन के घर के
वाली टेकडी पर उसकी दाह-क्रिया हुई । पूज्य बापू ने अपने हाथ से
सत्कार किया । वर्धा से अपने सब लोग पहुच गए थे । एन्ड्रूज
, डा० जाकिर हुसैन और महादेवभाई ने अलग-अलग प्रार्थना
वह भाग्यवान बच्चा सब धर्मों की प्रार्थनाओं के बीच विदा हुआ ।
आनद की मृत्यु का कारण बाद मे मालूम हुआ । परसों सुबह ही
ा दाह किया था । उसी दिन शाम को आशाबेन को थोडा बुखार
या । उन्होने कुनैन की गोलियों की शीशी ढूढी । वह बाहर एकदम
ी पड़ी मिली । तब आशाबेन की समझ में आया कि आनन्द की मृत्यु
की गोलिया खाने से ही हुई । आनद ने २॥ बजे आशाबेन से पूछा
कि मा इनमे से गोलिया खाऊ । उन्होने कहा कि तुम्हे बुखार थोड़े ही
तुम मत खाओ । फिर वे अपने काम में लग गई । उधर उसने बाहर
दर शीशी की सारी गोलिया, जो करीब २५-३० थीं, खा डाली ।
शुगर कोटेड थी । बस उसीके १५ मिनट बाद वह चला गया । ईश्वर
यही इच्छा रही होगी । मदालसा को आप उचित समझे तो यह पत्र
ा दें । बस अब खतम करती हू । नीद आती है । पू० दादीजी यहा कल
वेगी । पू० मालाबाई आ गई हों तो उन्हे प्रणाम ।

आपकी नटखट पुत्री,
ओम्

रामकृष्ण बजाज के नाम—

: १४८ :

नासिक रोड सेंट्रल जेल,
२०-८-३०

चि० रामकृष्ण,

तुम्हारा पत्र पढ़कर बहुत खुशी हुई। तुमने जोड, बाकी, गुणा सीख लिया यह बहुत ठीक किया। अक्षर खूब सुंदर जमाना, स्वच्छता सीखना, प्रेम करना व सत्य बोलना। सेवावृत्ति खूब बढ़े ऐसी आदत अभी से डालना। तुमको बड़े होकर समाज की व देश की खूब सेवा करनी है। चि० बालकृष्ण (लाट साहब) से लडाई न करके प्रेम के साथ खेलना व रहना। कराची मे कितनी अच्छी बातें सीख कर आते हो उस पर से तुम्हारी व चि० कमला और रामेश्वरप्रसाद की भी परीक्षा हो जायगी। मैं खूब आनद मे हूं।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४९ :

धुलिया जेल,
२३-९-३२

चि० रामकृष्ण,

तुमने उपवास किया, पानी भी नही पिया, यह पढकर पूज्य बापू के प्रति तुम्हारी श्रद्धा देख सुख मिला। तुम्हे तो अब पू० विनोबा या नाना से पू० बापू के विचार पूरी तौर से समझकर उस माफिक आचरण करने का पूर्णतया उद्योग करना चाहिए। उसीमे तुम्हारा कल्याण व तुम्हारे जीवन की उन्नति है। तुम्हारी मा मोहवश प्रेम, लाड-चाव, खाने-पीने आदि का करे तो तुम्हे नम्रता से उसे समझा देना चाहिए। यहा जेल मे भी ३-४ छोटे लड़के, कोई १२-१३ वर्ष के, बहुत ही उत्तम विचार व

आचरणों के देखने में आये। तुम इनसे भी उत्तम बन सकते हो, अगर तुम और तुम्हारी माता चाहें तो।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५० :

वर्धा,
१३-७-३३

चि० रामकृष्ण,

मेरा पहला पत्र मिला होगा। तुम, जैसा कि डा० मेहता और श्री-फेड डिसोजा कहते हैं, ज्यादा आराम लेने का पूरा खयाल रखना। इसीसे तुम जल्दी अच्छे होगे और डाक्टर को भी शिकायत नहीं रहेगी। नहीं तो डा० कहेंगे कि मैं क्या करू इसने आराम नहीं किया। तुम्हें डा० मेहता का सुंदर सर्टिफिकेट प्राप्त करना होगा। उससे मुझे खूब सुख मिलेगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५१ :

बिन्सर, अल्मोडा,
१७-९-३५

चि० रामकृष्ण,

तुम्हारी परीक्षा कबसे प्रारभ होगी, यह तुमने नहीं लिखा। मेरा खयाल है, शायद ता० २३ से प्रारभ होती है। परीक्षा के समय वगैर घबराये, शांति से व उत्साहपूर्वक प्रश्न-पत्रों के जवाब लिखना। जितना जानते हो उतना ही लिखना। और जो प्रश्न आसानी से हल कर सकते हो उन्हें ही पहले लिखना। आशा है, तुम सफलता प्राप्त करोगे।

मैं इस मास के अत तक वर्धा पहुच सकूगा। तुम्हारे लिए जामिया मिलिया के प्रिंसिपल डा० जाकिर हुसैन साहब ने विदेश की बहुत सारी टिकटें दी हैं। वहा आने पर दूगा। यहा सब प्रसन्न है। चि० मदालसा का वजन बढ़ा है। सब लोग तुम्हारे लिए शुभकामना भेज रहे हैं।

परीक्षा में पास होने के लोभ से कोई नकल (कापी) वगैरे करने का

खयाल बिलकुल नहीं करना। सच्चाई के साथ पास हो गए तो ठीक है। अगर पूरी तैयारी नहीं हुई हो, तो फिर पास होने में क्या लाभ है? तुम हिम्मत से और सावधानी से बगैर घबराये परीक्षा देना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५२ :

जयपुर स्टेट कैदी,
२९-५-३९

चि० राम,

तुम्हारा ता० २४-४ का पत्र आज मिला। तुम्हारी आंख अब ठीक रहती होगी। दवा करते रहना और ठंडे पानी से साफ करते रहना। चि० उमा आखिर नापास हो गई। इसमे मास्टरजी का तो बिलकुल दोष नहीं है। वह मेहनत ही नही कर पाती थी। एक तरह से तो अच्छा ही हुआ। तुम्हारी मा यहा आ गई है। मुझसे रोज मिलने की परवानगी मिली है।

श्रीछोटूभाई भट्ट को व उनकी पत्नी को मेरा वन्देमातरम् कहना। मैं इन्हें देखू तो पहचान लूं। ऐसे चेहरा ध्यान में नहीं आ रहा है। इन्हें तुम्हारे लिए ज्यादा कष्ट व खर्च करना न पडे, इसका पूरा खयाल रखना।

श्रीजवाहरमलजी महिलाश्रम मे रहकर जवाबदारी उठाने को तैयार होंगे तो मुझे खुशी ही होगी। साथ ही मेरी चिंता भी कम हो जायगी। मेरी तो इच्छा है कि [illegible]
काशीनाथजी ये तीनों [illegible]
किसी की मदद चाहें तो [illegible]
जब वे स्थायी तौर से वर्धा रहकर महिलाश्रम की ही पूरी जिम्मेदारी लेने का निश्चय कर लें। वे प्रसन्नता व उत्साहपूर्वक जो निश्चय करेंगे, वही शांति देनेवाला होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५३ :

जयपुर-स्टेट कैदी,
३-८-३९

चि० राम,

तुम्हारा पत्र पहले मिल गया था। कमल वहा पहुच ही गया है। मेहमानो का पूरा खयाल रखना। तुम व कमल मिलकर ठीक व्यवस्था कर लेना। इस मामले मे तुम्हारे व मदालसा के भरोसे ज्यादा निश्चिन्त रह सकता हू।

तुम्हारी पढाई ठीक चलती होगी। पढाई की कैसी व्यवस्था की है, यह मुझे फुरसत से लिख भेजना। कमल से कहना कि कल जयपुर महाराज ने एक बाघ मारा है, और भी मारने का विचार हो रहा है। शिकारखाने व जगलात के कारण जो भयकर हानि व कष्ट यहा के लोगो को बहुत समय से भुगतना पड रहा है, सभव है वह कम हो जाय। यहा की परिस्थिति के मेरे व सारे समाचार तो कमल ने कहे ही होगे। तुम चिता न करना। श्रीकिशोरलालभाई का पत्र पढकर उन्हे ठीक से पहुचा देना। भूल नही करना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५४ :

जयपुर,
२८-८-४०

चि० रामकृष्ण,

तुम्हारा ता० २६-८ का पत्र पढ़ा। मोटर साईकिल लेने की तुम्हारी इच्छा मालूम हुई। मेरा खयाल है कि पहले पुरानी लेकर अच्छी तरह चलाना सीख लेने पर नई लेना ठीक होगा। एकदम ५००) रु० नई मे लगाना मुझे नही जचता। फिर भी इस बारे मे तुम कमल से पूछ कर तय कर लेना।

: १५५ :

शिमला,
८-८-४१

चि० राम,

तुम्हारा स्वास्थ्य व मन ठीक होगा। उत्साह कम नहीं हुआ होगा। वजन कितना है? वापस आने की तारीख क्या निश्चित हुई है? पढ़ाई ठीक हुई होगी। तुम्हें समय मिले तो मेरे जेल से आने के बाद के वहां के हाल-चाल का एक सविस्तार पत्र मुझे लिख भेजना। तुम्हारी तो प्राय ही याद आया करती है। वैसे तो नागपुर-जेल के मित्रों की भी याद आती रहती है। मुझे तो शायद बापूजी भी अब जल्दी जेल नहीं भेजेंगे। मैं भी ज्यादा कोशिश नहीं करूंगा। जेल जाकर अधिकारियों पर बोझरूप होना मैं भी पसंद नहीं करता। तुम्हारा विशेष संबंध किन से बढ़ा?

पूज्य विनोबा से बात हुई। उन्हें तो तुम्हारे व्यवहार आदि से संतोष था। मैंने सुना कि वह तुमसे विशेष प्यार करते हैं। पढ़ाने के वास्ते समय भी खूब देते हैं। तुम सचमुच भाग्यवान हो। अन्य नवयुवकों को तुमसे ईर्ष्या होनी चाहिए।

मेरा वजन अंदाज १५४–१५५ है। मेरा स्वास्थ्य व मन ठीक है। पू० राजकुमारी बहन खूब प्रेम से संभाल रखती है। खानपान आदि का बराबर देखती रहती है। रोज रात को कुछ समय शतरंज या कार्डगेम या ब्रिज का खेल भी होता है। इस परिवार का वर्णन चि० मदू के पत्र में है। जानना चाहो तो जान लेना। मेरा अभी यहां ता० १५-८ तक तो रहना है ही। बाद में शायद देहरादून पं० जवाहरलालजी से मिलने जाऊं।

श्री गुप्ताजी, विद्यार्थीजी, पूनमचन्दजी वगैरे सब मित्र राजी होंगे। [illegible] करता रहता हूं, यह उन्हें कहना। जेल सुपरिटेंडेंट को भी।

जमनालाल का आशीर्वाद

पत्र-व्यवहार

भाग पांच : खंड दूसरा

गुरुजनों तथा
अन्य संबंधियों के साथ

श्री बच्छराजजी बजाज के नाम—

१५६

॥ श्री गणेशजी ॥

सिद्ध श्री वर्धा शुभस्थान पूज्य श्री बच्छराजजी रामधनदास से चि० जमन का चरण-स्पर्श। सदन श्री लक्ष्मीनारायणजी महाराज सदा सहाय है समाचार एक निगाह करें। आज आप मुझपर निहायत नाराज हो गए, सो कोई चिंता नहीं। श्री ठाकुरजी की मर्जी। मैं याद किया हुआ था तब आपने ऐसा कहा। पर आपका कुछ भी कसूर नहीं है। कसूर है उनका, जिन्होंने मुझे गोद दिया।

आपने कहा, नालिश करो, सो ठीक। पर मेरा आप पर कोई दावा नहीं है। आपका कमाया हुआ पैसा है। आपकी खुशी हो सो करें। मेरा आप पर कुछ अधिकार नहीं है।

आज तक मेरे बाबत या मेरे लिए जो कुछ आपका खर्च हुआ सो हुआ। आज के बाद आपसे एक छदाम कौड़ी भी मैं लूंगा नहीं और न मंगाऊंगा ही। आप अपने मन में किसी किस्म का ख्याल न करें। आपकी तरफ आज से मेरा किसी तरह का हक नहीं रहा है। श्री लक्ष्मीनारायणजी से मेरी अर्ज है कि आपका शरीर ठीक रखें और आपको अभी बीस-पचीस वर्ष तक कायम रखें। मैं जहां जाऊंगा वहां से आपके लिए ठाकुरजी से इसी प्रकार विनती करता रहूंगा। मुझसे आज तक जो कसूर हुआ वह माफ कर।

आपके मन में यह हो कि सब पैसा के साथी हैं, और यह भी पैसे के लिए सेवा करता है, सो मेरे मन में आपके पैसे की चाह बिलकुल नहीं है। और ठाकुरजी करेंगे तो आपके पैसे की अभिलाषा न तो मन में आएगी नहीं। क्योंकि मेरा तकदीर मेरे साथ है। और पैसे मेरे

पास हों भी तो मैं क्या करूंगा। मुझे तो पैसों के नजदीक रहने की बिलकुल परवा नहीं है। आपकी दया से श्री ठाकुरजी का भजन-सुमरन जो कुछ होगा सो करूंगा, जिससे इस जन्म में सुख पाऊं और अगले जन्म में भी। आप प्रसन्नचित्त रहें। किसी किस्म की फिक्र न करें। सब झूठे नाते हैं। न कोई किसी का पोता है, न कोई किसी का दादा। सब अपने-अपने सुख के साथी हैं। सब झूठा पसारा है। आप अभी तक माया-जाल में फंस रहे हैं। मैं आज से आपके उपदेश से माया-जाल से छूट गया। आगे श्री भगवान संसार से बचावें।

अपने मन में आप इस तरह कदापि न समझें कि हमारे पर नालिश-फरियाद करेगा। मैंने अपनी राजी-खुशी से टिकट लगाकर सही कर दी है कि आप पर अथवा आपकी स्टेट, पैसे, रुपये गहना-गांठी आदि किसी सामान पर आज से मेरा कतई हक नहीं रहा है और मेरे हाथ का न कोई कर्ज बाकी है। किसी का एक पैसा भी देना बाकी नहीं है।

अन्य समाचार कुछ हैं नहीं। समाचार तो बहुत है, पर मेरे से लिखे नहीं जाते।

संवत् १९६४ मिती बैसाख कृष्ण २, मंगलवार। पूज्य श्री १०५ दादाजी श्री बच्छराजजी से जमन का चरणस्पर्श।

बहुत बहुत सम्मान से। आपकी तरफ मेरा कोई रीत का लेन-देन नहीं रहा है। श्री ठाकुरजी के मंदिर का काम बराबर चलावें। आपसे दान-धर्म जो बने सो खूब करते जावें। ब्राह्मण साधु को गाली बिलकुल न दें। और किसी को भी हाथ का उत्तर दें, मुंह का उत्तर नहीं। ज्यादा क्या लिखूं? इतने में ही समझ लें।

और मैं आपकी कोई चीज साथ नहीं लूंगा। सब यहीं छोड़ जाता हूं। सिर्फ अंग पर कपड़े पहने हूं।

(राजस्थानी से अनूदित)

श्री कनीरामजी बजाज की ओर से—

: १५७ :

सीकर,
२०-११-२७

चि० जमनालाल से कनीराम का आशीष।

चि० भैरूलाल की सगाई सूरजमलजी नारनोली जयपुर में कराते है। सगाई का रुपया २३००) ठहरा बतलाते है। रुपया १३००) तो अभी देना पड़ेगा और एक हजार रुपया दो या तीन वर्ष में, जब विवाह करें, तब देना पड़ेगा। लड़की ८ साल की है। वे लोग वहीं जयपुर में है। विवाह तीन-चार वर्ष बाद करेंगे। तुम्हारे आने से ही करने का विचार होवे तो हमें लिख देना। दो वष के अदर-अदर विवाह कर देवेंगे, नहीं तो उनका घर बधना हो तो बध जाने दीजिये। तुम पिलानी जाओ तब कुछ समय यहा जरूर ठहरना।

: १५८

सीकर,
(मिला ४-५-२८)

चि० जमनालाल, जाग लिखी सीकर से कनीराम का आशीस बाचना। अपरच तुम्हारा कागद आया। तुमने बद्रीनारायणजी जाने का मना लिया सो ठीक है। काशी मेरा विचार तो जाने का ही था। सारा सामान भी बाध-बुध लिया था। और काशी का-बास से बिदा होकर यहा आ भी गया था। जाना तो ईश्वर के हाथ है, पर मेरा तो पक्का विचार चलने का ही है। तुम चल सको तो अब भी ३-४ दिन ठहर कर चल सकते है। यहा ही आ सको तो फिर ठीक। तुम्हारे साथ के बिना हमारा तो निकलना मुश्किल है। शरीर मे सामर्थ्य कम ही है। और आगे ऐसी ही रहने वाली है। अगले साल तो और भी कम ही होवेगी। फिर आगे का

[illegible] तो अब हो सके, नहीं तो फिर हमारा तो जाना मुश्किल है । शरीर के लिए दवा-पानी का परहेज यहां कर ही लिया है; और भी कर सकेंगे । बाकी [illegible] पानी का ही विचार ज्यादा होता है [illegible] यह डर भी नहीं रहता । [illegible] तुरंत तार देना । [illegible] और भी एक आदमी साथ [illegible] आदमी भेजा है । उनका अभी कोई समाचार नहीं आया है । आगे [illegible] । श्री बद्रीनारायणजी न आना हुआ तो बाद में सावरमती जाने का विचार करेंगे ।

(राजस्थानी से अनूदित)

१५०

सीकर,
२५-५-२८

चि० जमनालाल से कनीराम का आशीष ।

तुम्हारा पत्र सावरमती से लिखा हुआ मिला । पढ़कर समाचार मालूम किये । तुमने लिखा कि चि० राधाकृष्ण को महीना-दो के लिए यहां भेज दो सो ठीक है । परन्तु मेरे शरीर में किस तरह से तकलीफ रहती है यह बात मैं ही जानता हूं । बाकी इसके द्वारा सेवा करने से दुख-सुख पाकर दिन निकालता हूं । भाई भगतराम को कल बुलवाया था । आज वह यहीं पर है । उसको पूछा कि तुम पाच-दस दिन हमारे पास रह सकते हो क्या, तब उसने कहा कि वह एक-दो दिन से ज्यादा नहीं रह सकता । इसलिए बिना अपने आदमी के सेवा नहीं हो सकती । तुमने लिखा कि दूसरे आदमी को भेज दूं । परंतु दूसरे आदमी से काम नहीं चल सकता ।

पंडित देवीसहायजी को १५) महीना, छः महीने, तक शुरू करने के लिए लिखी, सो कर देंगे । आने के बारे में लिखा, सो ठीक है । परंतु घर— और वहां दोनों जगह ही पड़ती है । कहीं ठंड की जगह जाओगे [illegible] करेंगे । मास्टर का स्वर्गवास हो गया, सो पाच-चार रुपया [illegible]-सात आदमियों को भोजन करवायेंगे । ज्यादा करेंगे नहीं ।

तुमने लिखा कि तुम्हारा स्वभाव बहुत क्रोधी हो गया, सो ठीक है। बाकी रात-दिन जिस आदमी के तकलीफ रहे, उसकी इच्छानुसार काम नहीं हो तब कहना ही पड़ता है। यह तो भाग्य की बात है कि मुझे तकलीफ लिखी है। सो मैं सहन करता हूं। तुम्हें किसी प्रकार का दोष नहीं है। मैं अपने किये का फल भोगता हूं। और वोडिंग की दुकान की मरम्मत कराने की लिखी सो मरम्मत करवानी शुरू कर दी है। पुराने मकान तथा कमरे के चारों तरफ की मरम्मत हो गई है और कुछ हो रही है। अपने पुराने मकान के सामने कायस्थों की जगह में कुआ होना है, सो आस-पास के सभी लोगों ने एक-एक सौ, दो-दो सौ रुपया मिलकर इकट्ठा किया है, अपनी तरफ से क्या देना है, सो लिखना। कुआ होने से बहुत ठीक रहेगा।

श्री गोपीकिशनजी बजाज के नाम—

११० :

पटना,
३०-६-३४

पू० गोपीकिशनजी

आपका तारीख २७-६-३४ का और उसके साथ चि० हरिकिशन का उसी तारीख का पत्र मिला।

मुकदमे का फैसला होने के बाद आप और पूनमचन्द जब-जब मुझसे मिले है, मैंने आप लोगो से हर दफा साफ-साफ यही कहा है कि इस फैसले से आप लोगो का समाधान न हुआ हो और आप लोगों को अपील करने मे जरा भी आशा हो तो आप लोग अपील करके जरूर अपना समाधान कर ले। वैसे अपील करने का आपको अधिकार है; मेरी खुद की भी आपको यही सलाह है कि आपको अपील कर देना चाहिए, जिससे बाद मे मन के अदर इस बात का विचार न रह जाय कि अपील नही की।

यही बात मैंने चि० हरिकिशन से आपको कहने को कही थी। आपके पत्र के साथ चि० हरिकिशन का जो पत्र आया है उससे पता चलता है कि उसने अपनी भूल नहीं स्वीकार की है। इसलिए आप चि० हरिकिशन से कह दीजिये कि वह अपील अवश्य कर सकता है। यदि इस फैसले से उसका समाधान नही हुआ है तो अपील करना उसका फर्ज हो जाता है।

यह बात मै कई दफा आपसे कह चुका हू और फिर से यहा साफ कर देना चाहता हूं कि मै आपका या चि० हरिकिशन का अपनी इस्टेट पर किसी प्रकार का हक नही समझता हू, और न पहले कभी ऐसा समझता था और न भविष्य मे ही ऐसा समझ लेने की कोई आशा है। अगर मै अपनी इस्टेट पर हक समझता तो मुझे इस मुकदमे को लड़ने की जरूरत नही थी। मुझे इस बात को लिखना इसलिए जरूरी मालूम देता है कि आप या चि० हरिकिशन किसी प्रकार की गलतफहमी या भ्रम न कर सकें। मैंने आपसे साफ-साफ यह कह दिया था कि जबतक

अपील की मियाद बाकी है मैं आप लोगों से इस बारे मे बात नही करना चाहता। मैंने आपको यह भी बताया था कि आप और चि० हरिकिशन की ओर से मेरे प्रति जो दुर्व्यवहार हुआ है उसका कारण यही है कि मैंने भूतकाल मे आप लोगों को कुटुंबी समझकर अडचन के समय मदद दी। आप लोगों ने उसका खूब दुरुपयोग किया और मुझे परेशान किया। इन बातों का खयाल करते हुए तो मैं अब आप लोगों से बिलकुल किसी प्रकार का व्यवहार नहीं रख सकता। परन्तु मैं मानता हू कि मनुष्य से भूल हुआ करती है। मनुष्य का कर्तव्य है कि यदि भूल करनेवाले को अपनी [illegible] भूल पर सच्चे दिल से पश्चात्ताप हो तो वह उसे क्षमा कर दे और उसके साथ किये गए अन्याय को भूल जाय। जब मुझे ऐसा पता चलेगा कि आप लोगो ने अपनी गलतियां सच्चे दिल से स्वीकार करली है और आप लोगों को उनके लिए पश्चात्ताप है तो मैं उन्हें भूल जाने का प्रयत्न करूंगा।

[illegible] आप लोग यह न समझे कि मैं आप लोगों को अपील न करने का [illegible] देना चाहता हू। अगर आप ऐसा समझेंगे तो धोखा खायेंगे। आपको मुझसे कुटुंबी होने की हैसियत से किसी प्रकार की [illegible] नहीं रखनी चाहिए। मनुष्य की हैसियत से मैं आप लोगों के लिए उतना करने को तैयार हू, जितना दूसरे परिचित लोगों के लिए करने का इरादा रखता हू। वह यह कि यदि आप, चि० हरिकिशन, उसकी काकी [illegible] विचारों तथा मेरी इच्छा के अनुसार अपना जीवन व रहन-सहन बदलने के लिए सच्चे दिल से तैयार होगे और उनके माफिक तब्दीली [illegible] मैं उतना इन्तजाम करने का प्रयत्न करूंगा जिससे उन लोगों को, [illegible] के माफिक जवतक जीवन बितायेंगे, रोटी, पानी की [illegible] न होगी।

[illegible] अच्छी तरह समझ लेना कि मेरे इस कहने के यह [illegible] है कि यदि आप अपील न करेंगे तो मैं ऊपर कहा हुआ [illegible] करूंगा। [illegible] माने यह है कि यदि आप मे से जो-जो [illegible] हो इस इन्तजाम के करने को मैं [illegible] करूंगा।

१. श्री बच्छराज...
...लजी हुए

संपत्ति के वारिस उनके
... के अन्य दो भाइयों
हरिकिशनजी ने अपने हक
फैसला जमनालालजी के हक
। श्रीगोपीकिशनजी गोद के रि...
...कशनजी चचेरे भाई होते हैं।

श्री धर्मनारायणजी अग्रवाल की ओर से—

१६१

मैनपुरी,
३१-५-३६

श्रीमान सेठजी,

वन्देमातरम् ।

श्रीमन् ने वर्धा का सब हाल सुनाया। समाज और देश की आप जो सेवा कर रहे हैं उसको विस्तारपूर्वक जानकर बहुत प्रसन्नता हुई। आप जैसे देशसेवियों का जीवन धन्य है। आपने जिस प्यार से श्रीमन् को वर्धा रखा उसके लिए मैं हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

श्रीमन् तो आप ही का है। आप उससे जो काम लेना चाहें, लें। यदि वह आपकी और देश की कुछ सेवा कर सकेगा तो मुझे खुशी होगी।

विनीत,
धर्मनारायण

श्रीडेडराजजी खेतान के साथ—

: १६३ :

लोसल,
२०-२-३२

पूज्य जमनालालजी,

चिट्ठी आपकी सीकर मारफत आई। मुझे दवाई से फायदा है। खासी तो हाल पूरी मिटी नहीं, दवाई चालू है। खासी मिटने पर मेरा विचार देश की सेवा करने का है। आपकी तबीयत बहुत अच्छी होगी। कान में अब कोई शिकायत नहीं होगी। चिट्ठी पीछी देना। आपकी तबीयत का समाचार बराबर लिखते रहें। समाचार सारा आपको राधाकृष्ण ने कहा होगा।

आपका,
डेडराज खेतान का प्रणाम

: १६४ :

वर्धा,
७-७-३८

प्रिय डेडराजजी,

आपका ता० ३०-६ का पत्र मिला। चि० पार्वती का विवाह भली प्रकार हो गया था।

सीकर की हालत तो चिंताजनक हो रही है। श्रीलादूरामजी की गिरफ्तारी के बारे में पूरा हाल अभी मालूम नहीं हुआ। मैंने श्री शास्त्रीजी को तार किया था तथा उनका भी तार मेरे पास आगया है।

जमनालाल बजाज के वन्देमातरम्

: १६५ :

लोसल,

२९-७-३८

पूज्य जमनालालजी,

सप्रेम वन्देमातरम् । पत्र आगे दिया था—पहुचा ही होगा । आशा है आप सकुशल पहुचे होगे । इस पत्र मे कुछ ऐसे बुलेटिन भेजे है जो इधर जयपुर राज्य द्वारा मोटर लारी से गाव-गाव मे मुफ्त बाटे जा रहे है । इन लारियो मे ५-७ जाट रहते है और एकाध पुलिसवाले । सुना है ५-४ लारियो द्वारा यह कार्य हो रहा है । हमारे यहा लोसल मे भी एक लारी आई थी जिसने बाजार मे दूकान-दूकान पर ये पर्चे बाटे थे । इसी तरह दूसरे सभी गावो मे ऐसे ही और किस्म के पर्चे बाटे जा रहे है ।

पर्चों की भाषा-भाव आदि के लिए क्या लिखना है । यहा पर सब प्रसन्न हैं । आपकी प्रसन्नता सदा चाहिए ।

पत्र दें ।

आपका,

डेडराज खेतान का वन्देमातरम्

: १६६ :

लोसल,

३-८-३८

पूज्य जमनालालजी,

सप्रेम वन्दे । आपका ता० २८-७ का पत्र यथासमय मिल गया था । समाचार जाने । मै सीकर कई काम-काज देखने को गया हुआ था । चार दिन रहकर कल वापिस आया हू । प० लादूराम की तारीख २ से ८ अगस्त पडी है । मुझे कमरे मे रानीजी साहिबा का आदमी बुलवाने था, तब मैने श्रीसुलतानसिहजी को गढ़ मे भेजा था । तार कामदार के नाम से दिया गया था, सो भी मिला की हालत खराब है । लोगो के साथ पुलिस बहुत अच्छा कर रही है । जगह-जगह पहले की तरह ही पहरा है । सिर्फ

बाहर के मोर्चे उठे हैं। गढ व कोठी मे तो विशेष पहरा हुआ है। देशी नौकरो को—बहुतो को निकाल दिया है। नौकरी भी अभी किसी देशी मुलाजिम को नही दी गई है। किसी देशी को रखा गया है तो उसे ही रखा है जिसने माफी व भूल मजूर कर ली है—लिखित रूप मे।

सी०आई०डी० और पुलिस की मोटरे शहर मे बहुत घूमती है। विशेष बाते श्रीशास्त्रीजी की ओर से जो आदमी सीकर आया था वह लिखेगा ही। यह भी सुना जाता है कि बहुत से आदमियो पर वारट निकले हैं। अभी तक किसीको पकडा नही है। सुना है कि मि० वेब भी आ गए हैं। डाकखाना अभी शहर मे नहीं आया है।

जयपुर से निकलनेवाले 'प्रभात' मे आपके लिए निकला है कि जमनालालजी को जयपुर की ओर से सोने के गहने दिये गए हैं। यह बात वैद्य प्रह्लादरायजी ने मुझसे कही है कि मैने पत्र मे देखा है। आशा है आपने भी शायद 'प्रभात' देखा हो।

शेष कृपा। पत्र दे।

आपका,
डेडराज का वन्देमातरम्

: १६५ :

लोसल,
२९-७-३८

पूज्य जमनालालजी,

सप्रेम वन्देमातरम् । पत्र आगे दिया था—पहुंचा ही होगा । आशा है आप सकुशल पहुंच होंगे । इस पत्र में कुछ ऐसे बुलेटिन भेजे हैं जो इधर जयपुर राज्य द्वारा मोटर लारी से गांव-गांव में मुफ्त बांटे जा रहे हैं । इन लारियों में ५-७ जाट रहते हैं और एकाध पुलिसवाले । सुना है ५-४ लारियों द्वारा यह कार्य हो रहा है । हमारे यहां लोसल में भी एक लारी आई थी जिसने बाजार में दूकान-दूकान पर ये पर्चे बांटे थे । इसी तरह दूसरे सभी गांवों में ऐसे ही और किस्म के पर्चे बांटे जा रहे हैं ।

पर्चों की भाषा-भाव आदि के लिए क्या लिखना है । यहां पर सब प्रसन्न हैं । आपकी प्रसन्नता सदा चाहिए ।

पत्र दें ।

आपका,
हेडराज खेतान का वन्देमातरम्

: १६६ :

लोसल,
३-८-३८

पूज्य जमनालालजी,

सप्रेम वन्दे । आपका ता० २८-७ का पत्र यथासमय मिल गया था । समाचार जाने । मैं सीकर कई काम-काज देखने को गया हुआ था । चार दिन रहकर कल वापिस आया हूं । प० लादूराम की तारीख २ से ८ अगस्त पड़ी है । मुझे कमरे में रानीजी साहिबा का आदमी बुलवाने को आया था, तब मैंने श्रीसुलतानसिंहजी को गढ में भेजा था । तार आपको खुमानसिंह कामदार के नाम से दिया गया था, सो भी मिला होगा । सीकर की हालत खराब है । लोगों के साथ पुलिस बहुत अच्छा बर्ताव नहीं कर रही है । जगह-जगह पहले की तरह ही पहरा है । सिर्फ

[श्री]सीतारामजी सेकसरिया की ओर से—

: १६७ :

कलकत्ता,
१-७-४१

पूज्यवर,

आपका पत्र यथासमय मिला था। आने-जानेवाले लोगो से मालूम हुआ कि आप इतने दुबले हो गए है कि देखकर आश्चर्य होता है। पेट बिलकुल पिचक गया है और शरीर भी बहुत दुबला हो गया है। शरीर दुबला ज्यादा हो गया यह जरा ठीक नही है। वैसे वजन घटाने की जरूरत तो थी, पर इतना ज्यादा नही। अब वजन कितना है? और कैसा बढ रहा है तथा ताकत कैसी है? सब बाते लिखवाये।

क्या किया जाय? बिना काम आना न तो आप पसद करेगे, न उचित ही है; पर आपको देखने की इच्छा तो बहुत होती है। आप यदि काश्मीर जाते हो तो आपके साथ चलने मे सुख का अनुभव करूगा। कई दिन तक साथ मे रहने का मौका मिलेगा। कब जाने का विचार कर रहे है। पू० जानकीबाई भी साथ मे रहेगी न? और कौन-कौन होगे? पू० जानकी बहन की और मेरी जेल मे रहना आप स्वीकार करे तो ही आपका बाहर जाना ठीक रह सकता है, नही तो थोड़ी-सी तबीयत ठीक होने पर आपके आसपास बहुत लोग जमा हो जायगे और विश्राम, शाति नही मिल सकेगी।

पन्ना तो कल यहा मिलनेवाली है। उसको कई दिनो से बुखार था, यह तो आपको मालूम ही है। कुछ दिन वहा रहने से ठीक हो जावेगी। प्रह्लाद भी दो-एक दिन के लिए आ रहा है। जाते समय आपसे मिलेगा ही।

मै तो रचनात्मक काम जैसे किया करता था वैसे ही कर रहा हू। बगाल मे जेल जाने का तो सवाल है ही नही। खादी भडार का काम थोड़ा ...ता है। सेवा-सदन बहुत अच्छा चल रहा है। उसके लिए कन्हैयालालजी ... रुपये की जमीन तथा नगदी दिया है। एक

१६८ :

कलकत्ता
१०-६-३[illegible]

[illegible]य श्री जमनालालजी,

मैं तथा सावित्री आज सुबह बहुत राजी खुशी पहुच गए हैं। आ[illegible]
लोग भी सब प्रसन्नतापूर्वक मद्रास पहुच गए होगे।

श्रीजानकीदेवी तथा आप जैसे माता-पिता को सावित्री को सौप कर मैं अपने को निश्चित तथा अति सुखी मानता हू। यह सावित्री का परम सौभाग्य है कि उसे आप लोग जैसे माता-पिता मिले। अगाध प्रेम से आपके बताये हुए रास्ते पर यदि सावित्री चले तो वह अपने जीवन को परम सुखी तथा आदर्श बना सकती है।

यहा के एक पडितजी से मैंने पूछ लिया है। ३० जून का सावा बहुत अच्छा निकलता है। आप चि० कमलनयन को लिख सकते है कि वे जून के प्रथम सप्ताह तक आराम से आ सकते हैं।

लक्ष्मणप्रसाद का वदेमातरम्

१६९ .

कलकत्ता,
२९-६-३६

प्रियवर जमनालालजी साहब,

चि० कमलनयन कल बम्बई मेल से वर्धा के लिए रवाना हो गए। ये ३-४ दिन ऐसे जल्दी निकल गए कि जैसे वह २-१ दिन ही रहे हो। यह उम्मीद नही थी कि वह इतनी जल्दी हम, छोटे से लगाकर बडे तक—लोगो के हृदय मे जगह बना लेगे—इतने थोडे समय मे। आज हम लोगो मे से किसी का किसी काम पर जी नही लगता।

चि० कमलनयन आपको सारी बाते कहेगे। मेरी तो यह इच्छा है

कि विवाह करके ये दोनों विलायत चले जाय । परन्तु यह सर्वथा असभव हो तो ऐसा एक प्रोग्राम बन जाय जिसमें किसी को असुविधा न हो ।

यहा सब प्रसन्न है । आप लोगो की प्रसन्नता लिखें ।

आपका,
लक्ष्मणप्रसाद

: १७० .

वर्धा, ११-७-३६

प्रिय श्रीलक्ष्मणप्रसादजी,

आपका ७-७ का पत्र मिला । आप सकुशल पहुच गये पढकर खुशी हुई। चि० कमल को तो ता० ९ के स्टीमर से विदा करके श्री जानकीदेवी व चि० उमा आज सुबह यहा पहुच गये है । कृपया लिखें कि चि० सावित्री व श्री उर्मिला बहन यहा कब आवेगी, जिससे उस प्रकार कार्यक्रम निश्चित रखा जाय जैसा कि यहा पूज्य महात्माजी के सामने निश्चित हुआ था । ये दोनों आ जावें तो फिर पूज्य महात्माजी के द्वारा सगाई की घोषणा कर दी जावे ।

अब तो चि० सावित्री को भी मुझसे पत्र-व्यवहार शुरू कर देना चाहिए। यहा सब अच्छे हैं ।

जमनालाल बजाज का वदेमातरम्

: १७१ :

वर्धा,
२३-७-३६

प्रिय श्री लक्ष्मणप्रसादजी,

हम सब लोग कल शाम को कुशलपूर्वक पहुच गए हैं । आप सबो का प्रेम हम सब लोगो को बराबर याद आता रहेगा । आज सुबह मैं तथा जानकीदेवी । यहा से चार मील की दूरी पर

वित्री का पत्र पढा व स्थिति समझ

। आज का दिन शुभ माना जाता

है। आप अब वहा सगाई की घोषणा कर सकते है। चि० सावित्री के लिए एक अगूठी भेजनी है, परतु उसे किस प्रकार की अगूठी पसद आवेगी यह मालूम न होने से जिस प्रकार व जैसी अगूठी की उसकी इच्छा हो, आप मेरी ओर से अवश्य बना लेवे। कोई तरह का सकोच न करे। चि० सावित्री के दो फोटो भिजवा दे।

दोनो तार की नकल व चि० सावित्री के नाम पत्र भेजा है। चि० कमल का वेनिस आनदपूर्वक पहुचने का तार आ गया है।

जमनालाल का वदेमातरम्

राधाकृष्णजी बजाज के साथ[1]—

: १७२ :

सीकर,
३१-१-२६

पूज्य काकाजी,

सप्रेम प्रणाम।

पत्र आपका आया। दादाजी और दादीजी को पढ़ा दिया है।

दादाजी की तबीयत हमेशा की तरह है। मेरी तबीयत कुछ ठीक है। यहां रहने में काम-क्रोध, लोभ आदि विकार बढ़ते हैं जिससे अब मेरी इच्छा वर्धा आश्रम में रहने की होती है। मेरी सेवा में दादाजी को जितना होना चाहिये उतना संतोष होता नहीं। कारण उनका मन हमेशा मुझे देख-देखकर ज्यादा दुखी होता है। कई बार तो मुझे दुकान करके कमाई के लिए भी कहते हैं और जब मैं उनको जवाब देता हूं तो बहुत दुख होता है। इसलिए यदि मैं आश्रम में रहने लग जाऊं और वे किसी लड़के को गोद लेकर अपनी इच्छा पूर्ण कर लेवें तो उनको भी संतोष होगा और मैंने जिस उद्देश्य के लिए ब्रह्मचारी रहने का निश्चय किया है वह सत्-संगति और सेवा के उद्देश्य सिद्ध हो जायगे। इस बारे में आपका विचार क्या है सो लिखियेगा। माताजी को भी दादाजी की तरह मुझसे संतोष नहीं है। ये सब हमेशा मन में दुख करते रहते हैं कि हम बूढ़ों को ही रोटी बनानी पड़ती है— इत्यादि। सो आप अपना विचार लिखियेगा। योग्य सेवा लिखें।

आपका बालक,
राधाकृष्ण

---

१. श्रीराधाकृष्णजी तथा श्रीजमनालाल बजाज के बीच हुए पत्र-व्यवहार के पत्र काफी संख्या में हैं। इनमें से कुछ पत्र रचनात्मक कार्यकर्त्ताओं के साथ हुए जमनालाल जी के पत्र-व्यवहार (भाग ३) में दिये जा चुके हैं। शेष में से कुछ चुने हुए पत्र ही यहां दिये जा रहे हैं।

: १७३ ·

सीकर,
३०-११-२७

पूज्य काकाजी,

सादर प्रणाम । आपने देशपाडेजी के यहा का भडार मुझे सभालने के लिए कहा है, ऐसा श्रीपूर्णानन्दजी कह रहे थे । यानी यहा के काम की देख-रेख मै करू, ऐसी आपकी इच्छा मालूम होती है । मै इसके लिए तैयार हू । पूज्य दादाजी की भी यही इच्छा है । उनकी तो यह भी इच्छा है कि रकम भी अपनी निजी हो तो और अच्छा है । यहा जो माल है उसमे से बिकने योग्य माल को यहा पर रख लिया जाय । बाकी माल जयपुरवालो को भेज दिया जाय । रकम चर्खा सघ की हो तो मुझे कोई हर्ज नही दिखता । परतु भडार किस तरह से चलाया जाय, यह मेरी इच्छा पर होना चाहिए । माल कहा से, किस तरह मगवाना, किस भाव बेचना तथा हिसाब किस ढग से रखना, यह सब मेरी इच्छानुसार होना चाहिए । चर्खा सघ की रकम डूब न जाय, इसलिए देख-रेख उनकी रहनी चाहिए । बाकी सब अधिकार मुझे होने चाहिए, जिससे मै अपनी कल्पना के अनुसार भडार को चलाने की कोशिश करू । ऐसी हालत मे नफा-नुकसान की जिम्मेदारी तो मेरी अपनी ही होगी । बाकी तो सिर्फ रकम ही रहेगी । आपको जचे तो रकम भी अपन लगा सकते है ।

पूज्य दादाजी की तबीयत साधारण ठीक है । अपना आगे का कार्यक्रम क्या है सो लिखियेगा ।

आपका बालक,
राधाकृष्ण

१७४

पूना,
२२-८-२९

चि० राधाकृष्ण,

श्रीरामनारायणजी की सख्त बीमारी का तार मिलने से मै साबरमती ... को यहा आ गया हू । श्रीरामनारायणजी की तबीयत

से अ

अभी नरम ही है। मुझे यहां दो-तीन दिन लग जायंगे।

तुम्हारी चाचीजी के गुस्से के कारण बाद में पश्चात्ताप की हकीकत लिखी सो समाचार पढ़ कर दुख और चिंता हुई। इनके पूर्व-जन्म का कोई बड़ा भारी दोष मालूम देता है जिससे इस तरह की मामूली बात पर इतना ज्यादा क्रोध आ जाता है। जबतक इनकी लोभ की वृत्ति कम नहीं होगी तबतक सच्चा प्रेम व दया का भाव जागृत हो नहीं सकता। बिना दया व प्रेम के क्रोध कम होना मुश्किल है। अगर दोष की पूर्ति हो गई होगी तो आगे से स्वभाव में फर्क पड़ने लगेगा। नहीं तो जो संस्कार होगा सो बनेगा, चिंता करने से कोई लाभ नहीं है। मैं जितना विचार करता हूं तो इस तरह ही मालूम पड़ता है।

तुम इनको समझाते रहना। पू० विनोबा की गीता का कोई असर हो जाय तथा इनका स्वभाव बदल जाय तो अपना घर सुखी हो जाय। ज्यादा नहीं लिख सकता। इन पर दया तथा रोष दोनों ही आ जाते हैं।

यह चिट्ठी थोड़े दुख में लिखी है, क्योंकि यहां का वातावरण इस समय दुख का हो रहा है। कुछ पू० बापूजी भी बीमार हो गए थे। उनकी चिंता भी है। सो तुम चि० कमला की माताजी को दुख पहुंचे इस तरह की कोई बात नहीं कहना। वह कोई समय आनंद में होवें तो भले ही मेरे विचार कह देना। तुम्हारी चिट्ठी उनको भेज दी है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १७५ :

धुलिया जेल,
(१९३२)

चि० राधाकृष्ण,

मकान में फेरफार, आदि के संबंध में मेरी राय यह है कि वह दुमंजिला या अलग बनाना—जैसा तुम लोग, खासकर जानकी, मदालसा, कमल, बजाज आदि की सलाह से पूज्य जाजूजी को व तुम्हें पूर्णतया जंच जाय, वैसा काम शुरू करवा सकते हो। मदालसा, कमल की पढ़ाई व रहने के लिए स्वतंत्र व्यवस्था होना ठीक है। उसी प्रकार तुम्हारे व बाद केशर,

मजदूर आदि के लिए भी भविष्य में मकान तो बनाना ही पड़ेगा, उसका भी ख्याल रखना। विनोबाजी के आश्रम का निश्चय हो जायेगा तो उनके खुद के लिए व आश्रम के लिए मकान तो बनाना ही पड़ेगा। ये सब बातें विचार करते समय ध्यान में रखना होगा, क्योंकि शायद आगे-पीछे आपकी या औरों की आश्रम के साथ या नजदीक रहने की इच्छा हो जाय।

नागपुर-केस के बारे में कोई जल्दी करना है, यह तो अपने लिए भी बहुत ठीक है। बिना कारण अपना भी बहुत खर्च हो रहा है। जल्दी निकाल हो जाय तो खर्च से बच जायें।

मेरी गवाही पुलिया केस में कमीशन के सामने होगी, ठीक पता नहीं उस समय मेरा किस जेल में रहना होगा।

वर्धा जीन-प्रेस का आडिट पाच वर्ष का किया, यह बहुत ज्यादा वर्षो का हो गया। क्या भाव किया यह नहीं लिखा, सो ऐसी मूर्खता क्यों? आडिट हुआ लिखा तो भाव-खर्च भी लिखना था। पुलगाव मे नही हुआ तो वर्धा की पेठ को बिलकुल धक्का नहीं लगेगा इसका पूरा विचार करके ही भाव वगैरा रखे होंगे। मेरे विचार तो गगाबिसन जानता ही था।

श्री केशवदेवजी को लिख देना कि आप भाई घनश्यामदासजी की राय से जो करेंगे उसमें मुझे सतोष है। मैं अब इस बारे में ज्यादा विचार-फिकर नहीं करना चाहता। मिनिस्टर को जो पत्र भेजा है वह बिलकुल ठीक है। मिल बराबर चालू हो जाय तब मुझे तार से खबर कर देना। तथा मिल चालू हो जाय तब मेरी ओर से भी काम करनेवाले छोटे-बड़े सबो को प्रेमपूर्वक धन्यवाद देना।

पूज्य जाजूजी से कह देना कि नागपुर केस मे मुझे श्रीचिरजीलालजी को गवाह लेने मे कोई हर्ज व डर नहीं मालूम देता। वह झूठ नहीं बोलेगे। आप उनको गवाह जरूर ले लेवे। अगर कोई कारण से झूठ बोले भी, तो अपनी हानि होने का मुझे भय कम है। वह झूठ उसी वक्त मालूम हो जायगी।

श्री पुरुषोत्तमदासजी गनेरीवाल का देहात हो गया, पढकर दुख हुआ। मेरी ओर से उनकी स्त्री-बच्चो के पास समवेदना के समाचार देना।

[illegible] विद्यालय व मक्खन एजेंसी के बारे में श्रीकेशवदेवजी, [illegible]सन व पूज्य आबूजी से सलाह करके उचित मालूम हो वैसा करें। मुझे तो वर्तमान समय में यह एजेंसी देने में जोखम दीखती है।

[illegible] को मेरा वन्देमातरम् कहला देना। ज्यादा कोशिश की जरूरत नहीं।

जमनालाल के आशीर्वाद

१३६

धूलिया जेल, २३-९-३२

विश्वास, ब्रह्मचर्य का पालन, सत्याग्रह के लिए कष्ट सहने में आनंद आदि विचार व आचरण में कई प्रकार के भाव मिले हैं।

दिनचर्या सुबह ४ से रात के ८ बजे तक तो बराबर चलती है। कई बार ८ बजे सो भी जाता हूं, ९ बजे तो अवश्य। सुबह ४ बजे प्रार्थना करने के बाद भजन, गीताई के अध्याय, वार के मुताबिक एक या दो; बाद में बापू के लेखों में से या अन्य कोई पुस्तक, पढ़ना। ५ से ५॥ मुंह हाथ धोना बाद में आधा घंटा चर्खा चलाना या उर्दू पढ़ना। फिर ६ से ८ तक घूमना, कुएं से पानी निकालना, जो मुझे बहुत ही प्रिय और अनुकूल हुआ है। फिर थोड़ा आराम [illegible] स्नान, उसके बाद १० से ११ तक आदरणीय गुलजारीलालजी (नंदा) के पास उर्दू पढ़ता हूं।

भोजन आदरणीय मुरारजी व गोपालन शास्त्री के साथ (दो दाढ़ियों के बीच में बैठकर) कई बार गुड़ के चूरमे का होता है। उसका स्वाद तो अवर्णनीय है। बाद में थोड़ा विश्राम। १२-१ चर्खा। बाद में पढ़ना, लिखना, बात करना, ४ बजे तक। फिर थोड़ा घूमना, विनोद, खेल-कूद। शाम को बराबर ७ बजे प्रार्थना, मणिभाई व दूसरे एक-दो मित्रों के साथ। इच्छा हुई तो बात करना, नहीं तो ८ बजे सो जाना। जितना उत्तम कार्यक्रम है। दिनभर में एक बार पूरा भोजन। 'सी' वर्ग में रहते हुए इतनी खुराक तुम लोगों के कारण मुझे लेने को बाध्य होना पड़ता है। मुझे पूरा विश्वास है, कि मेरा शरीर ईश्वर ने किया, तो बिगड़ने नहीं पायगा, बल्कि सुधार कर ही आऊंगा। कान से ठीक फायदा मालूम होता है। दवा रोज चालू है। आशा है अब तुम भी चिंता नहीं करोगे। मैं तो बाहर की चिंता नहीं करता। आनंद में रहता हूं व दूसरों को हंसाने का काम मैं अपनी तरफ समझता हूं। बीच में जेल के एकांतवास का दो रोज बहुत ही उत्तम व शांत अनुभव मिला। अब फिर से सब शांत वातावरण चालू हो गया है। इस संबंध में भी चिंता नहीं रखना।

• लक्ष्मण को उपवास नहीं करने चाहिये थे। अब किये हैं तो उसे बराबर संभाल लेना, छोड़ सके तो छुड़वा देना। पूज्य बापूजी की आज्ञा पालन ही मुख्य धर्म है। .... करना।

पूज्य मा को प्रणाम कहना और मेरी चिंता बिलकुल न करने को कहना। मुझे तो कभी-कभी लगता है कि शायद जल्दी बाहर आने के लिए मजबूर होना पड़े। बाकी दिनचर्या तो यहां उत्तम जम गई है।

पूज्य विनोबा को प्रणाम कहलाना। मेरी दिनचर्या की खबर पवनार भिजवा देना। इन दिनों काफी शांति व संतोष मिल रहा है।

जमनालाल का आशीर्वाद

· १७७ ·

बंबई,
१२-८-३८

चि० राधाकृष्ण,

कुमारी डा० सावित्रीबाई महाजन को मैं वहां भेज रहा हूं। मेरा उनसे परिचय बिहार में भूकंप के काम के निमित्त हुआ। उनका स्वभाव और सेवाभाव देखकर उनको वर्धा ही हमेशा का निवास-स्थान बनाने के लिए मैं कह रहा हूं। अगर वह पैसा कमाना चाहेंगी तो आज ही मासिक दो-ढाई सौ रुपये वह कहीं भी कमा सकती है। लेकिन पैसा कमाने की उनकी इच्छा नहीं है। समाज-सेवा के कार्य में अपना तथा अपनी संपादित विद्या का कुछ उपयोग हो, ऐसी उनकी इच्छा है। फिलहाल ५-७ दिन वहां रहकर वहां की परिस्थिति से परिचय कर लेने के लिए ही वह वर्धा आ रही है। उनका वहां रहने का संतोषजनक प्रबंध कर देना।

शुरू में एक छोटा-सा सूतिकागृह वह वर्धा में खोल दे, जिसमें एक 'पेड बेड' हो और तीन चार 'बेड' अपने कार्यकर्ता तथा तहसील के अन्य परिचित लोगों के उपयोग के लिए हों। अपनी वहां की संस्थाओं के लिए भी उनका काफी और अच्छा उपयोग हो सकेगा और बचे हुए समय में वे चाहेंगी तो कुछ 'प्राइवेट प्रैक्टिस' भी कर सकेंगी।

इस दृष्टि से उनको वहां की सारी परिस्थिति समझा देना और आश्रम तथा गांव के मित्रों से उनका परिचय करा देना। जानकीदेवी तो उनसे अच्छी तरह परिचय कर ही लेंगी। मैंने धर्माजी, मार्डेवा तथा बालुंकरजी को आज परिचय-पत्र उनके लिए लिखे तो है। मेरा तो विश्वास है कि अगर वह कार्य रत [illegible] र कामों के

इनका ठीक उपयोग होगा। मेहनती और सेवावृत्ति वाली बाई है। बिहार मे इनका काम ठीक सतोषजनक रहा था। मेरे काम का हाल यह बतलावेंगी ही। वह यहा मेरे पास ही रहा करती थी। खूब सेवा और मदद करने की इच्छा रखती हैं। पूज्य विनोबा से इनका परिचय करा देना।

जमनालाल का आशीर्वाद

१७८ :

बबई,
१७-१-३५

चि० राधाकृष्ण,

इस पत्र के साथ श्री रामनारायणजी चौधरी की ओर से आये हुए चार पत्र भिजवाये है, जिसमे ठक्कर बापा के नाम तुम्हारा पत्र, उसके बारे मे श्रीरामनारायणजी के पत्र ठक्कर बापा के नाम, तुम्हारे नाम तथा श्रीचद्रभानु शर्मा के नाम है।

श्रीरामनारायणजी का अपना जिस प्रकार का सबध है उसका खयाल रखते हुए तथा साधारणत भी विचार करने पर मुझे यह लगता है कि तुम पहले रामनारायणजी को ही सूचना करते और फिर आवश्यकता होने पर श्रीठक्कर बापा को लिखते तो ठीक होता। शिकायते बढ़ाकर कहने की आदत तो लोगो मे होती ही है। दुरुस्ती करने की इच्छा मे शिकायते करने का अधिकार सार्वजनिक कार्यकर्त्ता को होता ही है। परतु शिकायत करने के पहले जिसके बारे मे शिकायत हो उसीको कुछ कहने का पहला मौका होना चाहिए। बापू की हमेशा यही नीति रहती है ... न्याय है और ऐसा करने से सच्ची बात का पता भी लग

... तुमसे मिले होगे। जहा तक तुम्हारा सतोष न हो ... अपनी राय उनसे कह सकते हो। इसमे कोई हरकत नही। ... न का इलाज चालू है। अब ड्रेसिग मे एक नया तरीका प्रारभ ... प्रगति है, परतु बहुत धीमी। मुझे वर्धा आने मे देरी होगी ... होता है। 'ग्राम उद्योग सघ' की सभा आगे बढ जाय तो उसके बारे मे तो अभी से निश्चित नही कहा जा सकता।

वहा मेहमान लोग आवेगे। बागीचे मे सबका इतजाम सतोषकारक होगा तो सही, परन्तु जहातक पूर्ण सतोषजनक व्यवस्था न हो जाय वहातक चिंता तो रहेगी ही। वर्धा मे ऐसे कार्य स्वतत्र-रूप से चलते रहने पर भी अपना सबध तो उनसे रहेगा ही और उस बारे मे थोडी चिंता रहना भी स्वाभाविक है। तुम्हारा वहा का काम ठीक-ठाक हो जाने पर मा वगैरा का इतजाम ठीक से करवाकर यदि पूज्य बापू के वर्धा जाने के पहले तुम वर्धा जा सको तो अच्छा होगा।

अपना प्रोग्राम लिखते रहना। स्वास्थ्य अच्छा रखना। वहा का सब काम बराबर देख लिया होगा।

श्री रामनारायणजी को तुमने पत्र लिखा होगा।

पूज्य मा को प्रणाम!

जमनालाल का आशीर्वाद

१७९

बबई,
२६-१-३५

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा सीकर से लिखा हुआ ता० २९ का पत्र मिला।

तुम्हारे वाले मकान मे मेहमानो की व्यवस्था करनी होगी। मै आऊ तो, और न आऊ तो भी, कुछ लोग तो वहा ठहरेंगे ही।

तुमने चद्रभानुजी से ठीक बाते कर ली तथा रामनारायणजी को पत्र भेज दिया सो ठीक किया। तुमने भी इस बात को महसूस किया कि रामनारायणजी को पत्र पहले देना ज्यादा अच्छा था। इसलिए इस बात से मुझे भी सतोष हुआ है। देशपाडे व रामनारायणजी के बीच समझौता करने के लिए पिछली बार काफी समय दिया था व आशा भी थी कि समझौता हो जायगा। परन्तु अब वर्तमान मे मुझसे हो सका तो मै राजस्थान के बारे मे उदासीन रहना चाहता हू। वहा के मित्रो तथा कार्यकर्ताओ का मुझपर काफी बोझ रहा।

तुम यदि वहा के कार्य मे दिलचस्पी ले सको व सब परिस्थिति से वाकिफ रह सको तो मुझे सतोष होगा।

बागीचे की व्यवस्था मे श्री कुमारप्पा को ठीक सहायता करके इतजाम करवा दिया होगा, नही तो सब इतजाम ठीक-ठीक करा देना। डेडराजजी की मेहनत से स्मारक भवन थोड़े खर्च मे अच्छा बना, यह पढ़कर खुशी हुई।

'चर्खा सघ' व 'गाधी सेवा सघ' की सभाओ के लिए आने का विचार है। डाक्टर लोग इजाजत दें तो आ सकूगा।

कान का ड्रेसिंग चल रहा है। आराम होने मे काफी देरी लगेगी ऐसा मालूम होता है। अब तो डाक्टर लोग भी यह कहने मे असमर्थ हैं कि कान को पूरा आराम कब हो जायगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च

तुम्हारा बगला तो तैयार रखना ही होगा। वही रहेंगे। श्री गोपीबेन, मुरारजीभाई, राजनारायण वगैरे कई जने तो वहा ठहरेंगे ही। क्या यहा से रसोइया लाना पडेगा? चि० सोफिया की सगाई श्रीसादुल्लाखा के साथ हुई, मालूम हुआ होगा।

: १८० :

भुवाली,
१३-४-३५

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा पत्र मिला। मै यहा परसो दोपहर को आ गया। ५ या ६ दिन यहा रहकर रामगढ जाने का विचार है। रामगढ यहा से ६॥ मील है। पैदल व घोड़े का रास्ता है। वहा पोस्ट आफिस व तारघर भी है। यहा से १००० फुट ऊचा है। जलवायु यहा से अच्छी है तथा एकात स्थान है। मै कल घोडे पर वहा गया था। बगला पसद कर आया हू। पानी की भी सुविधा है। समीप मे मेवे के बाग भी है। रामगढ जाने पर दूकान पर सूचना दे दूगा।

चि० कमलनयन से मालूम हुआ कि तुम्हारी देवली-यात्रा सफल। दामोदर ने लिखा है कि तुम अपना कार्यालय नालवाड़ी ले गये हो। है कि काम की दृष्टि से ही ले गए होगे।

श्रीदादा धर्माधिकारी के बारे मे मेरी समझ मे मैंने वहां कह दिया

था। उनके कार्य के बारे मे मैंने उन्हीके ऊपर छोड दिया है। बाकी तुम और पूज्य विनोबाजी जो करोगे उसमें मुझे कोई आपत्ति न होगी। श्रीदादा का जिस काम को करने का उत्साह हो वह करे।

मैंने धोत्रे को लिख दिया है कि दादा को पहली अप्रैल से १०० रु० मासिक दिया जाय। वह यदि दूकान पर रहेंगे तो खाने का खर्च इसमें से कट जायगा।

तुम्हारा उनसे क्या ठीक परिचय हो रहा है? चि० कमलनयन को उनका देवली का भाषण बहुत पसद आया।

सीकर के जाटो के आदोलन की भी बीच-बीच मे खबर मगाकर वाकिफ रहने का खयाल रखना और मुझे भी वाकिफ रखना। अब हम लोगो के इस बीच मे पडने से राज्य व सरकार राजनैतिक मामला समझ कर जाटो पर और अधिक अत्याचार करेगी, जिससे उनके कष्ट बढने की सभावना है। इस समय चुप रहने के सिवा और कोई उपाय नही है। पर उनके आदोलन से पूरी जानकारी रखने से भविष्य मे कोई रास्ता निकाला जा सकेगा।

ऊपर का मकान कब तक तैयार हो जायगा? कि रलालभाई की व्यवस्था बराबर हो गई होगी?

जमनालाल का आशीर्वाद

१८१

नालवाडी, वर्धा,
७-५-३५

पू० काकाजी,

सविनय पावाधोक। आपका ता० १ का पत्र मेरे यहा पहुचने पर आज मिला।

जाटो की हालत की बाबत एक पत्र नारेली से डाला था। वह मिला होगा। मेरे सीकर से आने के बाद जाटो पर बहुत जुल्म हो रहे है। लूटमार खुले-आम होती है। एक भी बाहरी या खादीधारी आदमी को राज्यवाले बाहर नही रहने देना चाहते। प० लादूरामजी, पू० डेडराजजी, शिवभगवान-

जी, व मेरे लिए पूछताछ व पकड़ने का विचार हो रहा था, ऐसा [illegible] के पत्र से आज मालूम हुआ। [illegible], मुसलमान व राज्य के अधिकारी, इन सबमें बदला लेने की तीव्र भावना है। इस वजह से जाट लगान देने को राजी हो तो भी 'एक घंटे में लाओ, दो घंटे में लाओ,' ऐसी शर्तें डाल कर तंग किया जाता है। पूछे हुए लोगों के घरों को बरबाद किया जा रहा है। जिस जाट के घर में पैसा हो उससे सारे गांव का लगान जबर-दस्ती ले लिया जाता है। घर का व खेती का सामान बरबाद किया जाता है और पीटा भी जाता है। सैकड़ों गिरफ्तार कर लिये गए हैं। खूब आतंक जमाया जा रहा है।

जाटों के पच जयपुर गये थे। उनको तो अधिकारियों ने साफ जवाब दे दिया कि यंग साहब के पास जाओ, हम कुछ नहीं जानते। अब पजाब कौसिल के मेंबर व जाटों के प्रतिनिधि श्री छोटूरामजी ता० ११ मई को प्रतिनिधि मंडल के साथ जयपुर राज्याधिकारियों से मिलेंगे। कुछ समझौता होगा, ऐसी आशा तो कम ही है, पर सबकी नजर उधर ही लगी है।

ता० ३ को दिल्ली मे जो जाटों की कार्यकारिणी की सभा हुई, उसमें कुछ निश्चयात्मक प्रस्तावों के अलावा खास कोई बात नही हुई। श्री-रतनसिंहजी और सीकर जाट-पंचायत के सब पंच ता० ५ को अजमेर मे एकत्रित हुए थे। इधर से पू० हरिभाऊजी, भाई रामनारायणजी, श्री व्यासजी, श्री शंकरलालजी वर्मा, श्री देशपांडेजी और मैं—इतने आदमी उपस्थित थे। दिनभर काफी चर्चा हुई। श्री रतनसिंहजी इस हलचल की पूरी जिम्मेदारी राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ पर छोडने को तैयार हो रहे थे, तथा 'जाट आंदोलन'—यह जातीय नाम मिटाकर—'किसान-आंदोलन' करने को भी तैयार है। लेकिन इस बाबत उन्होंने जाट-सभा से सलाह नही ली थी, इसलिए, तथा ता० ११ को क्या होना है, यह देखने व पू० का और आपका क्या रुख है, यह जानने के लिए पूरी जिम्मे- । सिर्फ अभी तो उनको इतना ही कहा गया है, कि जब समय पर जब वे चाहेंगे, हम सलाह देते रहेंगे। पू० हरि- ारायणजी, श्री व्यासजी, व श्री शंकरलालजी—इन चार सलाह से वे लोग काम करें, ऐसा विचार हुआ है। भाई

जी, व मेरे लिए पूछताछ व पकडने का विचार हो रहा था, ऐसा नर्मदा के पत्र से आज मालूम हुआ। राजपूत, मुसलमान व राज्य के अधिकारी, इन सबमे बदला लेने की तीव्र भावना है। इस वजह से जाट लगान देने को राजी हो तो भी 'एक घटे मे लाओ, दो घटे मे लाओ,' ऐसी शर्तें डाल कर तग किया जाता है। चुबे हुए लोगो के घरो को बरबाद किया जा रहा है। जिस जाट के घर मे पैसा हो उसीसे सारे गाव का लगान जबर-दस्ती ले लिया जाता है। घर का व खेती का सामान बरबाद किया जाता है और पीटा भी जाता है। सैकडो गिरफ्तार कर लिये गए हैं। खूब आतक जमाया जा रहा है।

जाटो के पच जयपुर गये थे। उनको तो अधिकारियो ने साफ जवाब दे दिया कि वेब साहब के पास जाओ, हम कुछ नही जानते। अब पजाब कौसिल के मेबर व जाटो के प्रतिनिधि श्री छोटूरामजी ता० ११ मई को प्रतिनिधि मडल के साथ जयपुर राज्याधिकारियो से मिलेंगे। कुछ समझौता होगा, ऐसी आशा तो कम ही है, पर सबकी नजर उधर ही लगी है।

ता० ३ को दिल्ली मे जो जाटो की कार्यकारिणी की सभा हुई, उसमें कुछ निश्चयात्मक प्रस्तावो के अलावा खास कोई बात नही हुई। श्री-रतनसिहजी और सीकर जाट-पचायत के सब पच ता० ५ को अजमेर मे एकत्रित हुए थे। इधर से पू० हरिभाऊजी, भाई रामनारायणजी, श्री व्यासजी, श्री शकरलालजी वर्मा, श्री देशपाडेजी और मैं—इतने आदमी उपस्थित थे। दिनभर काफी चर्चा हुई। श्री रतनसिहजी इस हलचल की पूरी जिम्मेदारी राष्ट्रीय कार्यकर्ताओ पर छोडने को तैयार हो रहे थे, तथा 'जाट आदोलन'—यह जातीय नाम मिटाकर—'किसान-आदोलन' करने को भी तैयार है। लेकिन इस बाबत उन्होने जाट-सभा से सलाह नही ली थी, इसलिए, तथा ता० ११ को क्या होना है, यह देखने व पू० बापूजी का और आपका क्या रुख है, यह जानने के लिए पूरी जिम्मे-दारी नही ली है। सिर्फ अभी तो उनको इतना ही कहा गया है, कि उन लोगो को समय-समय पर जब वे चाहेगे, हम सलाह देते रहेगे। पू० हरि-भाऊजी, भाई रामनारायणजी, श्री व्यासजी, व श्री शकरलालजी—इन चार आदमियो की सलाह से वे लोग काम करें, ऐसा विचार हुआ है। भाई

थी। पन्मो दुकान से तार आ गया, उसमें चिंता कम हुई। आशा है कि साप के काटने पर जो इलाज किया जाता है वह तुमने समझ तो लिया होगा। तुम अपने कार्यकर्ताओं को भी समझा देना कि साप काटने पर वैज्ञानिक तरीके से कैसे इलाज किया जाता है।

आशा है कि तुमने 'नवजीवन' कार्यालय को रुपये भेज दिये होंगे। मेरी समझ से तो वह एक 'बाईकाट कमेटी' के समय आये होंगे। उसका तो खाता अब नहीं रह गया है। अब तुम और पूनमचन्द जैसा मुनासिब समझो उस खाते में जमा दो।

दादा धर्माधिकारी के बारे में मेरी समझ तो थी कि उनको मेरी गैरहाजिरी में विनोबाजी से ठीक परिचय करने का मौका मिलेगा। परन्तु विनोबाजी तो अब तुमसर, कोल्हापुर इत्यादि स्थानों को गये होंगे।

दादा का किशोरलालभाई उपयोग करें इसमें तो मुझे कोई हर्ज नहीं मालूम होता। उनका परिचय किशोरलालभाई से करवा देना और तुमको और धोत्रे को उनके बारे में जो ठीक मालूम होगा वह भी किशोरलाल भाई से कह देना। वर्धा में वह कहा ठहरे है?

स्थायी समिति के कितने मेहमान आये थे और वह कबतक ठहरे थे? यदि हो सके तो उनके नाम लिखकर भेज देना।

कल श्री कमला नेहरू यूरोप जाने के लिए यहा से रवाना हो गईं। उनकी विदाई के समय का दृश्य बडा ही हृदयद्रावक था। एक तरफ तो श्री कमलाजी को ले जानेवाली मोटर खडी थी और दूसरी ओर जवाहरलालजी को जेल मे ले जानेवाली मोटर—बीच में उनकी माता व बहन खड़ी थीं। यदि कोई अच्छा कलाकार और लेखक होता तो इस दृश्य का एक सुदर वर्णन लिखा जा सकता था। प्राय सबकी आखों मे पानी आ गया। मैंने आखो में पानी नहीं आने दिया।

श्रीगंगादेवी के जाने की व्यवस्था बराबर हो गई होगी। जापा होने पर मुझे जरूर सूचना देना। मुझे इसकी चिंता रहती है। उन्हें भी कह देना कि खूब हिम्मत रखें और सच्चाई के जीवन के लिए ईश्वर से प्रार्थना करे।

जमनालाल का आशीर्वाद

मेरे पास किशोरलालभाई का पत्र आया है। मैंने उस पर भली प्रकार विचार किया है। कई कारणों से जयनारायणजी की व्यवस्था संघ की ओर से करना उचित नहीं होगा। जाट-आंदोलन की ओर से ही उनकी व्यवस्था होनी चाहिए। अभी तक हम लोग व 'गांधी-सेवा-संघ' इस आंदोलन से अलग हैं। सहायता करने पर अलग नहीं रह सकते हैं। जयनारायणजी का पत्र वापस भेज रहा हूं। यदि मगनभाई देसाई और विनोबाजी इन्हें सदस्य बनाने को तैयार हों तो इसमें मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

मेरी समझ में यदि सुजानचन्दजी की स्त्री को 'महिला आश्रम' में भरती कर लिया जाय तो अच्छा होगा। अब तो एक वर्ष की मर्यादा पूरी हो गई है, इसलिए कन्या आश्रम में भी कुछ लड़कियां ऐसी ली जा सकती हैं, जिनका आर्थिक बोझ ज्यादा न उठाना पड़े। तुम विनोबाजी और बापू-जी से बात कर सकते हो। यदि जयनारायणजी लड़कियों के लिए कोई खास योजना पढ़ाई के बारे में अपने पास भेजें और वह योजना ठीक मालूम पड़े तो उस पर महिला-मंडल की ओर से विचार किया जा सकता है।

श्री जुगलकिशोरजी की जो रकम आई है वह खासकर मंदिर, कुवा और हरिजनों के लिए है, इस बारे में तुम सूचना जरूर कर सकते हो। मैंने तो शायद तुमसे कहा भी था।

'गांधी सेवा संघ' के तुम्हारे सेवक बनने के बारे में थोड़ी शंका तो मुझे भी है। तुम इस बारे में किशोरलालभाई और बापूजी से मौका पड़े तो बात करना। बाकी मेरे वर्धा आने पर इसका निश्चय होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

१८६

वर्धा,
२६-६-३६

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारे, पू० विनोबाजी, चि० अनुसूया व मेरे नाम के पत्र मिले। बैठने आनेवाले हिम्मत नहीं टिकने देते यह बहुत ही दुख की बात है। बैठने आनेवालों की प्रथा तो इसलिए पड़ी कि दुख के समय अपने जितने

. १८७ .

मीरा सागर,
८-५-३९

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा २९-४ का पत्र मुझे ४-५ को मिला। कमल ता० २४ को टाड साहब से मिला। उसकी हकीकत तुमने लिखी थी। उनसे भी मालूम हुई। ता० ४ को मैं उनसे मिला था। दिल खोल कर बातें हुई। एक दूसरे का परिचय हो सका। मुझ पर यह असर तो जरूर हुआ कि यह सज्जन मेहनती तथा गरीब व पीडित जनता के लिए कुछ करने की इच्छा रखनेवाला है। परतु यहा की वर्तमान स्थिति मे जबतक नीचे से ऊपर तक दृष्टिविंदु व कार्य का ध्येय साफ होकर ठीक-ठीक परिवर्तन न हो, तबतक सतोषजनक परिणाम निकलना कठिन है। कमल से जो सूचना उन्होने की, वही मुझे भी की। वह मैं कैसे स्वीकार कर सकता था? मुझे इसमे प्रजा व राजा दोनो का हित नही मालूम देता। इन्हें प्रजा व राजा के सच्चे हितैषियो का परिचय होने मे या पता लगाने मे अभी बहुत देर लगती दिखाई देती है। क्योकि जिनके स्वार्थ मे हानि पहुचने का डर है, वे क्यो ऐसा करने देगे। उनका ध्येय न तो सचाई का है, न उन्हें राजा व प्रजा के हित की परवाह है। उन्हे तो अपने से मतलब है। जब इन्हें सच्चे व स्पष्ट बात करनेवालो की व जिनके हृदयो मे निस्वार्थ सेवा करने की लगन है, उनके सहयोग की आवश्यकता अनुभव होगी, तब जाकर कही हालत का सुधार होना शुरू होगा। मुझे तो भविष्य अच्छा ही दिखाई देता है। परमात्मा इन लोगों को भी सद्बुद्धि प्रदान करेगा, जिससे खरे-खोटे को भली प्रकार पहचान सके। मैं तो तुम्हे इतनी बाते लिखना भी नही चाहता था, परतु तुमने अपने पत्र मे कमल की मुलाकात की बात के साथ अन्य प्रश्न छेड दिये थे और वह पत्र मुझे अधिकारियो की मार्फत मिला, तब उनके जरिये ही यह खुलासा भेज रहा हू।

हा, यह बात तो ठीक है कि वर्तमान स्थिति मे मेरे स्वास्थ्य के बारे मे अखबारो मे ज्यादा चर्चा मैं पसद नही करता। मेरा स्वास्थ्य वैसे

मेम्बर या पदाधिकारी रह सकता है, (२) प्रवृत्तियों के बारे में हमें लोगों के पास जाने का, भाषण देने का व लोगों को समझाने का हक है। ध्येय हमारा लोकप्रिय सरकार था, परन्तु इसके आखीर में 'अल्टीमेट' (अंतिम) शब्द लगा देना पड़ा। अभी यहा पर वातावरण ठीक करने में लगा हुआ हू। आज श्री महाराजा साहब से मिलने के लिए जानेवाला हू।

पू० मा को प्रणाम कहना। उनका स्वास्थ्य अब ठीक होगा। तुम्हारा स्वास्थ्य भी ठीक होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

१८९

देहरादून,
२४-८-४१

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा आज का दिया हुआ तार यहा आज ही मिल गया। चि० जनू के लडका हुआ, पढकर विशेष खुशी नहीं हुई। मैं तो इस समय कन्या चाहता था। खैर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश—त्रिमूर्ति घर मे हो गई। चि० अनुसूया व बालक राजी होंगे। कोई तकलीफ नहीं हुई होगी। बालक का वजन कितना है?

मुझे यहा श्री आनन्दमयी मा के पास ठीक शान्ति मिल रही है। यहा का दृश्य व वातावरण भी सुदर है। एक सुदर व स्वच्छ पानी का छोटा-सा झरना बहता है। वहीं स्नान करता हू। बहुत वर्षों बाद यहा स्वभाविक जीवन व देहाती वातावरण मिल रहा है। तेल मालिश तथा मोटर-तागा आदि से छुट्टी मिल रही है। मैंने दामोदर की मार्फत 'माता आनन्दमयी की बात' नाम की पुस्तिका भिजवाई है, सो जनुसूया पढ लेना, जिससे इनका थोडा परिचय हो जायगा। यह दिन तो हू ही।

जमनालाल का

तो ठीक ही है। कोई सात-आठ रोज मे मेरे दाहिने घुटने मे दर्द रहने लगा है। उससे घूमना-फिरना बद हो गया है। दर्द के कारण चलने में थोडा कष्ट तो होता ही है। किंतु तुम्हे चिंता का कारण नही, मैं ठीक कर लूगा। इस प्रकार के अनुभव से एक प्रकार का लाभ ही होता है। मुझे कई बाते समझने व विचारने का मौका मिल जाता है।

आजकल यहा गरम लू चलने लग गई है। चारो ओर पहाड़ होने के कारण कल तो रातभर गरम हवा चलती रही। यह भी यहा की बहार है। दिन-दिन ज्यादा अनुभव मिलता जाता है। परतु तुम लोग अब इस स्थान मे ज्यादा थोडे ही रहने देनेवाले हो? पर मुझे तो इस स्थान से अब मोह बढ रहा है। अखबारो मे मैंने पढा कि सत्याग्रही छोडे जा रहे है। अच्छा तो यही हो कि जहातक अधिकारियो को पूरा सतोष न हो जाय वहातक मुझे यही रख छोडे। मैंने तो उन्हें कह दिया था कि मुझे इससे लाभ व शाति ही पहुच सकती है।

जमनालाल का आशीर्वाद

१८८

न्यू होटल, जयपुर,
२४-४-४०

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा ता० १६-४ का पत्र मिला। मै कल ही मोरासागर, गगापुर, हिण्डौन आदि के दौरे पर से लौटकर आया हू। १६ को बासा जाना है। वहा से २७ को सीकर जाऊगा और २८-२९ को वहा रहूगा। इसके बाद सभव है, एक दफा उदयपुर जाना पड़े। आगे का कार्यक्रम अभी तय नही है।

जयपुर का समझौता हो गया। मेरा स्टेटमेट अखबार मे तुमने पढा ही होगा। हमारी तीन शर्ते मान ली गई—(१) प्रजा-मडल का नाम वही रहेगा, (२) प्रजा-मडल का मेम्बर बाहरी राजनैतिक सस्था का

मेम्बर या पदाधिकारी रह सकता है, (३) प्रवृत्तियो के बारे मे हमे लोगो के पास जाने का, भाषण देने का व लोगो को समझाने का हक है। ध्येय हमारा लोकप्रिय सरकार था, परन्तु इसके आखीर मे 'अल्टीमेट' (अंतिम) शब्द लगा देना पड़ा। अभी यहा पर वातावरण ठीक करने मे लगा हुआ हू। आज श्री महाराजा साहब से मिलने के लिए जानेवाला हू।

पू० मा को प्रणाम कहना। उनका स्वास्थ्य अब ठीक होगा। तुम्हारा स्वास्थ्य भी ठीक होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

१८९

देहरादून,
२४-८-४१

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा आज का दिया हुआ तार यहा आज ही मिल गया। चि० अनू के लडका हुआ, पढकर विशेष खुशी नही हुई। मै तो इस समय कन्या चाहता था। खैर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश—त्रिमूर्ति घर मे हो गई। चि० अनुसूया व बालक राजी होगे। कोई तकलीफ नही हुई होगी। बालक का वजन कितना है?

मुझे यहा श्री आनन्दमयी मा के पास ठीक शांति मिल रही है। यहा का दृश्य व वातावरण भी सुदर है। एक सुदर व स्वच्छ पानी का छोटा-सा झरना बहता है। वही स्नान करता हू। बहुत वर्षो बाद यहा स्वभाविक जीवन व देहाती वातावरण मिल रहा है। तेल मालिश तथा मोटर-तागा आदि से छुट्टी मिल रही है। मैने दामोदर की मार्फत 'माता आनन्दमयी की बात' नाम की पुस्तिका भिजवाई है, सो अनुसूया पढ लेना, जिसमे इनका थोडा परिचय हो जायगा। यहा दिन तो हू ही।

जमनालाल का

: १९० :

गोपुरी, वर्धा
२७-११-४२

प्रिय राधाकृष्ण,

तुम्हारे पत्र मिले।

पूज्य बापूजी से तुम्हारे पत्र को लेकर चर्चा हुई थी। बालुजकर भी थे। बापूजी बकरी व भेड के दूध की छूट रखना उचित नही समझते[1]। उनकी दृष्टि इस बारे मे साफ है। मुझे भी यह छूट रखना पसद नही है, तो भी मैंने उनसे कहा कि बकरी की छूट रख देगे तो हमे एक बड़ा लाभ तो यह होगा कि आप हमारे सदस्य बन सकेंगे। उन्होने कहा यह ठीक है, परतु यह छूट रखना ठीक नही। ज्यादा तो तुम जब यहा आओगे तब समझ लेना, क्योकि मैंने विशेष चर्चा नही की।

बापू का विजयादशमी वाला कागज उन्हे किसी फाइल मे मिल गया है। वह दुरुस्त करके एक-दो रोज मे देनेवाले है। कल तक मिल गया तो इस बार के 'सर्वोदय' मे छप जाना सभव है।

तुमने श्री········ की योजना के बारे मे खुलासा किया सो ठीक। मेरा इनसे स्वभाविकतौर से ठीक परिचय बढता जा रहा है। रिषभदास से भी कहना कि इनमे शक्ति तो काफी है ही। बीच मे इधर से कुछ मन हटता हुआ मालूम दे रहा था। अब तो साफ हो गया है। मुझे आशा तो है कि इनकी शक्ति का ठीक उपयोग मिल सकेगा। हमे भी इनकी भावनाओ का खयाल तो करना ही होगा। तुम्हारे स्वभाव व कार्य-पद्धति मे भी थोड़ा फरक करना जरूरी दीखता है। वह हो जायगा।

राजस्थान चर्खा सघ की शाखा गोविदगढ से रीगस ले जाने मे मुझे दो बातो का विचार आता है। एक तो शायद वहा पर फिर काफी खर्च करना होगा—इमारतो आदि मे। धुलाई-रगाई की व्यवस्था वहा ठीक हो गई है। दूसरे, मै तो सीकर राज्य की अपेक्षा जयपुर राज्य मे सीधे काम होना ज्यादा ठीक समझता हू। बाकी श्री देशपाडे तथा वहा के कार्यकर्ताओ

1. गोसेवा संघ का सदस्य बनने के लिए।

को रीगस में सब तरह से जच जाय तो मुझे कोई खास आपत्ति नहीं है। पहले उन्होंने रीगस केन्द्र न रखकर गोविन्दगढ़ क्यों रखा था, इसका भी विचार करना चाहिए। जहां तक मुझे याद है कि मैं तो उस समय रीगस ज्यादा पसद करता था। इस बाबत आखिरी फैसला तो पूज्य जाजूजी के साथ ही होना ठीक रहेगा।

महिलाश्रम-परिवार के लिए श्रीदीक्षितजी को रख लिया है। यह भी उत्साही व जिम्मेदार मालूम देते हैं। इन्हें विचार-विनिमय के लिए राजस्थान में भी कुछ समय के लिए भेजा जा सकता है। बाकी तुम मेरे आने तक बात कर रखना। चि० रिषभदास तो तुम्हें लिखता ही रहता है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १९१ :

गोपुरी, वर्धा,
(१९४२)

चि० राधाकृष्ण,

तुम्हारा पत्र मिला। मेरा प्रोग्राम यहां पर ठीक चल रहा है। गो-सेवा के कार्य में काफी शांति और समाधान मिल रहा है, प्रेम भी बढ़ रहा है। यह जगह अच्छी निकली है। मुझे पसद भी है। जल्दी ही मिलने की आशा है। खरीदने की कार्यवाही के लिए मोतीलाल राठी बम्बई गया था, वह कर आया है। इस पर अब एक टिकाऊ-सी चीज बनवाने का विचार है, जो कि बरसात, गर्मी वगैरा में भी काम आ जाय। तुम्हारे वापस आने पर ज्यादा विचार होगा। यहां सब लोग अच्छी तरह से हैं। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। आशा है कि तुम लोगों का ठीक चलता होगा। श्रीजानकीदेवी को कह देना मैं पूरी तरह राजी हू। आजकल मेहमानों की खूब भीड़ हो रही है। दिसम्बर तक इसी प्रकार रहना सभव है।

जमनालाल का आशीर्वाद

गुलाबचंद बजाज की ओर से—

: १९२ :

धुलिया,
८-८-३८

पूज्य भाईजी,

सादर प्रणाम ।

मैं ता० २१ फरवरी को वर्धा मे पिकेटिंग करते पकड़ा गया । मुझे चार महीने सजा और २५०) रुपये दड हुआ। दड नही भरो तो १॥ महीने और । घर से दड वसूल करके ले गये । २) रुपये कम रह गये तो मुझे २ रोज ज्यादा रहना पडा। मै वर्धा की जेल मे ८ रोज रहा। वहा से नागपुर मोटर द्वारा भेज दिया गया । नागपुर मे अनुशासन अच्छी है। गाली-गलौज, मारपीट बिल्कुल नही। तमाम आफिसर लोग वहा के सुपरिटेंडेट जठार से डरते है । यहा चक्की और पानी खीचने का काम दिया । खाना न पचने से बीमार होकर हास्पिटल मे गया । वहा २४-२५ रोज रह कर २० रतल कम हुआ । वहा से जबलपुर बदली कर दी गई, रास्ते मे डब्बे मे ज्यादा आदमी बैठाने से हमने ७ दफे जजीर खेंची और २ घटे ग्राड ट्रक लेट कर दी । इस पर सारजेंट खूब बिगडा और हम लोगो की डंडो से खूब पूजा की ।

जबलपुर मे कर्नल खान सुपरिटेंडेंट थे । वहा तो तमाम आफिसरो ने पोपाबाई का राज्य देखा था, कोई भी खान से न डरते थे और अनुशासन का तो नामोनिशान नही था । जहा देखो गाली-गलौज, झूठ के सिवा काम नही । जुआ तो खुले आम खेलते है और बीड़ी-तमाखू खाते-पीते हैं। छोटे लडको को नचाते है और पैसे देते है । यहा की जेल मे तमाम दुबारे कैदी खास रखे गए है। हमारे साथ छोटेलालजी, तुकारामजी, वल्लभभाई, प्रभाकरजी, रामदेवजी आदि आश्रम के भाई थे और श्रीयुत तेजरामजी, मोतीलालजी, काशीनाथ, नाना लोटलीकर आदि वर्धा के खास-खास

कार्यकर्ता भी थे। जेल में वर्धा के कार्यकर्ताओं से अच्छा परिचय हो गया। नागपुर में तुकारामजी, वल्लभभाई और २०-२२ दूसरों को ड्रिल सिखाया करता था, पर १५ दिन बाद बंद कर दी गई। गीता का कुछ अभ्यास वल्लभभाई और छोटेलालजी के पास कर सका हूं।

आपका आज्ञाकारी,
गुलाब का प्रणाम

गोवर्धनदासजी जाजोदिया के साथ—

जावरा,
२-९-३८

: १९३ :

पूज्यवर,

इसके साथ एक पत्र भाई श्रीराधाकृष्णजी के नाम का भेजा है, इसे आप समय मिलने पर देख लें व उनको फिर प्रत्युत्तर के लिए दे दें। इस पत्र से आपको पता चल जायगा कि इनके द्वारा मुझे कितना मानसिक दुःख पहुंचा है। मैं जहांतक इनको समझ सका हूं, मैंने यही पाया कि इनमें विचार-शक्ति की कमी है, जिसके कारण यह किसी भी बात का पूरा अर्थ समझे बिना किसी को कुछ भी कह डालते हैं। इनके हाथ के नीचे और भी काम करनेवालों की इनके प्रति काफी शिकायतें सुनी हैं, लेकिन उन लोगों की हिम्मत नहीं कि वे कुछ कहें। वे सब सहन करते हैं। मैंने यह आपके द्वारा इसी विचार से भेजा है कि भविष्य में बंगले पर रहनेवाले दूसरे भाई के साथ ऐसा व्यवहार न हो।

मेरा स्वास्थ्य अब ठीक है। यहां आने के बाद २-३ दिन तो बुखार रहा, बाद में ठीक होने लग गया। कमजोरी बहुत मालूम होती है। अन्न तो १५ दिन में आज शुरू किया है। अभी १५-२० दिन तो पूरा आराम लेने का विचार है। मेरे भविष्य के लिए तो आप कुछ विचार करते ही होंगे। मैंने तो सब आप पर ही छोड़ दिया है।

पू० बआजी का इधर आने के संबंध में क्या निश्चय रहा। मैं व मेरी माताजी उनके साथ चल ही सकते हैं। उनको अब जल्दी ही भेज दें। मैंने अपनी स्त्री के हिस्टीरिया के संबंध में उसकी हिस्ट्री लिखी है; उसकी एक प्रति आपको देने के लिए श्री सागरमलजी को लिखा था, सो उन्होंने दी होगी। वह देख कर आप अपनी कुछ राय दे सकें तो मुझे काफी सहायता मिलेगी।

आपका बालक,
गोवर्धनदास का पावांधोक

: १९४ :

बंबई,
११-९-३८

प्रिय गोवर्धन,

तुम्हारा २-९ का पत्र व चि० राधाकृष्ण के नाम का पत्र यथासमय मिले। चि० राधाकृष्ण को तुम्हारा पत्र दे दिया गया है। तुम्हारा पत्र पढ़कर मुझे आश्चर्य होना स्वाभाविक था। यदि तुम्हारे दिल में कोई बात की शंका भी हो, तो तुम्हें चाहिये था कि आपस में फौरन उसकी सफाई कर लेते। इस तरह मन-ही-मन संकोच करने से गलतफहमी बढ़ती जाती है।

राधाकृष्ण तुम्हें पत्र लिखनेवाला है। जावरा में तुम लोगों को अच्छा मालूम हो रहा है, जानकर खुशी हुई।

मैं परसों यहां से शिमला जाने वाला हूं।

जमनालाल बजाज का आशीर्वाद

: १९५ :

वर्धा,
१९-११-४१

प्रिय गोवर्धन,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारा स्वास्थ्य पहले से अच्छा है लिखा, सो ठीक है।

चि० द्रौपदी के पति की तबीयत बहुत खराब है, डाक्टरों ने उन्हें टी० बी० बतलाया है, सो जानकर चिंता हुई। यह तो ठीक है कि पूरा अच्छा इलाज हुआ तो आराम अवश्य हो जायगा। उन्हें सेनेटोरियम में दाखिल करना भी आवश्यक है। खर्च के संबंध में लिखा सो जब विवाह हुआ था तब मैंने ऐसा सुना था कि उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी है। अब भी मेरी यह धारणा थी कि उनकी आर्थिक स्थिति बुरी नहीं है। किंतु अगर उनकी स्थिति ऐसी है कि वे इलाज का खर्च नहीं बरदाश्त कर सकते और वह सेनेटोरियम में रहने को आवें तो मैं उन्हें [illegible] मासिक भेजता रहूंगा। अगर एक-दो महीने में ठीक हो जाए तो बहुत अच्छी बात है, नहीं तो अगर उन्हें सेनेटोरियम में [illegible] [illegible]

पड़ा तो तबतक यह रकम मासिक भेजता रहूंगा। वह इसे कर्ज के रूप में समझें। अगर ठीक होने पर कमाई कर दे सकें तो वापस भेज दें। नहीं तो कोई चिंता रखने की जरूरत नहीं। उन्हें यह देना मुझे सेनेटोरियम से पत्र व रिपोर्ट भेजते रहें। मि० डोंगरी राजी होंगी।

जमनालाल का आशीर्वाद

प्रह्लादराय पोद्दार की ओर से--

· १९६ ·

कलकत्ता,
२२-१२-४१

पूज्य मामाजी,

आपका श्रीसीतारामजी के नाम का पत्र कल मिला। हम लोगों ने भी वर्धा का ही विचार किया था। गंगाबिसनजी को मकान के लिए पत्र भी दिया था। आप बारडोली गये होंगे यह सोच कर आपको नहीं लिखा। यहा सीतारामजी, मैं व पन्ना सिर्फ तीन जने रहेंगे। बाकी आधी दर्जन बानर-सेना को भगवानदेवीजी की कमांड मे ४-५ दिन के अंदर ही भेज देंगे। रवाना होने का तार दे देंगे।

परसो रंगून मे बम गिरने की खबर से लोगो मे ज्यादा घबराहट थी उस खबर के झूठ साबित होने मे लोगों मे थोड़ा धीरज आया है।

पाट का चालीसेक हजार मन का काम हुआ है। ७-८ हजार मन पाट बिकना बाकी है। वह परिस्थिति सुधरने पर बिकेगा। अभी तक की स्थिति तो यह है कि इस बाकी के पाट मे खास नुकसान न लगे त मेहनत-मजूरी निकल जायगी।

शेष सब ठीक है। आपकी तबीयत मे पहले से सुधार जानकर खुश हुई।

पूज्य मामीजी को प्रणाम कहे। पत्र देवे।

प्रह्लाद का प्रण

नर्मदा हिम्मतसिंहका के नाम—

: १९७ :

वर्धा,
५-११-३८

चि० नर्मदा,

तुम्हारा ता० १-११ का पत्र मिला। मै पवनार चला गया था। इसलिए तुम्हें पत्र देने मे विलब हुआ।

तुमने कलकत्ता जाने के बारे मे मेरी राय मागी है। मेरे खयाल से तो तुम्हारा कलकत्ता जाना ही ठीक होगा। अब कलकत्ता मे आबहवा भी सुधर गई है व मौसम अच्छा है।

देश जाने के बारे मे, मेरी राय से तो वहा जाना उचित नही है। तुम वहा की ठड बर्दाश्त कर नही सकोगी। साथ मे इस समय वहा अकाल पड़ा है। ऐसी हालत में तुम वहा जाकर क्या फायदा उठा सकोगी? बेहतर तो यही है कि थोड़े दिन तुम्हे पूना मे और रहना हो तो रहकर कलकत्ता चली जाओ।

चि० गजानन के स्वास्थ्य के बारे मे चिंता हो रही है। शीघ्र ही पत्र देकर उसके स्वास्थ्य समाचार देना। गुलाबबाई भी शायद यहा चली आवेगी। इन सब कारणो से देश जाने की राय नही होती है। चि० श्रीराम का स्वास्थ्य ठीक होगा तो उसे भी अब काम मे लग जाना चाहिए; जहा उसकी इच्छा हो।

कल मुझे ४९ वर्ष पूरे हो गए, पचासवा लगा है। केशर, गजानन वगरे से भी कह देना। तुम सब लोग परमात्मा से प्रार्थना करना कि वह सद्‌बुद्धि देवे व सचाई से सेवा कार्य कराता रहे।

जमनालाल के आशीर्वाद

अनुसूया बजाज के नाम—

: १९८ :

जयपुर स्टेट कैदी,
२९-५-३९

चि० अनुसूया,

आखिर तुम्हारे हाथ का ता० १९-५ का पत्र मिला। तेरी व खासकर चि० गौतम की याद आना तो स्वाभाविक है। मैंने तो सुना था कि तू जोधपुर विवाह मे जायगी और वहा से यहा आयगी। तब उम्मीद थी कि तुझे व गौतम को देखूगा। एक तरह से तो ठीक किया जो गौतम को लेकर गरमी मे इतनी लबी यात्रा नही की। गौतम अब राजी होगा। मेरी ओर से खूब प्यार करना। जानकी तो यहा आ ही गई हैं। उन्हे रोज मिलने की इजाजत मिल गई है। रोज मिल भी जाती है व खाने-पीने-बैठने के बारे में उपदेश, व्याख्यान दे जाती है। वह अभी जयपुर ही रहनेवाली है। चि० उमा भी यहा आनेवाली है।

पू० मा को प्रणाम कहना। उनकी याद मुझे प्राय रोज आती है। मै मन मे ही प्रणाम कर लिया करता हू। उनका तो आशीर्वाद है ही। उन्हें तकलीफ नहीं होने देना। कोई नौकर या बाई रखना हो तो रख लेना। मेरी चिंता करने का कारण नही। गोडे का दर्द कम होता जा रहा है। दवा चालू है।

पू० भाभी ने तो बडी बहादुरी की। चोर को खाली हाथ ही भगा दिया, कठी नहीं ले जाने दी। बिचारा कठी ले जाता तो बहुत दिनो तक वह तथा उसके घर के सारे लोग आशीर्वाद देते। खैर, अब तो शायद फिर हिम्मत भी नहीं करेगा और करेगा तो कठी के दर्शन तो उसे होने के नही। वहा जेवर, जोखम की चीज बिलकुल नहीं रखनी चाहिए।

बजाजवाड़ी में बड़ो को प्रणाम, बीचवालो को वदेमातरम्। ५ को व 'घनचक्कर क्लब' वालो को प्यार कहना। चि० दामू को

पहुंच गई होगी। अपनी मां से कहना मेरी शुभेच्छा व बधाई जना रखे। जानकी का मद्दी की शुभेच्छा मा आई, । श्रीगोमतीबहन से कहना अनसूया का छात्रवृत्ति मिली जानकर बहुत खुशी हुई। श्रीदमयन्ती बहन घर के काम व दादा के मेहमानों के कारण बीमार तो ज्यादा नहीं पड़ती है ना ? पोत्रे के यहां सब अच्छे होंगे।

श्रीकाशीनाथजी मेरा एक पत्र भूल गये है। यह उनके पास पहुंचा देना।

जमनालाल बजाज का आशीर्वाद

मीता झुनझुनूवाला की ओर से—

: १९९ :

वर्धा,
२०-४-३७

पूज्य ताऊजी,

सादर प्रणाम।

आपने मेरे विवाह के विषय मे विचार पूछे थे, सो निम्नलिखित है —

(१) लडका सुशील एव सुशिक्षित होना चाहिए। गरीब हो तो

शारीरिक सुख की उतनी आवश्यकता नही जितनी कि मानसिक शाति की।

(२) लडका अग्रवाल जाति का होना चाहिये, क्योकि मुझमे अभी तक दूसरी जाति मे विवाह करने की हिम्मत नही। मै अन्तर्जातीय विवाह को बुरा नही समझती, लेकिन मेरा मन अभी तक अंतर्जातीय विवाह के लिए तैयार नही।

(३) मेरे विचार से एक अशिक्षित लडका अपने से अधिक पढी हुई लडकी की शकाओं का समाधान नही कर सकता। पुरुष चाहे जहा जाकर अपनी शकाओ का समाधान कर सकता है। लेकिन एक स्त्री चाहे जहा अपनी शकाओ के समाधान के लिए नही जा सकती, क्योकि उसे अपनी एव कुल की आबरू रखना अत्यत आवश्यक है। हरेक जगह भले आदमी नही पा सकेगे। इसलिए लडकी को अपने से अधिक शिक्षित पति पाना मै आवश्यक समझती हू।

(४) लडका मिलने मे जितनी भी देरी लगेगी मै ठहरने के लिए तैयार हू। मेरी ओर से कुछ भी जल्दी नही।

आपकी आज्ञाकारी

पन्ना पोद्दार की ओर से—

: २०० :

बम्बई,
२६-२-३७

पूज्य ताऊजी,

सादर प्रणाम ।

आज ही मैं आपको पत्र दे रही हू और वह भी बहुत ही बुरा । शायद आपने कभी ऐसे बुरे पत्र की कल्पना भी नही की होगी । मेरा पत्र देख कर तो आपको खुशी होगी, पर पत्र पढते ही उसपर तुषार पड़ जायगा ।

आपको यह तो मालूम ही है कि मेरे और पू० भुआजी के बीच में कशमकश रहती है । यद्यपि मैं अपनी समझ मे कुछ भी नही बोलती और शायद वे भी कुछ नही बोलती, पर दोनो का ही मन एक-दूसरे की तरफ से साफ नही है, इसमे तो सदेह ही नही है । उनकी और मेरी बाते लिखने न लिखने से कोई होना-जाना नही है । मैंने जो निश्चय किया है और जो विचार मैंने बहुत दिनो से कर रखा है उसे पूरा करना चाहती हू । इससे भुआजी को सुख-शाति मिलेगी । मुझे भी कम-से-कम इस तरह रात-दिन चिंता मे नही घुलना पडेगा और न रोना पड़ेगा । पर मा, व बाबूजी को तो सदेह मे रखना ही पडेगा, नही तो उन लोगो को बहुत दुख होगा और वे लोग अपने इस दुख को सभाल नही सकेंगे और शायद इससे आपको भी कुछ आराम मिले ।

आपके सामने मैंने प्रतिज्ञा की थी कि मैं विना कुछ सोचे-विचारे मन के भाव आपको बता दिया करूगी । उसीके अनुसार मैं आपको अपने विचार लिख देती हू । आपकी इच्छा होगी वैसा ही करूगी, पर मैं अपने विचारो को नष्ट करना नही चाहती । उसमे आपकी इच्छानुसार काट-

छाट हो तो अच्छा है, पर आखिर मे आपकी ही इच्छा काम आयेगी। मैं सहते-सहते पागल-सी हो गई हू। अब मैं और नही सह सकती, न मुझे अपने ऊपर विश्वास ही है कि मैं अधिक सह सकूगी। कह नही सकती समय आने पर क्या हो जाय। मैं हम दोनो के स्वार्थ-हीन सच्चे प्यार को स्थायी रखना चाहती हू। मैं नही चाहती कि दुनिया की कोई भी चीज हमारे आपसी प्रेम मे कुछ फर्क पैदा करे। प्यार की इस सुदर कल्पना को ही मैं अपने जीवन की अमूल्य निधि समझ कर कही दुख-सुख से अपना जीवन बिता सकूगी। अब अधिक क्या लिखू। समझ मे नही आता, न लिखा जाता है। मैं चाहती हू कि मैं कलकत्ता चली जाऊ और वहा पर रहकर एक साल मे मैट्रिक की परीक्षा दे दू। इसमे लोगो को कहने के लिए रहेगा कि पढाई के लिए रहती है और मा बाबूजी भी यही समझेगे। बाबूजी खुश होंगे कि पन्ना पढना चाहती है। मुझे ऐसा विश्वास है कि मैट्रिक के बाद मुझे भी कही २०-२५ रुपया महीना मिल सकता है। मुझे आप वही ऐसी जगह भेज दें कि जहा पर कोई यह न जानता हो कि आप या बाबूजी मेरे कुछ लगते हैं। क्योंकि यह आप दोनो के लिए और मेरे लिए भी लज्जा की बात होगी कि उनके यहा की होकर इस तरह लड-झगडकर या रुपये पैदा करके पेट पालती है। मुझे शर्म भी आयेगी। इस तरह सबके लिए आराम रहेगा। मैं कही भी बाबूजी का अपमान नही देखना चाहती। मेरी वजह से उन्होंने बहुत कष्ट उठाया है। मेरा सुख-दुख ही उनका सुख-दुख है, यह मैं जानती हू। पर क्या उपाय ? आपको, बाबूजी, मा को कष्ट होगा इसीसे मैं आज तक कष्ट भोगती चली आई हू। पर अब मेरे धैर्य का बाध टूट गया। मैं असमर्थ हो गई। इसीसे मैं हाथ जोडकर, पावो को पकडकर आपके सामने प्रार्थना करती हू कि आप, जैसा मैंने कहा है, वैसा करे। मुझे मेरे आगे-पीछे आप लोगो के सिवा कोई नही दिखता। इन तीनो को कहने से इनको बहुत तकलीफ होगी। बाबूजी बहुत कोमल हृदय हैं। आपके सामने तो रात-दिन इस तरह की घटनाए आती रहती हैं, इससे आपको तो आदत हो गई है। यदि मेरे बच्ची न होती तो आपको इतनी तकलीफ करने की जरूरत न पड़ती। आपको सीधा मेरी मृत्यु का ही समाचार मिलता; पर बार

बच्चों का ख्याल आता है कि उसका क्या होगा। अब अधिक कुछ नहीं लिखती। पत्र पढ़कर फाड़ दें, कोई देखे नहीं। अब बंद करती हूं। अधिक नहीं लिखा जाता। आपने एक बार बचाया था। अबकी बार बचायें। उत्तर की प्रतीक्षा में हूं।

आपकी,
पन्ना

[सोलह]

काकाजी ने इन पत्रों में देश के अनेक महापुरुषों तथा घटनाओं का उल्लेख किया है। इन पत्रों को पढ़कर आजादी की लड़ाई के इतिहास के बहुत से अध्याय आंखों के सामने खुल जाते हैं।

इन सबके अलावा बहुत से पत्रों में दैनिक जीवन की समस्याएं उठाई गई हैं और उनका समाधान बताया गया है।

कुल मिलाकर इन पत्रों से काकाजी के कई रूपों के दर्शन होते हैं। वात्सल्य-पूर्ण पिता, जीवन-शोधक, सार्वजनिक नेता, बापू के मार्ग के पथिक आदि-आदि।

मुझे विश्वास है कि हर पाठक इस पुस्तक के अध्ययन से कुछ-न-कुछ जरूर पायगा और उसे अपनी कठिनाइयों को हल करने का रास्ता सूझेगा।

—कमलनयन बजाज

श्रीराम पोद्दार की ओर से—

: २०१ :

सीकर,
११-६-३५

पूज्य मामाजी,

सादर सविनय वंदन ।

आपका ता० ८ का पत्र प्राप्त हुआ । पू० नानीजी का स्वास्थ्य आशातीत सफलता में सुधर रहा है । खासी अभी निर्मूल नहीं हुई है । वैद्यजी का कहना है कि स्वास्थ्य लाभ में खासी अपने आप मिट जायगी । अस्तु !

यहां के राज्य की हालत अब दिन-ब-दिन सुधरने लगी है । बहुतायत में बड़े-छोटे अफसर बदल दिये गए हैं । रावराजाजी की ओर से निमले से आर्डर आया है कि पीड़ित जाटों को राज्य की ओर से सुख पहुंचाया जाय । इस फर्मान के अनुसार अथवा सीनियर की कृपा से बंदी जाट छोड़े जा रहे हैं, गावों में रोगी मनुष्यों के लिए डाक्टर आदि का प्रबंध किया गया है, स्कूल खोलने का प्रयत्न चल रहा है । अनुचित रूप से, राज्य की हिदायत के बिना जिन्होंने जाटों को सताया है, उन्हें उचित दंड देने का प्रबंध किया जा रहा है । आशा है राज्य अब समुचित ढंग से प्रजा में अमन-चैन कायम करने में प्रयत्नशील होगा ।

हमारा १५ दिन यहां और १५ दिन फतेहपुर रहकर जुलाई के प्रथम या द्वितीय सप्ताह में बम्बई जाने का प्रोग्राम निश्चित हुआ है ।

पूज्य नानीजी आपको आशीष लिखाती है । यहां सब प्रसन्न हैं । विशेष विनय,

बालक,
श्रीराम

परिशिष्ट

१–श्री जमनालालजी व श्रीमती जानकीदेवी बजाज के बीच हुआ पत्र-व्यवहार इस माला के चौथे भाग के रूप में प्रकाशित हो चुका है। उसमें जो पत्र लेने से रह गये थे, वे परिशिष्ट नं० १ में दिये गए हैं।

२–जिन लोगों के पत्र इस पुस्तक में संकलित हैं, उनके परिचय परिशिष्ट नं० २ में दिये गए हैं।

परिशिष्ट–१

मती जानकीदेवी बजाज के नाम—

: १ :

यरवदा मंदिर,
१-२-३३

जानकी,

मै यहा ता० २६ को ठीक १२ बजे पहुच गया था। यहा का हवा-
ी ठीक अनुकूल आ जायगा। मुझे इन पाच रोज मे बहुत ठीक मालूम
ा है। यहा डा० मेजर भण्डारी व डा० मेजर मेहता दोनो ने भली
ार मेरी जाच कर ली है। डा० मेजर मेहता मुझे रोज देखा करते
मुझे पूरा विश्वास होता है कि कुछ रोज मे ही यहा स्वास्थ्य उत्तम
जायगा। अभी तो मुझे बहुत ही हवादार खुली जगह मे रखा है,
ने को काफी सुंदर बड़ा मैदान है। दोनो ओर नीम के झाडों की
ार है। घूमते समय ठीक सुख मिलता है। खान-पान का तो यहा
म प्रबन्ध है। यहा के दोनो बडे अधिकारी पूरा विश्वास करते हैं कि
व मक्खन से लाभ होगा। पूज्य बापूजी से अभी तो एक ही बार
लवार को मिलाया था। सरकार मे लिखा-पढ़ी हो रही है। इजाजत
जायगी तो फिर ज्यादा मिलना हो सकेगा।

तुम्हारा व चि० मदालसा का स्वास्थ्य अब ठीक सुधरता होगा। मेरे
ने हसने-खेलने करने की आदत बढ़ाने की पूरी कोशिश रखो।
मे उत्तम इलाज तो यह है कि तुम सबको मन को मजबूत बनाकर
ंद मे रहने की आदत बढ़ानी चाहिए। मुझे बापूजी की खड़खड़ाहट
ते हुए जोर से हसने की आदत बढ़ानी है। इससे काफी फायदा
ेगा।

चि० कमल की पढाई की सन्तोषजनक व्यवस्था हो गई होगी नही तो जल्दी करवा देना ही उचित है। जब उसकी इच्छा है तो उसे सतोपकारक व्यवस्था कर ही देनी चाहिए।

और बालको की पढाई का इतजाम चि० राधाकिशन को कह देना, कि वह सन्तोपकारक कर ले। मैं तो यहां बैठा चिंता करना नहीं चाहता। मुलाकात ता० १० जनवरी के आसपास, यानी १० व १५ के बीच मे रख लेने का अभी तो मेरा विचार है। पहले तो हक भी नहीं है व आवश्यकता भी नही मालूम देती, सो खयाल रखना। उपरोक्त तारीखों में जो सुभीते की मालूम हो उस समय पहले से सुपरिटेंडेण्ट को लिखकर निश्चित कर लेना।

पूज्य बाऊ ताई को कह देना वह अन्ना साहब की बिलकुल चिंता न करें। सब व्यवस्था ठीक हो गई है और हो जायगी। उन्हें यहां ठीक लाभ पहुंचेगा। इलाज व खान-पान का ठीक इतजाम है। चि० शाता (सरयू) अब बिल्कुल ठीक हो गई होगी। उसको संभालते रहना व उसके खान-पान का खयाल रखना।

चि० शाता बम्बई से वर्धा रहने के लिए कब तक आने वाली है? वहं अपना महिला-आश्रम का काम कब से शुरू करनेवाली है? तुम विगतवार पत्र भेजो उसके साथ उसका पत्र भिजवा देना।

पूज्य मा को प्रणाम कहना और कह देना कि मेरी चिंता बिलकुल न करें। मै खूब ठीक होकर बाहर आऊंगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २ :

जयपुर स्टेट बंदी
१०-६-३९

प्रिय जानकी,

कल आनतपुर में भयंकर आग लग जाने के कारण भारी हानि हुई, ऐसा सुना है। मेरी समझ से प्रजा-मंडल के कार्यकर्ताओं का

संभव हो जाता है कि वहां मौका देखकर जितनी ज्यादा सेवा व मदद कर सके, ठीक ढंग से संगठित करके जल्दी करें। इस कार्य में अधिकारियों की पूरी मदद ली जा सकती है व उन्हें मदद दी जा सकती है। वहां की पूरी हालत से मैं वाकिफ होना चाहता हूं। मैंने अभी श्री यग साहब को भी पत्र लिखकर वहां की स्थिति पुछवाई है। दामोदर आया हो तो, या आ जाने पर उसे कह देना श्री यग साहब से परवानगी लेकर मुझसे एक बार मिल ले। तुम लोगों का आने-जाने का भी स्पष्ट खुलासा करके आर्डर ले ले, जिससे बार-बार गड़बड़ी न रहे, क्योंकि अब तो प्रश्न तुम्हारा व चि० उमा का रह जाता है। मीरा तो ता० १३ को जाने ही वाली है। एक या दो बार ही आ सकेगी। उमा के लिए सितार सिखाने वाले की व उर्दू या उत्तमा की तैयारी करने-वाले मास्टर की व्यवस्था करनी है सो जल्दी करवा देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ३ :

धुलिया जेल,
२३-९-३१

प्रिय जानकी,

दिनचर्या राधाकृष्ण के पत्र में लिखी ही है। तुम्हारी परीक्षा खतम हो जाने पर सविस्तर पत्र लिखना। अभी तो पत्र लिखने या पढ़ने में तुम्हारा समय लेना एक प्रकार से तुम्हें नापास होने में मदद पहुंचाना है। अगर तुम पास हो गई तो साहित्य सम्मेलन की परीक्षा की पद्धति-क्रम बदलना पड़ेगा। कुछ भी हो तुम्हारी लिखावट तो अवश्य सुधरती जा रही है। मुझे खुशी व थोड़ा आश्चर्य होता है तुम्हारी पढ़ाई की तैयारी व उत्साह देखकर। मैंने भी उर्दू सीखना शुरू किया है। आशा है एक महीना और अभ्यास चला तो मामूली पढ़ना-लिखना आ जायगा। चि० मदालसा, रामकृष्ण की पढ़ाई आदि की व्यवस्था पूज्य विनोबा की सलाह से कर लेना। श्री नाना वहां है ही। चि० राधाकृष्ण भी आ ही रहा है।

चि० कमल की पढ़ाई की सन्तोषजनक व्यवस्था हो गई होगी। नही तो जल्दी करवा देना ही उचित है। जब उसकी इच्छा है तो उसे सतोषकारक व्यवस्था कर ही देनी चाहिए।

और बालको की पढाई का इतजाम चि० राधाकिशन को कह देना, कि वह सन्तोषकारक कर ले। मै तो यहां बैठा चिंता करना नही चाहता। मुलाकात ता० १० जनवरी के आसपास, यानी १० व १५ के बीच मे रख लेने का अभी तो मेरा विचार है। पहले तो हक भी नही है व आवश्यकता भी नही मालूम देती, सो खयाल रखना। उपरोक्त तारीखो मे जो सुभीते की मालूम हो उस समय पहले से सुपरिटेंडेण्ट को लिखकर निश्चित कर लेना।

पूज्य बारु ताई को कह देना वह अन्ना साहब की बिलकुल चिंता न करें। सब व्यवस्था ठीक हो गई है और हो जायगी। उन्हें यहा ठीक लाभ पहुंचेगा। इलाज व खान-पान का ठीक इतजाम है। चि० शाता (सरयू) अब बिल्कुल ठीक हो गई होगी। उसको संभालते रहना व उसके खान-पान का खयाल रखना।

चि० शांता बम्बई से वर्धा रहने के लिए कब तक आने वाली है? वह अपना महिला-आश्रम का काम कब से शुरू करनेवाली है? विगतवार पत्र भेजो उसके साथ उसका पत्र भिजवा देना।

पूज्य मा को प्रणाम कहना और कह देना कि मेरी चिंता बिल्कुल न करें। मै खूब ठीक होकर बाहर आऊगा।

जमनालाल का वंदेमा[illegible]

: २ :

जयपुर स्टेट [illegible]
१०-९-[illegible]

जानकी,

[illegible] लग जाने के कारण भारी [illegible]
[illegible] से प्रजा-मण्डल के कार्यकर्ताओं [illegible]

[illegible]मुना

कर्तव्य हो जाता है कि वहा मौका देखकर जितनी ज्यादा सेवा व मदद कर सके, ठीक ढग से सगठित करके जल्दी करे। इस कार्य मे अधिकारियो की पूरी मदद ली जा सकती है व उन्हें मदद दी जा सकती है। वहा की पूरी हालत से मैं वाकिफ होना चाहता हू। मैंने अभी श्री यग साहब को भी पत्र लिखकर वहा की स्थिति पुछवाई है। दामोदर आया हो तो, या आ जाने पर उसे कह देना श्री यंग साहब से परवानगी लेकर मुझसे एक बार मिल ले। तुम लोगो का आने-जाने का भी स्पष्ट खुलासा करके आर्डर ले ले, जिसम बार-बार गडबडी न रहे, क्योकि अब तो प्रश्न तुम्हारा व चि० उमा का रह जाता है। मीरा तो ता० १३ को जाने ही वाली है। एक या दो बार ही आ सकेगी। उमा के लिए सितार सिखाने वाले की व उर्दू या उत्तमा की तैयारी करने-वाले मास्टर की व्यवस्था करनी है तो जल्दी करवा देना।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: ३ :

धुलिया जेल,
२३-९-३९

प्रिय जानकी,

दिनचर्या राधाकृष्ण के पत्र मे लिखी ही है। तुम्हारी परीक्षा खतम हो जाने पर सविस्तर पत्र लिखना। अभी तो पत्र लिखने या पढने में तुम्हारा समय लेना एक प्रकार से तुम्हें नापास होने मे मदद पहुचाना है। अगर तुम पास हो गई तो साहित्य सम्मेलन की परीक्षा की पद्धति-क्रम बदलना पडेगा। कुछ भी हो तुम्हारी लिखावट तो अवश्य सुधरती जा रही है। मुझे खुशी व थोडा आश्चर्य होता है तुम्हारी पढाई की तैयारी व उत्साह देखकर। मैंने भी उर्दू सीखना शुरू किया है। आशा है एक महीना और अभ्यास चला तो मामूली पढ़ना-लिखना आ जायगा। चि० मदालसा, रामकृष्ण की पढाई आदि की व्यवस्था पूज्य विनोबा की सलाह से कर लेना। श्री नाना वहां है ही। चि० राधाकृष्ण भी आ ही गया है।

चि० कमल की पढ़ाई की सन्तोपजनक व्यवस्था हो गई होगी
नही तो जल्दी करवा देना ही उचित है। जब उसकी इच्छा है तो उसे
संतोपकारक व्यवस्था कर ही देनी चाहिए।

और बालको की पढाई का इतजाम चि० राधाकिशन को क
देना, कि वह सन्तोपकारक कर ले। मैं तो यहां बैठा चिंता करना नही
चाहता। मुलाकात ता० १० जनवरी के आसपास, यानी १० व १५ के
बीच में रख लेने का अभी तो मेरा विचार है। पहले तो हक भी नही
है व आवश्यकता भी नही मालूम देती, सो खयाल रखना। उपरोक्त
तारीखों में जो सुभीते की मालूम हो उस समय पहले से सुपरिटेंडेण्ट को
लिखकर निश्चित कर लेना।

पूज्य बाऊ ताई को कह देना वह अन्ना साहब की बिलकुल चिंता न
करें। सब व्यवस्था ठीक हो गई है और हो जायगी। उन्हें यहा ठीक लाभ
पहुचेगा। इलाज व खान-पान का ठीक इतजाम है। चि० शाता
(सरयू) अब बिल्कुल ठीक हो गई होगी। उसको संभालते रहना व
उसके खान-पान का खयाल रखना।

चि० शाता बम्बई से वर्धा रहने के लिए कब तक आने वाली है?
वह अपना महिला-आश्रम का काम कब से शुरू करनेवाली है? तुम
विगतवार पत्र भेजो उसके साथ उसका पत्र भिजवा देना।

पूज्य मा को प्रणाम कहना और कह देना कि मेरी चिंता बिल्कुल न
करें। मैं खूब ठीक होकर बाहर आऊंगा।

जमनालाल का वंदेमातरम्

: २ :

प्रिय जानकी,

कल आसनपुर में भयंकर
... ऐसा सुना है। मेरी

विषय-सूची

परिशिष्ट–२

परिचय

(जिनके साथ हुआ पत्र-व्यवहार इस पुस्तक में संकलित है)

प्रथम खंड

कमला नेवटिया	श्री जमनालालजी की पहली पुत्री तथ श्री रामेश्वरप्रसाद नेवटिया की पत्नी
कमलनयन बजाज	श्री जमनालालजी के बड़े पुत्र
सावित्री बजाज	श्री कमलनयनजी की पत्नी
श्रीमन्नारायण	श्री जमनालालजी के दामाद
मदालसा अग्रवाल	श्री जमनालालजी की दूसरी पुत्री तथ श्री श्रीमन्नारायण की पत्नी
राजनारायण अग्रवाल	श्री जमनालालजी के दामाद
उमा अग्रवाल	श्री जमनालालजी की तीसरी पुत्री तथ श्री राजनारायण अग्रवाल की पत्नी
रामकृष्ण बजाज	श्री जमनालालजी के दूसरे पुत्र

द्वितीय खंड

श्री बच्छराजजी बजाज	श्री जमनालालजी के दादा (जिन्होंने जमनालालजी को अपनी विधवा पुत्र वधू के लिए गोद लिया था)
श्री कनीरामजी बजाज	श्री जमनालालजी के पिता
श्री गोपीकिशनजी बजाज	श्री जमनालालजी के चाचा : जी बजाज के छोटे भाई दूसरा बजाज के दत्तक पुत्र

चि० नर्मदा, उमा, श्रीराम की पढाई भी, उन्हें सतोषकारक हो, इस प्रकार करने का खयाल रखना। बाई केशर का शरीर-मन ठीक रहे इसका खयाल भी रखना।

जमनालाल का वन्देमातरम्

श्रीमती जानकीदेवी बजाज की ओर से—

: ४ :

२.१२.४१

पूज्य श्री

पत्र मिला। आपको अब के मेथी के लड्डू खिलाने वाले धन्वन्तरीजी वैद्य अच्छे मिले हैं। इनको तो फीस व सार्टीफिकेट दोनो ही देना चाहिये।

आप सेवाग्राम जाय तो अम्तुल के पास बापूजी की माला देखते आवे, और मेरी माला आपके तकिये के नीचे ही रहने दें। कभी नीद न आये या जब याद आ जाये तब फेर लिया करना। और खो न देना— बापूजी ने कहा था कि एक वार बेपरवाही से खो दोगी तो दूसरी नही मिलेगी। मेरी खान के हीरे तो आपने एक-से-एक देखे, पर खान में तो माटी ही होवे सो यह भी भगवान की मरजी।

जानकीनाथ की जय

परिशिष्ट–२

परिचय

(जिनके साथ हुआ पत्र-व्यवहार इस पुस्तक मे सकलित है)

प्रथम खंड

कमला नेवटिया	श्री जमनालालजी की पहली पुत्री श्री रामेश्वरप्रसाद नेवटिया की पत्नी
कमलनयन बजाज	श्री जमनालालजी के बड़े पुत्र
सावित्री बजाज	श्री कमलनयनजी की पत्नी
श्रीमन्नारायण	श्री जमनालालजी के दामाद
मदालसा अग्रवाल	श्री जमनालालजी की दूसरी पुत्री श्री श्रीमन्नारायण की पत्नी
राजनारायण अग्रवाल	श्री जमनालालजी के दामाद
उमा अग्रवाल	श्री जमनालालजी की तीसरी पुत्री श्री राजनारायण अग्रवाल की पत्नी
रामकृष्ण बजाज	श्री जमनालालजी के दूसरे पुत्र

द्वितीय खंड

श्री बच्छराजजी बजाज	श्री जमनालालजी के दादा (जि जमनालालजी को अपनी विधवा बधू के लिए गोद लिया था)
श्री कनीरामजी बजाज	श्री जमनालालजी के पिता
श्री गोपीकिशनजी बजाज	श्री जमनालालजी के चाचा : ब जी बजाज के छोटे भाई २-५ बजाज के दत्तक पुत्र

श्री धर्मनारायण जी अग्रवाल	श्री जमनालालजी के समधी; श्री श्रीमन्नारायण के पिता
श्री चिरंजीलालजी जाजोदिया	श्रीमती जानकीदेवी बजाज के बड़े भाई
श्री डेडराजजी खेतान	श्री जमनालालजी के बहनोई; बहन गुलाबदेवीजी के पति
श्री सीतारामजी सेकसरिया	श्री जमनालालजी के समधी; बहन केसरबाई पोद्दार के बड़े लड़के श्री प्रह्लादराय पोद्दार के श्वसुर
श्री लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार	श्री जमनालालजी के समधी; श्री कमलनयन व श्री रामकृष्ण के श्वसुर
श्री राधाकृष्ण बजाज	*श्री जमनालालजी के भतीजे*
श्री गुलाबचंद बजाज	श्री जमनालालजी के चचेरे भाई
श्री गोवर्धनदास जाजोदिया	श्री चिरंजीलाल जाजोदिया के बड़े पुत्र; श्रीमती जानकीदेवी बजाज के भतीजे
श्री प्रह्लादराय पोद्दार	*श्री जमनालालजी के भानजे;* बहन केसरबाई पोद्दार के बड़े पुत्र
श्रीमती पन्ना पोद्दार	श्री प्रह्लादराय पोद्दार की पत्नी
श्रीमती नर्मदा हिम्मतसिंहका	श्री जमनालालजी की भानजी; बहन केसरबाई पोद्दार की पुत्री
श्रीमती अनसूया बजाज	श्री राधाकृष्ण बजाज की पत्नी
श्रीमती सीता झुनझुनवाला	श्री जमनालालजी के चचेरे भाई श्री गंगाबिसन बजाज की पुत्री
श्री श्रीयम पोद्दार	*श्री जमनालालजी के भानजे;* बहन केसरबाई पोद्दार के छोटे पुत्र

मनालाल बजाज पत्नी श्रीमती जानकीदेवी व बच्चो के साथ सन् १९२२ के ल

बाए से दाए—मदालसा, कमलनयन, कमलाबाई व उमा

कमलाबाई नेवटिया के नाम—

: १ :

(१९३०)

चि० कमला,

तुम्हारी तबीयत ठीक रहती होगी। जितनी बातें व जितना त्याग दूसरों से कराने व परदा आदि छोड़ने की जो बातें दूसरों से तुमने कही, वे तुम्हें अपने जीवन में व्यवहार में लानी होगी। उसीमें तुम्हारी शोभा व सच्चाई है, और उसीमे तुम्हें सच्चा सुख व शान्ति मिलेगी। अब जो आगे प्रोग्राम हो, वह लिखती रहना। तुम्हारी माता का स्वास्थ्य भी सभालना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २ :

नासिक रोड जेल
(नवबर १९३०)

चि० कमला,

तुम्हारा ३-११ का पत्र मिला। समाचार पढ़कर सतोष हुआ। तुम व चि० मदालसा मिलकर सप्ताह मे एक बार अपने पूरे हालचाल का पत्र मेरे नाम का लिखकर बबई भेजा करो, जिससे तुम लोगो के काम का मुझे ठीक परिचय हो सके।

तुम व मदालसा दो बार स्त्रियो की सभा मे बोली थी, सो ठीक। पर बोलने के बदले सभा मे एकाध प्रभावशाली गीत गाने का अभ्यास तुम दोनो बहने रखो तो ज्यादा अच्छा रहे। जैसा मौका देखो वैसा किया करना। परदा-घूघट तो अब तुम्हे कभी करना ही नही होगा न? तुम अपने

मन की पूरी तैयारी कर लेना, फिर घरवालों की सहानुभूति मिलना कठिन नहीं रहेगा। 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' ऐसा हमें शोभा नहीं देता। हमें तो प्रत्येक को तुकाराम महाराज के कहे मुताबिक 'बोले वैसा चले' बनना चाहिए। जितनी बातें हम दूसरों को भलाई की बताते है, मौका पड़ने पर अगर हम वैसा न करें, तो उनका कोई महत्व ही नहीं रहता।

मुझे पूर्ण आशा है कि इस भ्रमण से तुम तीनों को खूब लाभ मिलेगा और अनुभव भी होगा जो भविष्य के जीवन में खूब काम आयेगा। सभ्यता, नम्रता, सेवा-भाव का बराबर खयाल रखना। सकोच की जरूरत नहीं, परन्तु जिसके घर ठहरना पड़े उसे कष्ट कम हो और उनके साथ विशेष प्रेम-सबध हो सके, इसका पूरा खयाल रखना। कलकत्ते में कुछ समय तक रहकर काम करने की तुम्हारी माता की जो इच्छा है, सो ठीक है। वहा जाने पर श्री भाई महावीरप्रसादजी पोद्दार, प्रभुदयालजी हिम्मतसिंहका आदि की सलाह से काम करना। थोड़े दिन ठहरना हो, तो खेतानों के यहा या सीतारामजी सेक्सरिया के यहा या महावीरप्रसादजी जहा ठीक समझें वहा ठहरना ठीक रहेगा। ज्यादा दिन रहना हो और महावीरजी को जच जावे तो अलग—स्वतन्त्र मकान लेकर रसोई आदि की अपनी स्वतन्त्र व्यवस्था करना जरूरी हो तो वैसा कर लेना। मेरी राय मे शुरू मे १५-२० दिन ठहरना काफी होगा। फिर जरूरत मालूम हो और मित्र लोग बुलावें तो फिर जा सकते है। फिर भी इस बारे मे मेरी राय का अधिक विचार न करके वहा की हालत व महावीरजी की राय को ही ज्यादा महत्त्व देना ठीक रहेगा। खर्च आदि के बारे में सकोच मत रखना। किसीसे रुपये उधार लेने पड़े तो लेकर, वर्धा या बंबई लिखकर उन्हें शीघ्र भिजवा दिया करना। खर्च का पूरा हिसाब लिख रखने की आदत बहुत लाभकारक होगी।

तुम्हारे भ्रमण के बारे मे ता० १८ को श्री बनारसीप्रसादजी मुझसे मिलने आनेवाले है। उनसे बात करने पर जो कहना होगा, सो उन्हे व चि० रामेश्वर को कह दूगा।

तुम प्रथमा मे दूसरी श्रेणी में पास हो गई, यह जानकर प्रसन्नता हुई। तुम अपना स्वास्थ्य खूब अच्छा रख सको तो मेरी इच्छा है कि तुम और

से ठीक तौर से पढ लो । तुम्हारे भविष्य के जीवन के लिए वह उपयोगी होगा ।

तुम्हारे प्रयत्न से जिन-जिन बहनों ने घूघट कभी भी नही निकालने का निश्चय कर लिया हो, उनके नाम-पते अपने पास लिख रखना । जो खादी पहनने का निश्चय करे, उनके भी । खादी की प्रतिज्ञा स्वराज्य की प्राप्ति तक से लेकर बाद मे देश के नेता कहे, वैसा खादी या स्वदेशी पहन सकते है । जो स्त्रिया खादी नही पहन सकती हो, वे विदेशी तो अवश्य बद करे, इसका खयाल रखना ।

इस भ्रमण मे तुमने पटना मे रमा के साथ मोटर चलाना सीखना शुरू किया था । वहा हाथ-पाव तुडवाकर बबई जाओगी तो तुम्हारी पूज्य सासूजी तुम्हारी व तुम्हारी मा की पूरी खबर लेगी और फिर कभी विश्वास नही करेगी । मै तो इसे पसद करता हू, पर पहली बार जोखिम मे पडना ठीक नही ।

मेरा मन व स्वास्थ्य खूब ठीक है । आजकल तो करीब ८४० तार सूत कातता हू । पीजना भी आ गया । पूनिया प्राय पीजकर बनाता हू । कई बार मित्र लोग भी बना देते है । तकली का अभ्यास बढाना है । मुकुदजी के ता० १८ को बाहर चले जाने पर रसोई बनाना सीखने का भी मौका मिल जायगा । समय खूब भरा हुआ रहता है । रात-दिन बहुत ही तेजी से बीत जाते है ।

मेरी समझ मे कमलनयन का राजपूताना या वर्धा मे काम करना ही ठीक है । इतने पर भी उसकी इच्छा हो और पूज्य जाजूजी की राय हो तो वहा बुलाना । बाकी तो बडे शहर में सगत का डर रहता हैं । वहा न बुलाना ही ठीक है ।

जमनालाल का आशीर्वाद

३

चि० कमला, (१९३१) ?

पत्र तुम्हारा मिला । तुम्हारा स्वास्थ्य अब बहुत ठीक है, पढकर सतोष हुआ ।

तुम आश्रमवासी बनने से डरती हो तो कम-से-कम योग्य व उपयोगी जीवन बिताने लायक तो तुमको बनना ही चाहिए। श्रीचन्द्रशेखर शास्त्री ने 'स्त्री के पत्र' नाम की अपनी पुस्तक मुझे भिजवाई थी। वह मैंने रेल में पढ़ी। पुस्तक अच्छी है। तुमको भेज रहा हू, तुम इसे भली प्रकार पढ़ो व तुम्हारी माता को भी अवश्य पढ़ाओ। इस पुस्तक में जिस प्रकार नलिनप्रभा व उसकी भाभी भुवनमोहिनी का चित्र खींचा है, वैसी तो तुम चाहो तो तुम व तुम्हारी माता दोनों बन सकती हो। अगर मन में निश्चय करलो तो उसमें ही तुम दोनों को भी खूब सुख मिलेगा व हम लोगों को भी पूरा सुख, समाधान व संतोष रहेगा। किताब पूरी तरह से पढ़कर तुम दोनों अपनी राय लिखना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ४ :

वर्धा, २२-२-३२

पू० काकाजी,

चरणों में प्रणाम। आपका ता० १२ का पत्र मिला। आपका स्वास्थ्य अच्छा होगा। कान में भी दर्द नहीं होगा। आप अपने स्वास्थ्य की पूरी संभाल रखें। कारण, जेल में तो यही काम है।

मा को ता० १७ को सवेरे ६ बजे के अदाज पकडकर ले गये। दूसरे दिन मुकदमा हुआ। छह मास की सजा और 'ए' क्लास दिया है। एक हजार रुपया जुर्माना किया है। मा को रखेंगे तो आराम से। आज मोटर-लारी से नागपुर ले गये है। कपडे और सामान जो जरूरी था, सो सब दे दिया था। सुनते है कि मा के ऊपर एक नौकरानी रहेगी। कमल-नयन से मदनमोहनजी मिल आये। 'सी' क्लास होने से कपडे वगैरे तो कुछ भी नहीं लेने दिये। पाच पौड वजन कम हुआ है। दो घंटा झाड़ू का काम लेते है। गुलाबचन्दजी कल पिकेटिंग करते समय पकड़े गये। यहा भी काम बहुत जोश से चल रहा है। बाबू (रामकृष्ण) को मास्टर १॥ घंटा घर पर ही पढाने आता है। मदालसा व उमा तो अभीतक कन्याशाला में ही है। सब प्रसन्न हैं। मेरी तबीयत भी अच्छी है।

आपकी भी जेल-बदली होगी, ऐसा सुना है। शांतिबाई ८-१० रोज हीं, आज वापस जा रही है। उन्होंने जाने की बहुत जल्दी की। दादीजी, बाजी, प्रह्लाद, नर्मदा, श्रीराम सब अच्छे है। मै अभी महीना, डेढ़-महीना तो और यही हू। कुछ काम हो तो लिखियेगा। मा के नाम का पत्र यहा भेजेगे तो वह नागपुर भेज देगे।

इस पत्र के साथ मा का भेजा एक पत्र भी है।

आपकी पुत्री
कमला

: ५ :

वर्धा, ९-७-३३

चि० कमला,

तुम्हारी हिम्मत व निश्चय पढ़कर सतोष व सुख हुआ।[1] मेरा तो पूरा विश्वास है कि तुम्हारी फालतू चर्बी कम होकर रक्त शुद्ध हो जायगा। तुम अपना जीवन नियमित रूप से बिताने का निश्चय कर लोगी, तो बिलकुल तदुरस्त होकर सुखी जीवन बिताते हुए थोड़ा सेवा-कार्य भी तुम कर सकोगी। आलस्य तथा लापरवाही निकल ही जानी चाहिए। परमात्मा ने किया तो तुम जल्दी ही नीरोग हो जाओगी। खूब हिम्मत व उत्साह से रहना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ६ :

(वर्धा, १३-७-३३)

चि० कमला,

तेरा उपवास खूब उत्साह और सतोषकारक चलता देखकर सुख होता है और ईर्ष्या भी होती है कि मै भी इसी प्रकार उपवास करके अपनी चरबी कम कर लू तो कितना अच्छा हो। खैर, तू तो नीरोग होकर खूब

---

१. स्वास्थ्य सुधारने के लिए कमलाबाई ने उपवास किये थे।

तेरा पत्र आजतक नहीं आया था, इससे मैंने भी तुझे पत्र नहीं लिखा। इन बार मैंने प्राय यही नीति रखी है कि जिसका पत्र आवे उसका जवाब तो आगे-पीछे दे दिया जाय, खुद होकर बने, वहा तक पत्र नहीं लिखता हू।

तुझे व्यापार में खूब रस आने लगा है, यह जाना। कमल को खूब धनवान बनाना चाहती हो? वह ज्यादा धनवान बन जायगा, तो फिर तुम लोगों में प्रेम व स्नेह नहीं रख सकेगा। प्राय धनवानो का, धन के साथ जैसे-जैसे प्रेम बढता जाता है, वैसे-वैसे घर-कुटुंबी तथा दुखी-गरीबो के साथ कम होता जाता है। तुम चाहो तो इसका पता लगा सकती हो।

क्या श्रीगोपाल का यूरोप जाने का निश्चय हो गया? कब जायगा? वहा की हालत तो अभी जाने लायक नहीं दिखाई दे रही है।

मेरे घुटने का दर्द मिटा नहीं है। अब बिजली का इलाज चालू हुआ है। सभव है, फायदा हो जाय। चिंता का कारण नहीं। मेरे पास विट्ठल रहता है।

चि० रामेश्वर के टामिल बढे हुए हैं तो निकलवा लेना ठीक रहेगा। उसकी छाती की भी पूरी जाच करवा लेनी चाहिए। वह अपने स्वास्थ्य की फिक्र कम रखता है। नियमित खान-पान व व्यायाम की ओर उसका ध्यान कम रहता है। मैं उसके पास कोई योग्य मददगार भेजना चाहता हू, जिससे उसे भी थोडा समय खेल-कूद, घूमने-फिरने का मिलता रहे। तुम भी ध्यान रखा करो। पर तुम खुद भी तो आलसी बन गई हो।

जमनालाल का आशीर्वाद

९

- जयपुर स्टेट-कैदी
३-८-३९

चि० कमला,

तुम्हारा २-२७ का तुम्हारी मा के नाम व मेरे नाम के पत्र मिले।

जिस पैर में टाके लगे है, उसी दाहिने पैर में दर्द रहता है। पहले ज्यादा हो गया था, अब कम होता जारहा है।

डा० शाह से तुमने बात की, वह मालूम हुई। मुझे इस कार्तिक शुक्ल १२ को पचास वर्ष पूरे होवेंगे।

नारायण तैल की जरूरत नहीं। यहा बहुत नामी वैद्य हैं।

तुम यहा सबों से मिल लीं, यह ठीक किया। श्री पार्वतीबाई से भी मौका लगे तो मिल लेना।

तुम्हारे यहा पहुचने का दिन व गाडी पहले से निश्चित करके मुझे व दामोदर को पोस्ट-कार्ड में, (क्योंकि वह नहीं हो, तो दूसरा कोई भी पढ ले) लिख भेजना, जिससे तुम्हारी मा को भी सीकर से लाना होगा तो आ जावेगी।

तुलसीदास (फिल्म) तुम अकेले देख आई, कुछ परिणाम हुआ क्या?

कमल परसो वर्धा गया। गुलाबबाई और उमा दो-तीन रोज मे मिलने आनेवाले है।

जमनालाल का आशीर्वाद

. १०

गोला, २-६-४१

पूज्य काकाजी,

सादर प्रणाम। आपका पत्र भी मिल गया था। बाद मे मदालसा का भी मिला। आपने ऐसी कमजोरी मे भी वर्धा मे ठीक आराम नहीं लिया, इसीसे पूज्य बापूजी ने आपको शिमला जाने की राय दी। दो महीने पहाड पर सिर्फ विट्ठल के साथ जरूर रह जाइये। मुझे तो पहले आपके शिमला जाने का मालूम नही था, इससे लिख दिया था। मैं तो दिल लगेगा तो महीने-डेढ महीने वर्धा रह लूगी, नहीं तो अगली गर्मियो मे देखा जायगा, मगर आप अपना प्रोग्राम दूसरो की वजह से न बदले। आपको तो काफी आराम की जरूरत है।

नासिक मे रहकर आप शायद विचार कर ले कि दो महीने यहा ही रह लिया जाय, पर नासिक मे आपको जरा भी आराम नही मिलेगा। बबई पास रहने से रोज लोगो के आने-जाने का ताता बना रहेगा। शायद

श्री बिडलाजी नासिक मे महीने-बीस दिन रहनेवाले हो और वह कह दे यही रह जाइये, तो आपका दिल हो जाय । इन बातो में आपका दिल बहुत नरम है। दो महीनो के लिए तो आप सबका मोह छोड दे । हम लोग तो सब वर्धा मजे मे रह लेगे। राजकुमारीजी के पास रहने से आपको अवश्य आराम मिलेगा । वहा जाकर भी अधिक मित्र न बनावे । इन बातो में आपका मन बहुत कच्चा है, सो अब पक्का बनाइये । आराम करने तो अकेले ही जाना चाहिए । ज्यादा लोगो को ले जाने से तो उल्टा उनके इतजाम का काम बढ जाता है। आपका और राजकुमारी बहन का खाना जम भी जायगा । उबले हुए साग वह भी खाती होगी । इसी-लिए इस समय तो आप अकेले ही जाइये ।

बम्बई आप राहुल से मिलने गये । वह अब काफी बदमाश हो गया होगा । मगर छोटे बच्चो का बदमाश होना ही अच्छा लगता है। कमल भी काफी शैतान था । बाई ता० १५ तक नागपुर पहुचेगी, तभी मैं भी वर्धा चली जाऊगी । आप अपने समय पर चले जाइये ।

कमला के प्रणाम

डा० शाह से तुमने बात की, वह मालूम हुई। मुझे इस कार्तिक शुक्ल १२ को पचास वर्ष पूरे होवेंगे।

नारायण तैल की जरूरत नही। यहा बहुत नामी वैद्य है।

तुम वहा सबो से मिल ली, यह ठीक किया। श्री पार्वतीबाई से भी मौका लगे तो मिल लेना।

तुम्हारे यहा पहुचने का दिन व गाडी पहले से निश्चित करके मुझे व दामोदर को पोस्ट-कार्ड मे, (क्योकि वह नहीं हो, तो दूसरा कोई भी पढ ले) लिख भेजना, जिससे तुम्हारी मा को भी सीकर से लाना होगा तो आ जावेगी।

तुलसीदास (फिल्म) तुम अकेले देख आई, कुछ परिणाम हुआ क्या?

कमल परसो वर्धा गया। गुलाबबाई और उमा दो-तीन रोज मे मिलने आनेवाले है।

जमनालाल का आशीर्वाद

. १० .

गोला, २-६-४१

पूज्य काकाजी,

सादर प्रणाम। आपका पत्र भी मिल गया था। बाद में मदालसा का भी मिला। आपने ऐसी कमजोरी मे भी वर्धा में ठीक आराम नहीं लिया, इसीसे पूज्य बापूजी ने आपको शिमला जाने की राय दी। दो महीने पहाड पर सिर्फ विट्ठल के साथ जरूर रह जाइये। मुझे तो पहले आपके शिमला जाने का मालूम नहीं था, इससे लिख दिया था। मै तो दिल लगेगा तो महीने-डेढ महीने वर्धा रह लूगी, नहीं तो अगली गर्मियों मे देखा जायगा, मगर आप अपना प्रोग्राम दूसरो की वजह से न बदलें। आपको तो काफी आराम की जरूरत है।

नासिक मे रहकर आप शायद विचार कर ले कि दो महीने यहा ही रह लिया जाय; पर नासिक मे आपको जरा भी आराम नहीं मिलेगा। शायद ... पास रहने से रोज लोगो के आने-जाने का ताता बना रहेगा।

श्री बिड़लाजी नासिक में महीने-बीस दिन रहनेवाले हो और वह कह दें यहीं रह जाइये, तो आपका दिल हो जाय। इन बातों में आपका दिल बहुत नरम है। दो महीनों के लिए तो आप सबका मोह छोड़ दें। हम लोग तो सब वर्धा मजे से रह लेंगे। राजकुमारीजी के पास रहने से आपको अवश्य आराम मिलेगा। वहां जाकर भी अधिक मित्र न बनावें। इन बातों में आपका मन बहुत कच्चा है, सो अब पक्का बनाइये। आराम करने तो अकेले ही जाना चाहिए। ज्यादा लोगों को ले जाने से तो उल्टा उनके इंतजाम का काम बढ़ जाता है। आपका और राजकुमारी बहन का खाना जम भी जायगा। उबले हुए साग वह भी खाती होंगी। इसी-लिए इस समय तो आप अकेले ही जाइये।

बम्बई आप राहुल से मिलने गये। वह अब काफी बदमाश हो गया होगा। मगर छोटे बच्चों का बदमाश होना ही अच्छा लगता है। कमल भी काफी शैतान था। बाई ता० १५ तक नागपुर पहुंचेगी, तभी मैं भी वर्धा चली जाऊंगी। आप अपने समय पर चले जाइये।

कमला के प्रणाम

डा० शाह से तुमने बात की, वह मालूम हुई। मुझे इस कार्तिक शुक्ल १२ को पचास वर्ष पूरे होवेंगे।

नारायण तैल की जरूरत नही। यहा बहुत नामी वैद्य है।

तुम वहा सबो से मिल ली, यह ठीक किया। श्री पार्वतीबाई से भी मौका लगे तो मिल लेना।

तुम्हारे यहा पहुचने का दिन व गाडी पहले से निश्चित करके मुझे व दामोदर को पोस्ट-कार्ड मे, (क्योकि वह नही हो, तो दूसरा कोई भी पढ ले) लिख भेजना, जिससे तुम्हारी मा को भी सीकर से लाना होगा तो आ जावेगी।

तुलसीदास (फिल्म) तुम अकेले देख आई, कुछ परिणाम हुआ क्या?

कमल परसो वर्धा गया। गुलाबबाई और उमा दो-तीन रोज मे मिलने आनेवाले है।

जमनालाल का आशीर्वाद

१०

गोला, २-६-४१

पूज्य काकाजी,

सादर प्रणाम! आपका पत्र भी मिल गया था। बाद मे मदालसा का भी मिला। आपने ऐसी कमजोरी मे भी वर्धा मे ठीक आराम नही लिया, इसीसे पूज्य बापूजी ने आपको शिमला जाने की राय दी। दो महीने पहाड़ पर सिर्फ विट्ठल के साथ जरूर रह जाइये। मुझे तो पहले आपके शिमला जाने का मालूम नही था, इससे लिख दिया था। मैं तो दिल लगेगा तो महीने-डेढ महीने वर्धा रह लूगी, नही तो अगली गर्मियो मे देखा जायगा, मगर आप अपना प्रोग्राम दूसरो की वजह से न बदले। आपको तो काफी आराम की जरूरत है।

नासिक मे रहकर आप शायद विचार कर ले कि दो महीने यहा ही रह लिया जाय; पर नासिक मे आपको जरा भी आराम नही मिलेगा। बबई पास रहने से रोज लोगो के आने-जाने का ताता बना रहेगा। शायद

श्री बिड़लाजी नासिक में महीने-बीस दिन रहनेवाले हों और वह कह दें यहीं रह जाइये, तो आपका दिल हो जाय। इन बातों में आपका दिल बहुत नरम है। दो महीनों के लिए तो आप सबका मोह छोड़ दें। हम लोग तो सब वर्धा मजे से रह लेंगे। राजकुमारीजी के पास रहने से आपको अवश्य आराम मिलेगा। वहां जाकर भी अधिक मित्र न बनावें। इन बातों में आपका मन बहुत कच्चा है, सो अब पक्का बनाइये। आराम करने तो अकेले ही जाना चाहिए। ज्यादा लोगों को ले जाने से तो उल्टा उनके इंतजाम का काम बढ़ जाता है। आपका और राजकुमारी बहन का खाना जम भी जायगा। उबले हुए साग वह भी खाती होंगी। इसी-लिए इस समय तो आप अकेले ही जाइयें।

बम्बई आप राहुल से मिलने गये। वह अब काफी बदमाश हो गया होगा। मगर छोटे बच्चों का बदमाश होना ही अच्छा लगता है। कमल भी काफी शैतान था। बाई ता० १५ तक नागपुर पहुंचेगी, तभी मैं भी वर्धा चली जाऊंगी। आप अपने समय पर चले जाइयें।

कमला के प्रणाम

कमलनयन बजाज के नाम—

११ . बम्बई, २४-८-२६

चि० कमलनयन,

तुम्हारा पत्र मिला । पत्र के अक्षर अगर तुम्हारे हों तो बहुत अच्छे समझना चाहिए । अगर तुम्हारे न हों, तो इस तरह से लिखना उचित नहीं है । अपने ही हाथ से चिट्ठी लिखनी चाहिए ।

एक घड़ी तुमको दी, सो तुमने तोड़ दी, इससे तुम अब घड़ी रखने के लायक नहीं दीखते । फिर भी यहां से कोई आनेवाला होगा, तो उसके साथ तुम्हारे लिए घड़ी भेज देंगे ।

तुमने क्या उन्नति की है, वह लिख भेजना । तुम्हारा मन किस बात में अधिक लगता है, लिखना । तुम्हारी माताजी व कमला वगैरा सब ठीक है । थोड़े दिन में सब आश्रम जायगे ।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १२ बबई, २५-१०-२६

चि० कमल,

आश्रम से तुमने अपनी माताजी को और बाई कमला को जो पत्र भेजे थे, वे उन्होंने मुझे यहा भेज दिये । तुम्हारे विचारो में उन्नति देखकर सुख हुआ, और आशा हुई कि तुम योग्य और होनहार बनोगे ।

पूज्य बापूजी (महात्माजी) यहा, दक्षिण अफ्रीका के डेपुटेशन से मिलकर गये । रविवार को आये थे । उन्हे पहुचाने हम लोग स्टेशन गये थे । लौटते समय हमारी मोटर दूसरी मोटर से जोरो से टकरा जाने का

र हो गया था। परन्तु हमारे ड्राइवर ने मोटर को एकदम मोड दिया जिससे हमारी मोटर जोर से गिरकर उलट गई। हमारी मोटर में सात आदमी थे। श्री केशवदेवजी (कमला के काका-श्वसुर), श्रीगोपाल, चि० गंगाबिसन, लालजी मेहरोत्रा, गिरधारी कृपलानी, ड्राइवर और मैं। परमात्मा की दया से और पूज्य बापूजी के आशीर्वाद से प्रायः सब बच गये। श्री केशवदेवजी को और मुझे थोडी चोट आई। मेरी छाती में अभी थोडा दर्द है। ४-५ रोज में ठीक हो जाने की आशा है। यहा से सम्भव हुआ तो तारीख २८ को आश्रम जाने का विचार है। तुम चिन्ता न करना।

पू० विनोबा और श्री कृष्णरावजी (नाना कुलकर्णी) का पूरा विश्वास प्राप्त करने में ही तुम्हारी बहादुरी और कल्याण है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १३ :

बंबई, २३-२-२७

चि० कमल,

तुम्हारा २१-२ का पत्र मिला। तुम्हारी माताजी के बवासीर का आपरेशन तारीख १७-२ को डा० दलाल की राय से करा लिया गया था। अब तबियत ठीक है। थोडा दर्द शेष है। ८-१० रोज में ठीक हो जायगा। तुम फिकर न करना। तुम्हारी आंख ठीक है, लिखा सो पढकर सन्तोष हुआ।

आश्रम के वातावरण के बारे मे लिखा, सो इस तरह घबराना नहीं चाहिए। तुम तो बहादुर हो। श्री धोत्रे से मिलकर अपने मन की शका का समाधान कर लेना। सभव हुआ तो बीच में एक बार मैं वर्धा आ जाऊगा। छुट्टियों तक तो तुम मन लगाकर पढते रहो। बाद में फिर विचार कर लिया जायगा।

पू० विनोबा, कुलकर्णी, धोत्रे जब वहा है, तो तुम्हें विशेष चिंता करने की आवश्यकता नहीं।

प्रामाणिकता से काम करते हुए या रहते हुए भी सच्चे-झूठे दोषारोपण कई बार सहन करने पड़ते हैं। आखिर में सचाई कायम रहती है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १४ :

पूना, १२-७-२७

चि० कमलनयन,

तुम्हारा एक भी पत्र अबतक नहीं मिला। आगे से इजाजत लेकर महीने में एक पत्र जरूर लिखा करना।

श्री घोत्रेजी के पत्र से मालूम होता है कि आजकल तुमको आलस्य आ जाता है। यदि ऐसा हो तो कोशिश करके तुम्हें आलस्य निकाल डालना चाहिए। काम में और पढ़ाई में ध्यान रखना चाहिए। उसीमें तुम्हारा कल्याण है।

मैं आज यहां आया हूं। दो-तीन दिन में बम्बई पहुंच जाऊंगा। आशा है, तुम अपने नियमित पठन-पाठन व उत्साही सेवा-भाव से पू० विनोबा तथा अन्य गुरुजनों का प्रेम संपादन करने में सफलता प्राप्त करोगे। यह बात तुम्हारे हाथ में है। तुम चाहो तो कर सकते हो। विश्वास और श्रद्धा रखनी चाहिए।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १५ :

२८-७-२७

पूज्य पिताजी से कमलनयन का पावाढोक वंचना। आपका पत्र मिला, पढ़कर आनंद हुआ। मेरी तबीयत ठीक है। मेरा चरखा अभीतक नहीं आया, इसका कारण क्या है, सो लिखना। मैंने भाई (घोत्रे जी) से कहा था कि एक चरखा आपकी पसंद का और उसके साथ ६ तकुवे और १२ चक्री लोहे की भेजना, तो उसका अभीतक पता नहीं। ये बने, उतनी जल्दी भेजने की कोशिश करना। मैंने सूत भेजा था, सो पहुंचा या नहीं,

खना। आप आगे कहा जाओगे और वर्धा कब आओगे, सो लिखना। पूज्य दाजी की तबीयत कैसी है सो लिखना। मेरा कार्यक्रम मा की चिट्ठी लिखा है। आप वर्धा आओ तो मेरे वास्ते सैंडो के डम्बल्स लेते आना और मके सब स्प्रिंग भी, नही तो भिजवा देना। अभी और तो कुछ नही ाहिए। मात्र इतना सामान जरूर भेजना। आपने जो मीराबेन को चट्ठी दी थी वह और ताऊजी को दी थी, वह उनको मैंने दे दी।

जब आपका पत्र आवेगा, तब उसका उत्तर देऊंगा।

आपका पुत्र
कमलनयन
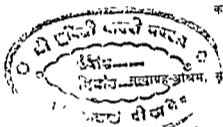
सत्याग्रह-आश्रम, साबरमती,
३-८-२७

चि० कमल,

तुम्हारा न मिलनेवाला पत्र मिलें, क्योंकि तुमने लिफाफे पर 'रामकुवर बजाज' कर दिया था। आश्रम में इस नाम का कोई आदमी न होने के कारण पत्र वापस कर दिया गया था। २-३ रोज बाद उसपर बजाज नाम और वर्धा की छाप देखकर आश्रम की डाक लानेवाले गजानन राव ने मुझसे पूछकर लिफाफा खोला, तो अंदर तुम्हारे लिखे अपनी माता के व मेरे नाम के पत्र निकले। लिफाफा तुम्हारे देखने को भेजा है। आशा है, अब भविष्य मे कम-से-कम ऐसी गलती तो नही करोगे।

तुम्हारे अक्षर तो मेरे से भी खराब हैं। पत्र भी शुद्ध लिखना नही आता। भविष्य में पत्र लिखा करो तो श्री धोत्रे या अन्य हिंदी-अध्यापकों से बराबर शुद्ध कराकर सुन्दर अक्षरों मे लिखने का अभ्यास करोगे, तो उत्तम पत्र लिखने की आदत पड जायगी। और वह तुम्हारे लिए जरूरी है।

चरखा यहा से मगाने मे क्या फायदा? यहा जिस प्रकार के चरखे है, वैसे तो वहा पर भी है। वहा तुमको चाहिए तो तैयार भी करा सकते हो

यहा से भेजने मे फिजूल रेल के ४-५ रुपये लग जायेंगे और रास्ते में खराब होने का डर भी रहेगा, इसलिए यहा से नही भेजेंगे।

चरखे के साथ तकुवे ६ व १२ चक्री साथ मगाईं, सो ये भी वही मिल सकेंगी। ऐसी वहा न मिलती हो और तुम दूसरी तरह की मगाना चाहते हो तो खुलासा लिखना।

तुम्हारा कार्यक्रम तुम्हारी माताजी की चिट्ठी मे पढा। अगर तुम नियमित रूप से उठकर उस मुताबिक कार्य पूरा कर सको तो बहुत सतोष होगा।

सैंडो के डंबल्स की जरूरत नही मालूम होती। अगर मगाना हो तो पू० विनोबा की परवानगी लेकर श्री धोत्रे की मार्फत मगवा लेना। इस प्रकार सीधे नही लिखना चाहिए। तुम्हे पू० विनोबा का व अन्य अध्यापक-वर्ग का पूर्ण प्रेम हासिल करना चाहिए। वह तभी हो सकेगा, जब तुम खूब मन लगाकर उत्साह से पढोगे व सब काम करोगे।

जमनालाल का आशीर्वाद

· १७ ·

लडी कोटल, १६-७-२९

चि० कमलनयन,

पेशावर से हम लोग आज यहा खैबर पास लडी कोटल देखते हुए आये हैं। यहा से आगे अफगानिस्तान की सरहद लगती है। यहा से काबुल शहर करीब १६० मील है। अफगानिस्तान की हद यहा से ६ मील है। यहा के लोग हमेशा लडने और मरने-मारने को तैयार रहते है। तुम साथ होते तो तुम्हें आनद आता। हम लोग आज यहा से लाहौर जायेंगे। वहा से दिल्ली व ग्वालियर होते हुए तारीख २० को वर्धा रात्रि के ७॥ बजे, नागपुर होते हुए पहुचेंगे। तुम्हारे लिए श्रीनगर के थोड़े फोटो लिये हैं।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च—अभी हमने काबुल (अफगानिस्तान) की हद देख ली। अमीर का सरहद पर का बगला भी देखा। —ज० ब०

: १८ :

नासिक रोड, सेंट्रल जेल
२२-७-३०

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला। तुम्हारी पढ़ाई की क्या व्यवस्था हुई? तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहता है, यह जानकर खुशी हुई। क्या तुम चि० रिषभदास को कामकाज में मदद किया करते हो? यदि नहीं करते तो करनी चाहिए।

चि० प्रह्लाद जल्दी ही बाहर आयगा। उसे विद्यापीठ से परवानगी मिल जाय तो कुछ रोज के लिए वर्धा जाना ठीक रहेगा। चि० गुलाबचंद को लिख देना कि काम छोड़कर मिलने आना ठीक नहीं रहेगा। मेरा स्वास्थ्य ठीक है। १२ अगस्त को आश्रम के बहुत से लोग छूटेंगे, तब शेष सब खबरें तुम लोगों को मालूम हो जायेंगी।

मैंने मुलाकात की तारीख ९ अगस्त (राखी-पूर्णिमा) रखी है। वर्धा से बाई केशर व गुलाब आयेंगी। बम्बई से तुम्हारी माता बाहर रहीं तो वह, नहीं तो जो आना चाहेंगे, वे आ सकेंगे। मेरा वजन इस समय १८३ रतल हुआ। इन १५ दिनों में सात रतल बढ़ा। दुकान से पत्र मुझे ता० २९ को रवाना करेंगे। उस समय तक जो समाचार लिखना हो, लिख भेजना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: १९ :

वरसोवा (बंबई)
२६-८-३१

चि० प्रह्लाद व कमलनयन,

हम लोग यहां वरसोवा, जो विलेपार्ले-अंधेरी के पास समुद्र-तट पर है, ता० २३ से एक बंगला किराये पर लेकर रहने आये हैं। यहां आने के बाद विश्राम ठीक मिल रहा है। घूमने-फिरने का भी आराम है। मैंने तो कुछ समय के लिए यानी सात रोज के लिए मोटर व रेल में न बैठने का

निश्चय किया है। इसमे भी शाति मिल रही है। जिन्हे मिलना होता है वे यही आ जाते है। जानकीदेवी का स्वास्थ्य भी सुधर रहा है। थोड़े रोज मे पूरी ताकत आ जाने की आशा है।

तुम दोनो के बारे मे पूज्य काका सा० से अवकी वार ठीक बातचीत होगई है। अव तुम दोनो अपनी दिनचर्या मुझे विस्तार से लिख भेजो, ताकि मुझे मालूम रहे कि पढाई कितनी देर व किस प्रकार की होती है। कौन पढाता है ? आलस्य कम हो रहा है या नही ? अगर होता है तो किस प्रमाण मे ? सभ्यता, व्यवहार दक्षता, सेवावृत्ति, प्रेमभाव, सचाई, नम्रता आदि मे उन्नति हो रही है या नहीं ? तुम दोनो को जो अनुभव जिस प्रकार होते हो,वे स्पष्ट और खुलासेवार अलग-अलग पत्र मे लिखकर एक लिफाफे मे वम्बई के पते से या वरसोवा, पोस्ट अधेरी के पते से लिख भेजना।

जमनालाल का आशीर्वाद

पुनश्च—

विनोद के लिए यह लिखा है। चि० रामेश्वरप्रसाद का छोटा भाई वालकृष्ण है, जिसकी उम्र करीव १०-११ साल की होगी। उससे आज विनोद मे बातें हो रही थी। उससे मैंने उसके घर के व अपने घर के बच्चो की वुद्धिमत्ता के बारे मे पूछा, तो उसने नीचे लिखे हुए क्रम के अनुसार नाम लिख दिये—

१	श्रीकृष्ण	१	मदालसा
२	शकरदेई	२	रामकृष्ण
३	वालकृष्ण	३	कमला
४	रामेश्वरप्रसाद	४	उमा
५	कमलनयन		

उसे पूछा गया कि कमलनयन का नबर आखिर मे क्यो ? तो उसने कहा कि उसमे सभ्यता बिल्कुल नही है और पढाई भी बहुत कम है। छोटे-छोटे बालक भी किस प्रकार राय बनाते है,यह जानने को तुम्हे लिखा है।

प्रहलाद, नर्मदा, श्रीराम आदि से पूरा परिचय न होने से वह उनके बारे में राय नही दे सका। इसपर मे तुम दोनो अपने तीनो कुटुम्बों के बालकों के बारे मे नवरवार अपनी राय लिख भेजना।—ज० व०

: २० :

बंबई, ८-८-३१

चि० कमल,

मैंने श्री वकील का पूना का स्कूल देखा। वह तुम्हें रखने में खुश थे। परन्तु खूब विचार करने के बाद मुझे तो यही लगा कि तुम्हारी अंग्रेजी की संतोषजनक पढ़ाई अलमोड़ा में श्री वालजीभाई के साथ रहकर ठीक से हो जायगी और तुम्हें भी उसमें शांति और सुख मिलेगा।

पू० बापूजी ने श्री वालजीभाई को लिखवाया है। तुम्हें वहां जाने के लिए गरम कपड़े वगैर यहां अथवा वहां बनाने पड़े तो बना लेना। [illegible] जाने पर साईकिल की जरूरत पड़े तो ले लेना। पू० बाबासाहब [illegible] [illegible] लेने की इजाजत दे तो उनकी ही मारफत मंगवा लेना। पर अगर तुम्हारा पूना ही रहकर पढ़ने का विचार हो तो मुझे स्पष्ट [illegible] लिख भेजना। वैसे पूना से अल्मोड़ा में ज्यादे-शांति की [illegible]

जमनालाल का आशीर्वाद

इनके साथ तीन-चार साल बिना किसी रुकावट के रहने को मिले, व साथ ही उन्हे वक्त हो, तो मैं अपनी पढ़ाई की तरफ से निश्चिन्त हो जाऊं। आपको भी विशेष चिंता न करनी पड़े।

पर अलमाड़ा मे यदि बालजीभाई चले गये तो फिर मेरी पढ़ाई पहले-जैसी अटक जायगी। इसीकी मुझे फ़िक्र है।

मेरी तो यह इच्छा है कि आप पूरे तीन साल या इससे ज्यादा पढ़ने का प्रबंध कर दे। फिर कोई भी विक्षेप न करे। पढ़ानेवाला भी निश्चिन्त होना चाहिए। अन्यथा इन चार-छह महीनों की पढ़ाई अगले चार-छह महीनों में भूलने की नौबत आ जायगी। आप कहेंगे कि मैंने तो इसका प्रबन्ध कई बार किया पर मेरे मन मे पढ़ने का शौक है ही नही।

श्री मथुरादासभाई आपसे मिले होंगे। मैंने पूरी तरह से उनको अपनी स्थिति बता दी है। वह भी महसूस करते है कि मेरे तात्कालिक पढ़ाई का प्रबंध ठीक नहीं है। एक जगह पर बैठकर पढ़ाई दो-चार बरस कुछ नियमित रूप से हो तो ज्यादा अच्छा। शायद आपको भी ऐसा ही लगता होगा।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। आपका नरम है, यह जानकर दु ख हुआ। मातावाई मजे मे होंगी। मैंने उन्हे पत्र दिया था, पर क्या जाने, उत्तर नहीं मिला।

पत्र दे। आपके अगले प्रोग्राम की नकल भेजे। कलकत्ता के 'एडवास' पत्र मे देखा था कि आप वर्धा करीब महीना रहेंगे।

हम सब यहा मजे मे है। आशा है वहा सब मजे मे होंगे व आपके फोड़े मिट गये होंगे। श्री बालजीभाई का पत्र व मेरा एक हफ्ते का समय-पत्रक साथ है।

कमलनयन के प्रणाम

. २४ .

वर्धा, २२-११-३१

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। पढ़ाई के बारे में तुम्हे अभी पूरा सतोष

: २२ :

कलकत्ता, १८-१०-३१

चि० कमलनयन,

तुम्हारा तारीख ८-१०-३१ का पत्र मिला। श्री वालजीभाई यहा आ गये, सो ठीक। तुम्हारी पढ़ाई चालू हो गई होगी। तुम्हें अब खूब मन लगाकर पढ़ना चाहिए। श्री वालजीभाई बड़े मास्टर है। उनकी परीक्षा में तुम्हें पास होने की तैयारी करनी चाहिए।

तुमने १००रु० मगाये, सो भिजवा दिये जायगे। रुपये तुम अपने नाम से न मगाकर श्री वालजीभाई के नाम से मगवाओ तो ज्यादा उचित होगा।

मै आज पुरी की तरफ जा रहा हू। तारीख १८ को यहा वापस आने का विचार है। तुम चाहो तो श्री वालजीभाई तुम्हें जी भरकर पढा सकेंगे। इस प्रकार के शिक्षक मिलना दुर्लभ है। आशा है, तुम उनका पूरा फायदा उठाओगे।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २३ :

अल्मोड़ा, १२-११-३१

पू० पिताजी,

आपका पत्र मिला। वर्धा के पते से भेजा हुआ मेरा पत्र आपको मिला होगा।

रुपयो के बारे मे लिखा, सो ठीक है। श्री वालजीभाई मेरा खर्च लेने से साफ इनकार करते है। मेरे पूछने पर नाराज भी हुए और कहा "तुम्हें उससे क्या मतलब! यदि मैं जमनालालजी के यहा जाऊगा तो क्या वह मुझसे खर्चा लेगे?"

खर्च के बारे मे आप ही उन्हे लिखे। पर शायद वह इस बात में आपकी भी न मानेगे। पू० बापूजी के कहने पर ही सब ठीक होगा। यह सब आप देख ले।

पढ़ाई तो ठीक चल रही है। इनकी पढाने की शैली अच्छी है। यदि

इनके साथ तीन-चार माल बिना किसी रुकावट के रहने को मिले, व साथ ही इन्हें वक्त हो, ता मैं अपनी पढाई की तरफ से निश्चित हो जाऊ। आपको भी विशेष चिंता न करनी पडे।

पर अलमोडा में यदि बालजीभाई चले गये तो फिर मेरी पढाई पहले-जैसी भटक जायगी। इसीकी मुझे फिक्र है।

मेरी तो यह इच्छा है कि आप पूरे तीन साल या इससे ज्यादा पढने का प्रबंध कर दे। फिर कोई भी विक्षेप न करे। पढानेवाला भी निश्चिन्त होना चाहिए। अन्यथा इन चार-छह महीनों की पढाई अगले चार-छह महीनों में भूलने की नौबत आ जायगी। आप कहेंगे कि मैंने तो इसका प्रबन्ध कई बार किया पर मेरे मन मे पढने का शौक है ही नही।

श्री मथुरादासभाई आपसे मिले होंगे। मैंने पूरी तरह से उनको अपनी स्थिति बता दी है। वह भी महसूस करते हैं कि मेरे तात्कालिक पढाई का प्रबंध ठीक नहीं है। एक जगह पर बैठकर पढाई दो-चार बरस कुछ नियमित रूप से हो तो ज्यादा अच्छा। शायद आपको भी ऐसा ही लगता होगा।

मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। आपका नरम है, यह जान कर दुःख हुआ। तातावाई मजे मे होंगी। मैंने उन्हे पत्र दिया था, पर क्या जाने, उत्तर नहीं मिला।

पत्र दे। आपके अगले प्रोग्राम की नकल भेजे। कलकत्ता के 'एडवास' पत्र मे देखा था कि आप वर्धा करीब महीना रहेगे।

हम सब यहा मजे मे है। आशा है वहा सब मजे मे होंगे व आपके फोडे मिट गये होंगे। श्री बालजीभाई का पत्र व मेरा एक हफ्ते का समय-पत्रक साथ है।

कमलनयन के प्रणाम

: २४ :

वर्धा, २२-११-३१

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिल गया था। पढाई के बारे मे तुम्हे अभी पूरा संतोष

नहीं हुआ तेरा मथुरादासभाई कहते थे। मुझे जिस प्रकार से ठीक हो सकता
है वह तो अब तुम्हें ही निश्चय करना चाहिए। श्री बालजीभाई-जैसे
विद्वान के साथ भी तुम्हारा पूरा संतोष नहीं हो सकता तो कैसे संतोष
होगा यह बात मेरी समझ में नहीं आती।

अगर अंग्रेजी पढ़नी है तो अंग्रेजी तुम्हारी कच्ची होगी। कोई भी
विद्वान् तुम्हें अपनी ताकत से विद्वान् नहीं बना सकता। मेरी
समझ तो यह है कि अब तुम श्री बालजीभाई पर पूरी श्रद्धा रखकर अंग्रेजी
का तथा कर्तव्य का ज्ञान ठीक तरह से प्राप्त कर लो। ज्यादा आलस्य और
प्रमाद में समय खोते हो तो वह थोड़ा कम कर दो। श्री मथुरादास-
भाई के कहने से तुम्हारा आलस्य कम हुआ मालूम होता है। अब तुम्हारे
लिए थोड़ी सख्ती का भी ख्याल करना जरूरी है। नहीं तो भविष्य में
तुम्हें दुःख होगा। यह बात मैं तुम्हें बराबर कहता आ रहा हूं।

आज मेरे ४२ वर्ष पूरे होकर ४३ वां वर्ष चालू हुआ है। परमात्मा
से प्रार्थना करता हूं कि वह मुझे सद्बुद्धि प्रदान करे व कर्तव्य का पालन
कराते रहे। तुम्हें आशीर्वाद भेजता हूं।

श्री बालजीभाई, प्रभुदासभाई, श्री वसुमतीबेन तथा अन्य मित्रों
को मेरा वन्देमातरम् कहना।

जमनालाल का आशीर्वाद

२५

वर्धा, ३-१२-३१

चि० कमल,

तुम्हारा अंग्रेजी का पत्र पढ़ा। आशा है, अपनी अंग्रेजी की पढ़ाई से तुम
संतुष्ट हो। भविष्य की चिंता-फिकर मत करो। अगर सत्याग्रह छिड़
गया तो जेल में या अन्य प्रकार से जो कुछ शिक्षण मिलेगा, वह मिलेगा ही।
नहीं तो तुम्हें जिससे संतोष होगा, वैसी व्यवस्था हो जायगी।

पुस्तकों की सूची बंबई जल्दी भिजवा देना। तुम्हारा यह लिखना
ठीक है कि कलकत्ते में उस समय इलाज करा लिया जाता तो ठीक रहता।
परन्तु जब अवधि आती है, तभी तो ऐसा होता है। तुम चिंता न करना।

जमनालाल का आशीर्वाद

बंबई, ४-१२-३
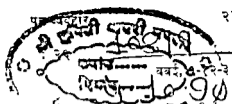
चि० कमल,

तुम्हारा ३-१२ का पत्र मिला। तुम्हारे ... ठीक जानी। घूमने में कुछ नियम रखना चाहिए। ऐसा नहीं कि एक दिन तीन मील तो दूसरे दिन तेरह मील। कोई एक मर्यादा रखनी चाहिए। पहाड़ पर ऊपर-नीचे के रास्ते पर मील के पत्थर तो शायद लगे नहीं होंगे और तुम तो इधर-उधर घूमते होगे, किसी खास रास्ते पर नहीं। फिर यह मील का ठीक-ठीक हिसाब कैसे लगाते हो? घूमने में कितना समय लगता है यह भी लिखा करो।

श्री वालजीभाई के साथ का खूब लाभ उठाना। इससे अच्छा सीखने के लिए और कोई मौका मिलना मुश्किल है।

अगर सत्याग्रह नहीं छिड़ा व श्री वालजीभाई इधर चले आये तो भी तुम्हारे शिक्षण की व्यवस्था सन्तोषजनक बनी रहे, ऐसा प्रबन्ध कर दिया जायगा। अभी जबतक वालजीभाई वहां पर हैं तबतक चिंता करने की जरूरत नहीं।

पू० बापूजी ता० २७ को आनेवाले हैं। वर्किंग कमेटी की बैठक अहमदाबाद में ३० तारीख को होगी। उस समय वहां जाना होगा। इमाम साहब (आश्रम वाले) का कल स्वर्गवास हो गया। पू० बापूजी से नहीं मिल पाये।

जमनालाल का आशीर्वाद

२७

(दिसंबर १९३...)

(पत्र अपूर्ण मिला है।)

अगर श्री वालजीभाई वहां नहीं आवें तो तुम अपनी पढ़ाई की व्यवस्था चि० प्रभुदासभाई से मिलकर जरूर कर लेना, जिससे ... में तुम्हें पूरा संतोष रहे।

श्री वसुमतीबेन का स्वास्थ्य कमजोर है। तुमसे हो सके तो ...

या करना अन्यथा कमजोर मन उन्हें कष्ट [illegible] न देना। मैं तो चाहता हूं कि [illegible] साथ रहना, उनके हृदय में अपने प्रति प्रेम पैदा कर सको, [illegible] हो इसकी बुद्धिमानी है। अब तुम्हें कम से कम व्यवहार में नम्रता [illegible] चाहिए। इसके बिना जीवन में कई प्रकार की अड़चनें [illegible] जाना संभव है। तुमको इस उमर में व्यायाम-प्राणायाम, [illegible] घूमने- [illegible] में या आश्रम में ही रहना चाहिए। पू० बापूजी की बातों का तो [illegible] हो गये।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २८ : बंबई, ५-१-३२

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला। आज तुमको तार दे दिया है।

पू० बापूजी, सरदार वल्लभभाई और श्री राजेंद्रबाबू तो पकड़े ही गये हैं, वर्किंग कमेटी भी गैरकानूनी करार दे दी गई है। मैं किसी भी समय पकड़ा जा सकता हूं। वैसे आज डाकगाड़ी से वर्धा जाने का विचार कर रहा हूं। वहां तक जाने दिया जाऊंगा या नहीं, यह बात दूसरी है। श्री जानकीदेवी और चि० रामकृष्ण भी मेरे साथ वर्धा जानेवाले हैं।

युद्ध शुरू हो गया है। तुम श्री बालजीभाई के कहने के अनुसार काम करना। उत्साह रखना। सिर्फ जोश में आकर कोई काम न करना। जो कदम उठाओ, खूब सोच-समझकर उठाना, ताकि वह फिर पीछे न रखना पड़े। तुम किसी बात की चिंता मत करना।

मेरा स्वास्थ्य साधारणतया ठीक है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: २९ : धूलिया-जेल, १८-४-[illegible]

चि० कमल,

आशा है, मेरा भायखला जेल से लिखा हुआ पत्र तुम्हें मिला होगा।

मेरा मन और स्वास्थ्य ठीक है।

यहा पू० विनोबा के साथ दोनों समय प्रार्थना आदि में अच्छी तरह समय निकल जाता है। तुम अपना जीवन पवित्रता व विनम्रता के साथ बिताने का खयाल रखना। जेल मे जहा तक हो सके, भूख हडताल नहीं करनी चाहिए। इसका खयाल रखना। अपना स्वाभिमान तो रखना ही चाहिए। आशा है, हम लोग साथ ही बाहर आ जायेंगे।

तुम्हारी माता नागपुर मे ठीक है। वर्धा मे सब आनन्द मे है। तुम्हे समय मिले तो अभ्यास बढाते रहना। छूटने पर वर्धा आने का ख्याल रखना।

जमनालाल का आशीर्वाद

. २० .

अल्मोडा, ६-५-३३

चि० कमल,

तुम्हारी अंग्रेजी व अक्षरो के बारे मे चि० धन्नू ने तुम्हे लिखा ही है। चि० धन्नू मुझे यहा आशा से ज्यादा काम दे रहा है। मुझे उसके काम से सतोष है।

आशा है, महाबलेश्वर मे तुम्हारा आलस्य चला गया होगा। चि० रामकृष्ण वहा नहीं पहुचा होगा। मैने आज बम्बई लिखा है कि श्री घोत्रे वहा आनेवाले है, तो उनके साथ यहा भेज दें। वहा तुम्हारे पास पहुच गया हो, तो फिर यहा आने की जरूरत नही रहती।

श्री पदमजी के कुटुंब का मोटर-एक्सीडेंट का समाचार पढकर दु:ख हुआ। श्री पद्मजी को मैं जानता हू। तुम मेरी ओर से भी समवेदना उनके घरवालो के समक्ष प्रकट करना। बडी रोमाचकारी दुर्घटना हुई।

अल्मोडा जेल बाहर से तो श्री बदरीदत्तजी पाडे ने यहा आते समय दिखा दी थी। जहा-जहा तुम रहे हो, वे सब स्थान देखने की इच्छा तो है।

तुम्हारा हिसाब बराबर नहीं है। ९० रु० श्री वकील ने जो तुम्हारे नामे डाले है, वे तुमने जमा नही किये। सो अभी से हिसाब बराबर रखने की आदत डालना बहुत जरूरी है।

श्री वकील व उनकी धर्मपत्नी को मेरा वदेमातरम् कहना।

श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला (श्री भाई घनश्यामदासजी के लडके) वहा है। उनकी पत्नी श्री सुशीलादेवी का स्वास्थ्य कैसा है ? वहा जाने से उन्हे क्या फायदा हुआ ? वह बराबर जानकारी लेकर मुझे अवश्य लिखना। मुझे इस लडकी के स्वास्थ्य की थोडी चिता रहती है। चि० शातावाई के पिता भाई सूरजमलजी का देहात होगया, यह तो तुम्हे मालूम हुआ ही होगा। तुमने पत्र भी भेजा होगा। चि० नानू को आशीर्वाद कहना।

उपवास के समय पू० वापूजी के पास जाकर उन्हे कष्ट मत देना।

यहा इस वर्ष बारिश ज्यादा पड रही है, जिससे सरदी भी ज्यादा है। इसमे घूमना-फिरना भी कम हो पाता है। तुम वहा का पूरा वर्णन अंग्रेजी मे लिखने का बराबर खयाल रखना। चि०धन्नू की चिट्ठी से घबराना मत।

चि० उमा का ठीक विकास हुआ है। मुझे इसके बारे मे थोडा असतोष रहता था। अब इसे देखकर सतोष हुआ। आशा है, यह भी होनहार लडकी तैयार हो सकेगी। अब तो चि० रामकृष्ण की ही थोडी फिक्र है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३१ :

शैल आश्रम, अल्मोडा
२३-५-३३

चि० कमल,

तुम्हारा बवई से लिखा पत्र मुझे यहा १९ तारीख को मिला।

चि० रामकृष्ण का स्वास्थ्य सुधरा है, ऐसा तुम्हें भी महसूस होता होगा।

मुझे हमेशा तुम्हारे आलस्य व लापरवाही के स्वभाव की थोड़ी चिंता रहा करती है। बाकी तो सतोष है। चि० रामकृष्ण के कारण भी तुम्हे अपना आलस्य हटा देना चाहिए, जिससे उसमे आलस्य की आदत न पडने पाये। मेरा यह अनुभव व विश्वास हो गया है कि जिस किसी के शरीर में आलस्य भरा हो या जिसकी लापरवाही के कारण आलस्य की आदत पड गई हो, वह कभी भी जवाबदारी का सुसस्कारक जीवन नही बिता सकता। मेरा बालकपन से लाड़-चाव के कारण शरीर स्थूल

...ती था, परन्तु मैंने हमेशा पूरा उद्योग करके बालकपन से ही अवास-
...ों का जीवन बिताने की कोशिश की। उसका मुझे अब प्रत्यक्ष
...भ व सुख मिल रहा है।

जमनालाल का आशीर्वाद

३२

पूना, ३०-५-३३

...० कमल,

तुम्हारी तारीख २८-५ की चिट्ठी व श्री वकीलजी की चिट्ठी कल
...ली।

प्रार्थना के बाद दोपहर का १२-२५ पर पू० बापूजी ने नारंगी के
... से उपवास तोड़ा। वह कमजोर व थके होने पर भी प्रसन्न थे। डाक्टरों
...न्हें कम-से-कम दो सप्ताह तक पूर्ण विश्राम लेने को कहा है।

करीब दो सप्ताह तक मेरा कार्यक्रम पूना व बंबई के बीच में अनिश्चित
...गा। तुम श्री वकील को कह देना कि वह जल्दी न करें बल्कि तारीख ५
... जब तुम लोग यहां आ जाओगे तब उनसे मिलकर बातें हो जायेंगी।

तुम वहां पर लक्ष्मीनिवासजी बिड़ला से मिले होगे, न कि 'लक्ष्मी
...रायणजी बिड़ला से, जैसा कि तुमने चिट्ठी में लिखा है।

हिसाब के बारे में समक्ष मिलो, तब तुम अपना खुलासा मुझे
...मझाना।

जमनालाल का आशीर्वाद

३३

वर्धा, ३१-१०-३३

...य कमल,

तुम्हारा २१ ता० का पत्र मिला। मैं इन दिनों काफी व्यस्त रहा।
...दनमोहन ने तुम्हारे स्कूल की पुस्तिका मेरी फाइल में रख दी है, जब समय
...मिलेगा तब देखूंगा।

श्री लक्ष्मीनिवास बिड़ला (श्री भाई घनश्यामदासजी के लडके) वहा है। उनकी पत्नी श्री सुशीलादेवी का स्वास्थ्य कैसा है ? वहा जाने से उन्हे क्या फायदा हुआ ? वह बराबर जानकारी लेकर मुझे अवश्य लिखना। मुझे इस लडकी के स्वास्थ्य की थोड़ी चिंता रहती है। चि० शांताबाई के पिता भाई सूरजमलजी का देहान्त होगया, यह तो तुम्हे मालूम हुआ ही होगा। तुमने पत्र भी भेजा होगा। चि० नानू को आशीर्वाद कहना।

उपवास के समय पू० बापूजी के पास जाकर उन्हे कष्ट मत देना।

यहा इस वर्ष बारिश ज्यादा पड रही है, जिससे सरदी भी ज्यादा है। इससे घूमना-फिरना भी कम हो पाता है। तुम वहा का पूरा वर्णन अंग्रेजी में लिखने का बराबर ख्याल रखना। चि०मदू की चिट्ठी से घबराना मत।

चि० उमा का ठीक विकास हुआ है। मुझे इसके बारे में थोडा असंतोष रहता था। अब इसे देखकर संतोष हुआ। आशा है, यह भी होनहार लडकी तैयार हो सकेगी। अब तो चि० रामकृष्ण की ही थोडी फिक्र है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३१ :

शैल आश्रम, अल्मोडा
२३-५-३३

चि० कमल,

तुम्हारा बबई से लिखा पत्र मुझे यहा १९ तारीख को मिला।

चि० रामकृष्ण का स्वास्थ्य सुधरा है, ऐसा तुम्हें भी महसूस होता होगा।

मुझे हमेशा तुम्हारे आलस्य व लापरवाही के स्वभाव की थोड़ी चिंता रहा करती है। बाकी तो संतोष है। चि० रामकृष्ण के कारण भी तुम्हे अपना आलस्य हटा देना चाहिए, जिससे उसमें आलस्य की आदत न पडने पाये। मेरा यह अनुभव व विश्वास हो गया है कि जिस किसी के शरीर में आलस्य भरा हो या जिसकी लापरवाही के कारण आलस्य की आदत पड गई हो, वह कभी भी जवाबदारी का सुखकारक जीवन नही बिता सकता। मेरा बालकपन से लाड-चाव के कारण शरीर स्थूल

व उत्साही था, परन्तु मैंने हमेशा पूरा उद्योग करके बाल्यकाल में ही जवाबदारी का जीवन बिताने की कोशिश की। उसका मुझे अब प्रत्यक्ष लाभ व सुख मिल रहा है।

जमनालाल का आशीर्वाद

३२

पूना, ३०-५-३३

चि० कमल,

तुम्हारी तारीख २८-५ की चिट्ठी व श्री वकीलजी की चिट्ठी कल मिली।

प्रार्थना के बाद दोपहर को १२-२५ पर पू० बापूजी ने नारंगी के रस से उपवास तोड़ा। वह कमजोर व थके होने पर भी प्रसन्न थे। डाक्टरों ने उन्हें कम-से-कम दो सप्ताह तक पूर्ण विश्राम लेने को कहा है।

करीब दो सप्ताह तक मेरा कार्यक्रम पूना व बंबई के बीच में अनिश्चित रहेगा। तुम श्री वकील को कह देना कि वह जल्दी न करें बल्कि तारीख ५ को जब तुम लोग यहां आ जाओगे तब उनसे मिलकर बातें हो जायंगी।

तुम वहां पर लक्ष्मीनिवासजी बिड़ला से मिले होंगे, न कि लक्ष्मीनारायणजी बिड़ला से, जैसा कि तुमने चिट्ठी में लिखा है।

हिसाब के बारे में समक्ष मिलो, तब तुम अपना खुलासा मुझे समझाना।

जमनालाल का आशीर्वाद

३३

वर्धा, ३१-१०-३३

प्रिय कमल,

तुम्हारा २१ ता० का पत्र मिला। मैं इन दिनों काफी व्यस्त रहा। मदनमोहन ने तुम्हारे स्कूल की पुस्तिका मेरी फाइल में रख दी है, जब समय मिलेगा तब देखूंगा।

मैंने तुम्हारे स्कूल के उद्घाटन-समारोह पर अपना संदेश पहले ही भेज
है। आशा है, समय पर मिल जायगा।
इससे बढ़कर प्रसन्नता मुझे क्या होगी कि मैं तुम्हें जल्दी ही एक ऐसे
[illegible] नवयुवक के रूप में देखूं जिसकी तमाम शक्ति देश के हित में लगी

शिक्षा चाहे कितनी ही गहन व व्यापक क्यों न हो, उसको ग्रहण करने
कोई अर्थ नहीं यदि वह सही मार्गदर्शन न करे और जीवन के वास्तविक
को समझने में सहायक न हो। एक बात और याद रखने को कहूंगा—
वह यह कि ज्ञान-प्राप्ति का कोई निश्चित राज-मार्ग नहीं होता।
प्राप्ति के लिए तो व्यक्ति को 'तपस्या' करनी पड़ती है। मस्तिष्क को
(विशेष) महत्वपूर्ण विषयों पर केंद्रित करने के लिए ट्रेनिंग देनी
है। मनुष्य को उसकी लगाम दृढ़ता से थामनी पड़ती है। ताकि
चंचलता से इधर-उधर न भागे। तुम्हें हमेशा यह सुप्रसिद्ध कहावत याद
चाहिए—

> One thing at a time,
> And that done well,
> Is a very good rule,
> That many can tell[1]

यदि तुम्हें अपने मस्तिष्क को सक्रिय बनाना है और उसे 'ट्रेंड' करना
तो तुम्हें पहले अपने शरीर को स्वस्थ रखना होगा। "स्वस्थ शरीर
स्वस्थ मस्तिष्क।" अतः मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि तुमने घुड़-
ी शुरू कर दी है। उसे नियमित रखो। उससे तुममें क्रियाशीलता
गी। यह बहुत अच्छी कसरत है। बस इतना ही है कि नियमित
। मुझे विश्वास है कि शरीर की तुलना में तुम्हारा मस्तिष्क पीछे
रहेगा।

---

१ "एक समय में एक काम करो
और वह भी अच्छी तरह;
कई लोग बतायेंगे
कि यही नियम अच्छा है।"

मैं बापूजी के साथ अधिक समय के दौरे पर नहीं जा रहा हूं। शायद मध्यप्रदेश के कुछ भागों में ही जाऊं।

रामकृष्ण के बारे में श्री वकील से मैंने आज से पूछा कि क्या उसे वहां भेजा जा सकता है? यदि हां, तो कब? रामकृष्ण के बारे में उनका तुम्हारा अनुभव कैसा है? क्या उसे वहां अधिक लाभ पहुंचेगा? मुझे उसकी पढ़ाई के बारे में चिंता है। मैं चाहता हूं कि उसकी पढ़ाई के बारे में कोई निश्चित प्रबंध अवश्य हो जाय।'[1]

(अंग्रेजी से अनूदित) जमनालाल का आशीर्वाद

३४

वर्धा १६-११-३३

चि० कमल,

चि० रामकृष्ण को आबिदअली के साथ भेजा है। इसके गले में सूजन है। कई डाक्टरों की राय है कि इसका आपरेशन करवाना चाहिए। आबिदअली डाक्टरों से अच्छी तरह परिचित है। अतः अगर जरूरत समझो तो इसको दिखाकर जो उचित हो, उस तरह करवा लेना। तुम इसकी पढ़ाई की बराबर व्यवस्था कर देना। अब मैं इसकी पढ़ाई व इलाज के बारे में फिक्र नहीं करूंगा। तुम्हारी जिम्मेदारी है, ऐसा समझना।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३५ :

चिकलदा (अमरावती)
२३-११-३३

चि० कमल,

तुम्हारा १८-११ का पोस्ट-कार्ड मिला।

---

१ कमलनयनजी की अंग्रेजी की पढ़ाई में मदद हो, इसके लिए श्री महादेव देसाई ने सुझाया था कि उनके साथ सब लोग अंग्रेजी में पत्र-व्यवहार करें। इसी सिलसिले में जमनालालजी ने भी कुछ पत्र उन्हें अंग्रेजी में लिखे थे।

चि० रामकृष्ण ठीक रहता होगा। उसे आशीर्वाद कहना। चि० इन्दु[1] को भी कहना कि समय मिले तो पत्र लिखे।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३७ :

पटना, १९-८-३६

प्रिय कमल,

तुम्हारा १५-४ का पत्र मिला। तुम व चि० रामकृष्ण वर्धा पहुंच गये होंगे। तुम, चि० रामकृष्ण और श्री लोंढे मास्टरजी इधर होकर घूम फिरकर अल्मोड़ा या जहां जाना चाहो जा सकते हो। पू० बापूजी से पटना में तो मुलाकात होना कठिन होगा, क्योंकि वह तो यहां २८ तारीख को कुछ ही घंटे ठहरनेवाले हैं। परन्तु उनके दौरे में जाकर तुम उनसे मिल सकते हो। मैं यहां २७ तारीख तक तो रहूंगा ही, बाद में शायद रांची जाना पड़े। तुम्हारा यहां आना निश्चित हो जाय तो दिन और गाड़ी लिख भेजना, जिससे मुझे मालूम रहे।

तुम्हारी माता आजकल ज्यादा चिंतित रहती है। तुम उसका समाधान कर सको तो प्रयत्न कर देखना। केसरबाई और मा वगैरा भी चिंतित रहते हैं। तुमको समय हो तो दोनों के मन को समाधान मिले, ऐसा प्रयत्न करना। मैंने चि० प्रह्लाद से भी कहा है। आज तुम्हें तार भी भेजा है। तुम्हारी मा की इच्छा हो और वह यहां आना चाहती हो और कमला भी आना चाहती हो, तो उन्हें तुम साथ ला सकते हो। जैसा तुम सबका समाधान हो वैसा करना। मैं अब ज्यादा चिंता नहीं करूंगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

३८

वर्धा ३-९-३६

प्रिय कमल,

आशीर्वाद। पटना व इलाहाबाद, बरेली, अनपुर वगैरह होकर

---

१. श्रीमती इंदिरा गांधी। उन दिनों कमलनयनजी और वह एक ही स्कूल में पढ़ते थे।

हुआ ऐसा पता चला है।

मेरा विचार तो १०-१२ तारीख तक यहां रहकर बंबई-पूना होकर पटना जाने का था, पर आज राजेन्द्रबाबू का तार आया है कि उनके बड़े भाई महेन्द्रबाबू का स्वर्गवास हो गया है। इसलिए आवश्यक हुआ तो कल या परसों ही मुझे पटना जाना पड़ेगा। आज मैंने पटना तार किया है। उस उत्तर आने पर निश्चय होगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ३९ :

बम्बई, २८-१२-३४

प्रिय कमल,

तुम्हारा २१-१२ का पत्र आज प्रातःकाल मिला। पत्र इतनी देर से मिला, यह देखकर आश्चर्य हुआ। यदि तुम्हारे लिखे अनुसार वह एक दिन देरी से, अर्थात् २२ की मेल से, भी चला होता तो भी मुझे कल मिल जाता। पत्रों के भेजने में इस प्रकार असावधानी रखना ठीक नहीं।

सब दृष्टि से विचार करते हुए मुझे तुम्हारा कोलम्बो जाना ही ठीक मालूम होता है। वहां जाने से तुम्हारी अंग्रेजी भी काफी सुधर जायगी तथा सामान्य-ज्ञान में भी अच्छी वृद्धि होगी। आशा है, तुम व श्री महादेव मिलकर अपनी माताजी आदि सभीको संतोष दिलाकर कोलम्बो जाने का निर्णय कर लोगे। जाना हो तो फिर जितनी जल्दी जा सको, उतना ही अच्छा है। देरी नहीं करनी चाहिए। बंबई होकर जाना पसंद हो तो मुझसे मिलते हुए चले जाना। मद्रास होकर जाना हो तो प्रोग्राम निश्चित करके मुझसे एक बार मिलकर जा सकते हो।

पूज्य बापू व विनोबा का आशीर्वाद अवश्य प्राप्त कर लेना।

जमनालाल के आशीर्वाद

: ४० .

बंबई, ९-१-३५

चि० कमल,

इन दिनों मैं पत्र नहीं लिख सका। आज बापूजी का पत्र मिला है कि

सोलोन मे मलेरिया बद हो जाने के बाद तुम्हे भेजेगे। सो ठीक है। तुमने अपनी मंदागी तो प्रारभ कर ही दी होगी।

चि० ओम के कान का क्या हाल है ? अगर अभीतक बिलकुल ठीक नहीं हुआ हो तो उसे यहा भेज देना ठीक होगा। बापूजी ने भी लिखा है। उन्होंने ओम को बम्बई भेजने के बारे मे वर्धा तार भेजा है। मुझे पूरी हालत लिखना।

चि० मदालसा का वजन बढना शुरू हुआ ? उसका ठीक चलता होगा। चि० रामकृष्ण का कैसा चल रहा है ? श्री नाना की व्यवस्था ठीक होगई होगी ? चि० लाली राजी है। डा० रानसाहेब कल यहा आनेवाले है। तुम्हारी माता का दिल व दिमाग शात होगा। उसे भी कहो कि वह अपना वजन बढ़ाकर बताये, तब ही उसके इलाज मे दूसरो को श्रद्धा पैदा हो सकती है।

तुम्हे व्यायाम व कसरत का खूब अभ्यास करना चाहिए।

जमनालाल का आशीर्वाद

४१

भुवाली (नैनीताल),
२-६-३५

प्रिय कमल,

तुम्हारे ता० २७ व २९ के पत्र मिले। मैं बीच मे नैनीताल गया था। वहा एक दाढ और एक दात निकलवाया था, अत तीन रोज ठहरना पडा। नैनीताल मे यू०पी० के सरकारी अफसरो व अन्य मित्रो से मिलना हुआ। एम० पी० शाह—आई० सी० एस०, सैक्रेटरी इडस्ट्री व एजुकेशन, साटे—आई० सी० एस०, सैक्रेटरी फाइनेस; सर कुवर महाराजसिंह, होम मेम्बर; हिम्मत सिहजी, अडर सक्रेटरी फाइनेंस, खेर—इनकमटैक्स कमिश्नर आदि से बाते हुई। इनमे कई से पहले ही परिचित था, बाकी से अब हो गया। श्री शाह ने मुझे भोजन के लिए भी आमत्रित किया था। श्री शाह की लड़कियो ने गायन व नृत्य दिखलाये।

चि०राम के बारे मे जो तुमने अपना अभिप्राय लिखा, वह पढ़कर

न्य मित्रों से मिलना । २५ को देहरादून । २६-२७ कनखल-हरद्वार । ८-३० दिल्ली । १ से ६ जुलाई तक कानपुर 'गणेशशंकर विद्यार्थी-स्मारक' लिए । दो-तीन रोज में पक्का प्रोग्राम निश्चित होने पर दुकान के पते र लिखूंगा ।

जमनालाल का आशीर्वाद

४३

भुवाली, १८-६-३५

चि० कमल,

तुम्हारे भेजे हुए दोनों तार मिले । तुम कुशलपूर्वक पहुंच गये तथा जहाज में कष्ट नहीं हुआ, यह जानकर संतोष हुआ ।

तुम्हारे खाने-पीने आदि का प्रबंध किस प्रकार हुआ, सो लिखना । प्रति सप्ताह मुझे पत्र देते रहना । इनमें वहां का वर्णन होगा, अतः मैं ये पत्र संभालकर रखूंगा और जब तुम आगे कोलंबो के अपने अनुभव लिखना चाहो, तब तुम इनका उपयोग कर सकते हो ।

मैं दो रोज नौकुचिया ताल भी गया था ।

तुम्हारे भेजे हुए फोटो तथा पत्र मिले । पैदल के रास्ते से मैं आज अल्मोड़े की ओर जा रहा हूं । साथ में पंडित रामनरेशजी त्रिपाठी भी हैं । चार-पांच रोज लगेंगे । इलाहाबाद के डा० काटजू भी साथ रहेंगे ।

फर्स्ट क्लास की टिकट व खाने-पीने का क्या खर्च पड़ा ? खाना कैसा मिला ?

जमनालाल का आशीर्वाद

४४

कराची, ६-७-३५

चि० कमल,

तुम्हारा तारीख २६-६ का पत्र कल कराची में मिला । तुमने अपना पहले का स्थान बदल दिया, यह मालूम हुआ। मेरी तो हमेशा से यही राय रही है कि अपने कारण दूसरों को जितना हो सके, उतना कम कष्ट दें ।

अत' रहने के बारे मे तुम दूसरो की सुविधा का खयाल रखकर ठीक प्रवध कर लेना। महादेवभाई का भी पत्र आया होगा।

तुम जनवरी के वजाय अव जून मे परीक्षा दे सकोगे, सो ठीक है। पाच-छ' महीने का फर्क पड जायेगा।

चि० मदू तथा जानकीदेवी शैलाश्रम मे रह रही है। प्रसन्न है। तुम भी उन्हे शैलाश्रम (विन्सर), अल्मोडा के पते से पत्र भेज देना। वे फिलहाल वही रहेगी। मुझे अव पत्र वर्धा ही दिया करना।

जमनालाल बजाज का आशीर्वाद

४५ ·

वर्धा, १३-७-३५

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मुझे बवई मे मिल गया था। मैने उसे पढा। सतोष हुआ।

चि०···यहा आने वाली थी। परन्तु कल ही···का तार मिला कि वह नही आ रही है।

यह तार पढकर थोडा आश्चर्य तो हुआ ही, बाद मे स्टेशन पर डा०·· मिला था। उसे मैने अलग ले जाकर पूछा तो मालूम हुआ कि चि०···अभी तक सबध का निश्चय नही कर पाई है। मन डावाडोल है। यह सुनकर आश्चर्य हुआ और थोडा बुरा भी लगा, परन्तु मैने उसी समय ···को कह दिया कि अव बात चारो ओर फैल गई है। तथापि चि०·· को सतोष नही है तो इस सबध के विषय मे फिर से विचार किया जा सकता है। क्या तुम्हे ववई मे इसका पता नहीं लग सका। खैर, कोई बात नही, तुम चिता बिल्कुल मत करना। जो कुछ होगा वह ठीक होगा। हा, तुम्हे ऐसी हालत मे चि० · से पत्र-व्यवहार वद कर देना चाहिए। उसका पत्र कोई तुम्हारे पास आये तो पहले मुझे भेजने का खयाल रखना। तुम परेशान मत होना।[1]

---

१. कमलनयनजी की जहा सगाई हुई थी, वह बाद मे टूट गई। उसी की चर्चा इस तथा आगे के पत्रो मे है।

४६

वर्धा, १७-७-३५

चि० कमल,

तुम्हारा तारीख ७-७-३५ का पत्र मिला। मैंने श्री आलूविहारे को भी यह पत्र भिजवाया है। वहां रहने में उनको ऐसी किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसका तुम खयाल रखना।

तुम सेंट पीटर्स कालेज में दाखिल हो गये सो ठीक है। तुमने अपने प्रोग्राम व डिबेट (वाद-विवाद प्रतियोगिता) के बारे में लिखा, सो मालूम हुआ। श्री महादेवभाई ने कहा कि अंग्रेजी में बहुत परिश्रम करने की आवश्यकता है। वह भी तुम्हें बराबर लिखा करते है।

तुम दिसंबर में यहां आने का इरादा रखते हो, सो ठीक है। तुम अब अपनी जिम्मेदारी खूब ज्यादा समझते हो, अतः जैसा तुम उचित समझो करना। मुझे यहां आने के लिए लिखा, सो ठीक। तुम वहां अधिक समय तक रह सकोगे तो मैं भी आऊंगा।

चि०·· को आज मैंने पत्र[1] भेजा है। उसकी नकल तुम्हें भेज रहा हूं। तुम्हारा तार मिल गया। पत्र भी मिल जायेगा।

जमनालाल बजाज का आशीर्वाद

---

१ यह पत्र निम्न प्रकार है—

वर्धा, १७-७-३५

चि०·····

तुम्हारे पिताजी के तार व पत्र से तुम्हारी इच्छा यह संबंध नहीं रखने की मालूम हुई। थोड़ा बुरा तो मालूम हुआ, परन्तु मैंने तुम्हें पहले ही कह रखा था कि आखिर तक तुम्हें छूट रहेगी। उसी मुताबिक पत्र मिलते ही मैंने लिख दिया था कि तुम्हारी इच्छा कम है, तो तुम्हें संकोच में डालकर और किसी प्रकार का दबाव डालकर संबंध रखना उचित नहीं। तुमने मेरा पत्र पढ़ा होगा। हां, मुझे तुम्हारे विचार-परिवर्तन का निर्णय पहले मालूम हो जाता तो ज्यादा ठीक रहता। खैर! जो कुछ हुआ या होना है वह ठीक ही है। अगर

: ४७ :

कोलम्बो, १८-७-३५

पूज्य काकाजी,

दो रोज पहले मैंने आपको तार और पत्र भेजा था। आज आपका दूसरा पत्र मिला।

आप मेरी तरफ से पूरा विश्वास रखिये। मेरी चिंता नही करे। यह तो मामूली चोट है। मुझे तो राजनीतिक कार्य करने की महत्वाकाक्षा है, उसमे असफलता की जो चोटे सहनी पडेगी, वे और भी भारी होगी। मुझे विश्वास है कि इस तरह की चोटें सहन कर हताश और निराश होने के बजाय मै अपनेको और भी मजबूत, सयमी और दृढ़ बना सकूगा।

कौन जानता है ईश्वर ने मेरे पूर्व कर्मोके दड-रूप ही यह शिक्षा दी हो, या वह मेरी परीक्षा लेना चाहता हो। मुझे ईश्वर मे पूरा विश्वास है। सिवाय भले के आजतक उसने मेरा और कुछ नही किया। जो-कुछ बुरा

तुम खुद मेरे पास आकर अपने विचार प्रकट रूप से कह देती और फिर यह सबध टूटता तो मुझे ज्यादा सतोष रहता। परतु अब इसका कोई विचार नही करना है।

मैं तो तुम्हे यह पत्र इसलिए लिख रहा हू कि मैंने तो तुम्हें लड़की कहकर माना है, और ईश्वर की इच्छा रही तो मानता रहूगा। जहा कही भी तुम रहोगी तुम्हारी सब तरह से उन्नति चाहता रहूगा। तुम अगर ठीक समझो तो मुझसे उपरोक्त सबध व पत्र-व्यवहार बिना सकोच चालू रख सकती हो। अगर तुम मुनासिब समझो तो अपने विचार-परिवर्तन का खानगी पत्र मुझे भेज सकती हो। अगर सकोच मालूम हो तो कोई आवश्यकता नहीं। मेरे पास इस सबध के बारे में तुम्हारे जो पत्र वगैरा हैं क्या वे तुम्हें भेज दिये जावें? तुम्हारा भविष्य का क्या प्रोग्राम है? कहा पढने का निश्चय किया है? इस सबध के टूटने के बारे मे मने पूज्य बापूजी से कह दिया है व चि० कमल को भी लिख दिया है।

जमनालाल के आशीर्वाद

किया मालूम होता था, वह भी कालांतर से समझ में आ जाता था कि वह भला ही था; और उसके लिए मैं ईश्वर को हमेशा धन्यवाद देता रहा। मैं आलस्यवश प्रार्थना आदि तो नहीं कर पाता, परन्तु मैं अपनेको ऐसी परिस्थिति में नहीं डालता कि ईश्वर मुझे अपने (ईश्वर के) अस्तित्व के बारे में भुलावा दे।

मेरा यदि कुछ भी विकास हो रहा है तो यह ईश्वर के प्रति आन्तरिक श्रद्धा, भक्ति और प्रेम के कारण है। और यही वजह है कि मैं हमेशा मनाग्री और आनंदी रहता हूं। इस स्थिति के लिए मैं आपका ऋणी हूं, यह कहकर आपके ऋण को कम नहीं करना चाहता। पू० विनोबाजी का भी मैं हमेशा के लिए ऋणी हो गया हूं। सद्भाग्य से मुझे ऐसे कई मौके आये जबकि उनकी ईश्वर में अटल भक्ति और विश्वास देखकर मैं आश्चर्यचकित हो जाता था। यद्यपि इस शक्ति की मुझे पूरी कल्पना नहीं है, फिर भी उसकी उपयोगिता और कीमत से मैं वाकिफ हूं। पू० बापूजी में भी यही शक्ति है, जिससे वह इतनी दृढ़ता, निडरता और आत्मविश्वास से काम करते हैं।

एक तरह से तो यह बहुत ही अच्छा हुआ कि यह संबंध टूट गया। मैं जब भी अपने भावी कार्यक्रम का विचार करता था, तो मुझे इस छोटी उम्र में शादी कर लेना बहुत खटकता था। मुझे हवाई जहाज आदि चलाने और भी कई साहसिक कार्य करने की इच्छाएं थीं, वे शादी करने के बाद उस तरह पूरी नहीं कर पाता। मेरी जवाबदारी और ही कुछ हो जाती। जब मैं . को अपना जीवन-साथी बनाने का वचन दे चुका था तो अपने विचार हमेशा उसी पर केंद्रित करने लगा था।

पर संभव है कि यदि मेरी शादी नहीं हुई तो मेरा पतन भी हो। परन्तु मेरी उन्नति करने का मौका भी मुझे उसीमें ज्यादा है। मैं पतित होने से घबराता नहीं, मुझे पाप का भी डर नहीं, परन्तु मैं उससे सावधान रहने की कोशिश करता हूं। पूज्य बापूजी ने जो लिखा था कि "अभी कमल को बहुत-कुछ सीखना-सिखाना बाकी है," उसका मुझे पूरा खयाल है। अपनी कमजोरियों को मैं ज्यों-ज्यों अनुभव करता हूं, मेरा आत्म-विश्वास बढ़ता ही जाता है।

मुझे जब ऐसे विचार आते थे कि शादी करना बंधन में पड़ना है या

४८

वर्धा, २०-७-३५

चि० कमल,

तुम्हारे दो तार व तारीख १६-७ का पत्र पढ़कर संतोष हुआ और सुख मिला। तुम्हारा तार पू० बापू, महादेवभाई, काका सा० को बहुत पसंद आया। मेरे मन में जो थोड़ी चिंता थी वह तुम्हारे तार से दूर हो गई। तुमने थोड़ी भूल की। जब बबई मे तुम्हे थोड़ा संदेह हो गया था कि मन स्थिर नही है, व कुछ मित्र लोग बुद्धि-भेद कर रहे है तो अच्छा होता कि तुम मुझे इशारा कर देते। खैर, अनुभवो से ही मनुष्य सीखता है। मुझे भी इस घटना से काफी सीखने को मिला है।

अपनी माता को तुम एक सुंदर पत्र अवश्य लिख भेजना–शैलाश्रम के पते पर। अपने रहने, खाने-पीने, पढाई की व्यवस्था श्री आलूविहारे की सलाह व संतोष के माफिक कर लेना। आशा है, वह खर्च ले लेगे।

जमनालाल का आशीर्वाद

४९

वर्धा, २२-७-३५

चि० कमल,

तुम्हारा १८-७ का पत्र आज मिला। तुम्हारे विचारों मे ईश्वर पर विश्वास देखकर मन को सुख मिला। ईश्वर तुम्हारी सद्बुद्धि बनाये रखे मेरा तो हरदम आशीर्वाद व ईश्वर से प्रार्थना है कि वह तुमको सच्चाई के मार्ग पर कायम रखते हुए देश की सेवा के लायक बनाये। फिलहाल ता मैं तुम्हारे संबंध का विचार नही करूगा। तुम पूर्णतया स्वतंत्र-विचारक जब मुझे लिखोगे या मुझसे मिलोगे, तब ही विचार करना है।

इस घटना मे मेरे विचारों में भी थोड़ा फर्क हुआ है। उस संबंध मे तुमसे मिलने पर विचार-विनिमय होगा। मेरी समझ से तुमने जो पत्र '' को तथा उसके पिताजी को भेजे, उनकी भाषा-भाव तो ठीक है, परन्तु तुम्हें अब एकबारगी पत्र-व्यवहार उनसे बंद ही कर देना चाहिए। उनकी दृष्टि से यह ठीक होगा। अन्यथा उनपर नैतिक दबाव पड़ने या फिर से

नेताओं को इसमें आपत्ति नहीं मालूम होती।

जयपुर में वाइस-प्रेजीडेंट मर बीचम से जान मे भेंट हुई। वह आदमी डग वड़ा मालूम हुआ। उसमें जाटो के प्रति सहायता की कम आशा है।

मैं जयपुर से दिल्ली आ गया था। अजमेर नहीं आ सका। तुम्हारा अजमेर का लिखा पोस्ट-कार्ड दिल्ली में मिला। लोहारू मे जाटो पर अत्याचार हुआ है, इस बारे में स्वतन्त्र जाच की आवश्यकता है। बीच में एक रोज के लिए मेरठ और हापुड भी हो आया था।

कानपुर मे स्व० गणेशशकरजी के स्मारक का फड सग्रह करने के लिए मैं तथा टंडनजी प्रयत्न कर रहे हैं। ता० ७ तक मैं यहा रहूगा।

मेरी भी अल्मोडा जाने की इच्छा है, क्योंकि इन दिनो बहुत भारी कामकाज रहा। कुछ विश्राम मिल जाय। परन्तु वर्धा मे आवश्यक काम अटका पड़ा है, इसलिए वहा जाना जरूरी है। करीब १२ अक्तूबर से आगे एक सप्ताह मद्रास मे वकिंग कमेटी तथा अ० भा० का० कमेटी की सभा है। उसके बाद यदि हो सका तो कुछ रोज आराम करने की दृष्टि से मेरा कोलम्बो आ जाने का विचार है। यदि आना सभव हुआ तो निश्चित सूचना दूगा। वहा किसी होटल में शाकाहारी भोजन का प्रबन्ध हो सकेगा या नहीं, लिखना। किसी मित्र के यहा उतरना मैं पसन्द नहीं करूगा, इससे तो दूसरों को बिना कारण तकलीफ होती है।

तुम्हारी दिसम्बर की छुट्टिया कब से कबतक हैं, यह लिखना। दिसम्बर मे तुम मेरे साथ वर्धा मे या जहा मैं रहू, वहा रहो, यह मैं पसद करूगा।

अभी प० जवाहरलालजी को रिहाई की सूचना मिली थी। उनसे फोन पर बात भी हुई। उनसे मिलने के लिए इलाहाबाद जा रहा हू।'' से व उसके माता-पिता व बडी बहन से बहुत देर तक खुलासेवार स्पष्ट बातचीत हुई। मैंने उनके यहा की जो स्थिति देखी, उससे प्राय सब ही यह सबध रखना चाहते हैं। .'''भी फिर से विचार कर रही है। अब वह अधिक विचारपूर्वक सोच रही है। उसने मुझसे खासकर दो बातें कही। एक तो उसने कहा कि मुझे दूसरे लडके से कमल का मिलान करने का मौका नहीं दिया गया। एकदम कमल का नाम मेरे सामने रखा और सभीने जोर दिया

कि तुम्हें यह संबंध स्वीकार कर लेना चाहिए। यानी मुझे स्वतंत्रतापूर्वक विचार का मौका नहीं मिला। मेरे ऊपर घरवालों के प्रेम का एक प्रकार का दबाव रहा। दूसरे उसने कहा कि कमल के 'मैनर्स' मुझे पसंद नहीं हैं।

आखिर यह निश्चय हुआ कि अभी संबंध छूटा न समझा जाय। बातचीत चल रही है व विचार हो रहा है। फिर भी चि० 'अपनी जिम्मेदारी पर यह संबंध करना पसंद करे, और तुम्हें भी स्वीकार हो तो यह संबंध पक्का हो जाय, अन्यथा दोनों स्वतंत्र रहोगे। अब तुम अपने विचार दिल खोलकर स्पष्ट मुझे लिख भेजना। तुम्हारा पत्र आने पर मुझे अधिक विचार करने का मौका मिलेगा।

जमनालाल का आशीर्वाद

५२

कानपुर, ६-९-३५

प्रिय कमल,

मैंने कल तुम्हें एक पत्र दिया है। मिला होगा। मैं इलाहाबाद से कानपुर प० जवाहरलालजी के साथ ही हवाई जहाज से लौट गया था। आज फिर इलाहाबाद जा रहा हू। श्री राजेंद्रबाबू जरूरी मिलना चाहते है। वहा से बरेली जेल में खां साहब से मिलूगा। अपने गत पत्र में तुमने सीलोन के बारे मे लिखा है। तुम्हे मालूम होगा कि उस समय मैं कान के आपरेशन के कारण अखबार आदि बहुत कम पढता था और सीलोन के हालात से पूर्णतया वाकिफ नही था। मेरा खयाल है कि पू० महात्माजी ने इस बारे मे पत्र-व्यवहार किया है। उनका शायद यह मानना है कि सीलोन का संगठन भी बराबर नही है और वहा ठीक से काम नही हो पाता है। मैं समझता हू कि तुम इस विषय मे पू० बापूजी से पत्र-व्यवहार करो। वहा से कई लोगो ने बापू को यह भी लिखा है कि बाहरी मदद की जरूरत नहीं, ऐसा मेरा अदाज है, पक्का नही मालूम।

जमनालाल का आशीर्वाद

५२

शैल आश्रम (अल्मोड़ा)
१०-९-३५

प्रिय कमल,

मेरा कानपुर से भेजा हुआ पत्र मिला होगा। तुमने ध्यानपूर्वक पढ़ा होगा। तुम्हारी जो राय हो, वह मुझे साफ तौर से लिख भेजना। मेरे मन में तो यही जच रही है कि अगर चि० प्रसन्नतापूर्वक तुमसे संबंध करने को तैयार हो तो तुम तो यही संबंध सबसे ज्यादा पसन्द करते होगे। अगर मेरी यह समझ सही न हो तो तुम्हें साफ कह देना चाहिए, क्योंकि अब यह प्रश्न मैं अपनी पद्धति से तय करना चाहता हू। अगर किसी कारण से तुम्हारा मोह या प्रेम न रहा हो तो साफ लिख भेजना। अगर तुम्हें इस संबंध से संतोष है तो मुझे तो रहेगा ही। परन्तु मन मे दो ही प्रश्न उठते है। एक तो चि०'' बहुत मजबूत (स्वास्थ्य से) नहीं है, दूसरे उसपर पश्चिमी ढंग के वातावरण का अधिक असर है। शायद हम लोग चाहते हैं उस प्रकार के धार्मिक तथा नैतिक सिद्धांतों पर उसका विश्वास दृढ़ नहीं दिखाई देता। अगर उसमें सत्य का आग्रह होता तो इतनी कमजोरी सामने नहीं आती। तुम्हारे अंदर पूरा आत्म-विश्वास हो कि इस नाजुक व उड़नेवाली लड़की से संबंध हो जाने पर भी सुखी रह सकोगे और उसे भी अपने मार्ग पर लाकर सुखी बना सकोगे, तो मुझे फिर कोई चिंता नहीं रहती। मैंने तो उसे भुवाली में वचन दिया था, उसी प्रकार उसे लड़की का प्रेम देता रहूगा व उसकी उन्नति चाहता रहूगा। तुम इस पत्र का जवाब यहां भेज सकते हो। मेरा यहां तारीख २० तक रहना होगा।

मेरे साथ यहां चि० सफिया, नर्मदा, दादा धर्माधिकारी, दामोदर व कानपुर से जानकीदेवी भी साथ है। जानकी व नर्मदा तो कानपुर में गंगा में डूबते-डूबते बच गई। यह एक ईश्वर की दया का ही कारण है। जो होना है, वह ठीक होता है।

मुझे लगता है कि तुम्हारा समय फिजूल की लिखा-पढ़ी तथा अन्य बातों में विशेष चला जाता होगा। तुम्हें अब अपनी परीक्षा की खूब अच्छी तैयारी का खयाल रखना चाहिए।

[illegible]

जमनालाल के आशीर्वाद

५८

अल्मोड़ा, २८-९-३५

चि० कमल,

तुम्हारे दो पत्र मिले ।

तुमने अपने प्रोफेसरों की रिपोर्ट भेजी, सो देखी । इनकी कापी तो तुम्हारे पास होगी ही । व्याकरण व निबंध के बारे में प्रोफेसर की राय पर विचार करना चाहिए । साथ ही उस दिशा में कोशिश करना भी आवश्यक है । भाषा, शैली एवं व्याकरण को सुधारने के लिए अंग्रेजी उपन्यासों का पढ़ना वे आवश्यक समझते हैं । आशा है, तुम इस दिशा में अवश्य अमल करोगे । भूगोल के अभ्यास के लिए पब्लिक लाइब्रेरी में जाने की उन्हें आवश्यकता मालूम देती है ।

शायद तुम्हारे पास इन रिपोर्टों की नकलें न हों, इसलिए ये वापस भेज रहा हूं । ताकि तुम उनको देखकर उसके अनुसार सुधार कर सको ।

तुम्हारे स्पष्ट विचार पढ़कर सुख मिला। विवाह-संबंध के बारे में मेरी तो यह राय है कि तुम विशेष विचार न करो। इस विशेष परिस्थिति में मित्रों को भी न लिखना ठीक रहेगा। चि०·· को स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करने दिया जाये। उसकी इच्छा व आग्रह तुमसे मिलने का होगा तो इस प्रकार की व्यवस्था हो जायेगी। अपनी ओर से विशेष आग्रह नहीं रखना है। मेरी उससे ठीक-ठीक बातें हुई हैं।

तुम्हारा पत्र चि०·· के पिताजी को अभी नहीं भेजूंगा। उनका या चि०·· का कोई पत्र आयेगा और उस समय तुम्हारे विचार उन्हें बताना आवश्यक मालूम देगा तो मैं भेज दूंगा। तुम्हारे पास उनकी ओर से या चि० का कोई पत्र आये और वे तुम्हारे विचार जानना चाहें तो तुम उन्हें लिख देना कि तुमने अपने विचार मुझे लिख भेजे हैं। अतः वे मुझ से जान लें।

मेरा इस समय शायद कोलम्बो जाना नहीं होगा। दिसम्बर में तुम्हें मेरे पास आना पड़ेगा। इसलिए अभी मद्रास आने की जरूरत नहीं।

श्री मोहगावकर असिस्टेंट मैनेजर होकर अक्तूबर के आखिर तक कोलम्बो जायंगे। उसकी अच्छी तरक्की हुई है। वह तुम्हें मिलता रहेगा।

श्री महादेवभाई का पत्र था कि तुम्हारी खबरें उन्हें इन दिनों नहीं मिलीं। मैंने लिख दिया है कि मेरे पास पत्र आते रहते हैं।

तुम अपने अभ्यास में अधिक ध्यान लगाने का प्रयत्न तो रखते ही होगे।

मुझे हर इतवार वर्धा पत्र भेज सको तो भेज दिया करो। ज्यादा चिंता व बोझ रखने की आवश्यकता नहीं।

आज बापूजी का जन्म-दिन है। दादा (धर्माधिकारी) का अभी सुंदर प्रवचन शुरू होनेवाला है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ५५ :

वर्धा, १३-११-३५

चि० कमल,

तुम्हारे पत्र यथासमय मिल गये थे। पढ़कर संतोष हुआ। तुम्हारे

की शुद्धता एव बुद्धि की स्थिरता के बारे मे मुझे अधिक विश्वास होता। रहा है। तुमने उचित ही किया।

तुम्हारे पत्र पू० बापू को पढ़ाकर चि०···के पिताजी को अपने अंतिम र्णय के साथ भिजवा दिये है। आशा है, अब तुम इस विषय को भुला गे तथा अभ्यास मे पूरी तरह जुट जाओगे।

तुम्हारी मा तथा मदू के पत्र आते रहते है। मदू को तो काव्यमय पत्र लिखने कीस फूर्ति होती रहती है। कल उसका एक लंबा सुंदर पत्र आया है।[1]

चि० राधाकृष्ण के विवाह की तारीख हाल मे निश्चित नहीं हुई है। सभव हुआ तो दिसम्बर मे, नहीं तो जनवरी मे राधाकृष्ण, प्रह्लाद और मेरू तीनों के विवाह होंगे।

परसों अबुजम्मा यहा आई थी। उसके द्वारा चि० ओम की कुशलता का संतोषप्रद समाचार मिला। उसकी अंग्रेजी मे अच्छी प्रगति हो रही है।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ५६ :

वर्धा, १-१२-३५

चि० कमल,

तुम्हारा तारीख २५-११ का पत्र मिला। तुम्हारी इच्छा तीनों-चारों विवाहो मे सम्मिलित होने की है, तथा तुम कांग्रेस और साहित्य-सम्मेलन पर भी हाजिर रहना चाहते हो, सो जाना। दोनों साथ लेना तुम्हारी शक्ति के बाहर है, ऐसा मै नहीं कहता। परंतु इस सब मे खर्च होनेवाले समय से अपने अभ्यास की हानि-लाभ का अन्दाज तुमको कर लेना होगा।

चि० प्रहलाद का विवाह तारीख १८ जनवरी को है। राधाकृष्ण का तारीख २८ जनवरी को है। मफिया का विवाह २६ जनवरी को है।

कांग्रेस सभवत: मार्च के अंत मे या अप्रैल के दूसरे सप्ताह मे होगी। अप्रैल मे भी हो सकती है। अभी निश्चित नहीं हुआ है, क्योंकि असेंबली के अधिवेशन मार्च में होते है। मार्च मे बजट पर बहस चलेगी। फलतः असे

---

१. देखिये पत्र स० ११५

वर कांग्रेस मे सम्मिलित नहीं हो सकेंगे । इसलिए बहुत मुम-
कांग्रेस-अधिवेशन अप्रैल मे हो । कांग्रेस के समान सम्मेलन की
अभी अनिश्चित है। ईस्टर की छुट्टियां मे सम्मेलन के होने की
है।

प्रोग्राम यद्यपि निश्चित नहीं हुआ है, तो भी तुम मेरे साथ रह
लैंड जाने के बारे में तुमने अपने विचार लिखे, सो जाने ।

जमनालाल का आशीर्वाद

. ५७

वर्धा, ७-१२-३५

मल,

म्हारा पत्र मिला । तुम्हारे स्वास्थ्य के समाचार जानकर चिन्ता
है। तबीयत सुधारने की दृष्टि से यहा आना आवश्यक प्रतीत होता
तुम यहा आ सकते हो। अन्यथा मेरे खयाल मे यहा आने मे तुम्हारा
व्यर्थ ही नष्ट होगा।

तुम फेल होकर विलायत जाओ, यह कल्पना मुझे ठीक नही लगती ।
प्रतिष्ठा को धक्का ही लगता है। और फिर यदि यहा सफलता नही ,
सकती, तो वहा सफलता मिल ही जायगी, इसमे संदेह होता है।
इसका यह अर्थ नही कि तुम अपना स्वास्थ्य बिगाडकर भी अभ्यास
। तबीयत अच्छी नहीं रहती हो तो यहा आ जाना अच्छा है । मुझे उसमें
र है। फेल होने का अर्थ तो यही है कि उस कार्य मे अपना मन नहीं
तो। सहज ज्ञानवाला होशियार विद्यार्थी परीक्षाओ मे फेल हो, इसका
ई कारण नहीं दीखता। यहा आना होगा तो यहा अभ्यास नहीं हो सकेगा,
बात का पूरा खयाल रखकर ही आना चाहिए। स्वास्थ्य के लिए परीक्षा
मोह छोड़कर भी आ सकते हो।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ५८ :

कोलम्बो, १०-१२-३५

काकाजी,

आपका पत्र मिला। भारत आने के बारे मे अभी मैं कुछ निश्चय नही
र पाया हू।

विलायत जाने के विषय मे मेरा ऐसा कहना नही है कि मैं नापास
होकर ही विलायत जाऊगा। लेकिन किसी कारणवश सफल न हुआ, तिसपर
भी मैं विलायत जाऊ, इसमे मैं किसी प्रकार की हानि नही देखता। प्रतिष्ठा
मे यदि धक्का पहुचेगा तो वह नापास होने से पहुचेगा, विलायत जाने से
नही।

एक कार्य को हाथ मे लेकर उसमे सफलता प्राप्त करना सर्वथा उचित
ही नही, प्रशसनीय है। लेकिन किसी कारणवश सफलता प्राप्त नही
करने से यदि प्रतिष्ठा को धक्का लगता है, तो ऐसी प्रतिष्ठा की मैं कीमत
नही करता।

आखिरकार मुझे यही देखना है कि मेरा ज्यादा-से-ज्यादा लाभ किधर
है। यदि ऐसा करने मे कुछ लोगो को गलतफहमी हो जाये तो उसे मैं नही
बचा सकता, न मुझे उसकी परवाह ही करनी चाहिए।

असमर्थता तो इस बात की है कि जून की परीक्षा के रिजल्ट अगस्त
२२ को इग्लैड मे मालूम हो सकते है और सितम्बर की परीक्षा की आखिरी
तारीख अप्लीकेशन के लिए अगस्त २५ है। यदि मैं पास हो गया तो मुझे
सितम्बर की परीक्षा मे बैठने की जरूरत नही। अन्यथा सितम्बर मे परीक्षा
देने से (क्योकि यह परीक्षा तब इग्लैड मे देनी होगी) अक्तूबर के पहले
उसका रिजल्ट आ जाता है और मैं १९३६ के अक्तूबर मे ही कालेज मे
भर्ती हो सकता हू। इसमे भी असफल होने पर जैसा कि मैने पहले लिखा
है, 'लिटल गो' नाम की परीक्षा देकर भी भर्ती हो सकता हू। इस परीक्षा
के लिए एक-दो रोज पहले अप्लीकेशन दे देना काफी होता है।

मान लिया कि इतना सब करने पर भी कालेज मे भर्ती न हो पाया
यहा जनवरी १९३६ मे न बैठकर विलायत मे दूसरी परीक्षा मे
। और इसी विषय का अध्ययन करूगा कि एक होशियार

'कामनसेन्स' वाला लड़का आखिर एक ही परीक्षा में कितनी बार नापास होता है।

सब तरह से असफल होने से जो चार-पांच वर्ष विलायत में खराब करने की इच्छा है, वह चार-पांच महीनों में ही पूरी करके यशस्वी हो घर लौट आऊंगा।

यदि प्रतिष्ठा पर इससे धक्का पहुंचता है तो मेरी प्रतिष्ठा होगी तभी तो पहुंचेगा! अभीतक मैंने किया ही क्या है, जिससे मेरी प्रतिष्ठा हो। आपके पुत्र कहलाने मात्र से यदि कुछ झूठी प्रतिष्ठा जबरदस्ती मेरे पल्ले बंधी होगी तो उसके नष्ट होने में किसी प्रकार की हानि मैं नहीं देखता। कम-से-कम दुनिया तो आपके लाडले बेटे की कीमत कर ही लेगी और सिर्फ, आपका पुत्र हूं, इस वजह से 'एक्सप्लाइट' होने से बचेगी।

इतने पर भी आप यही अच्छा समझें कि मुझे यहीं से परीक्षा पास करके जाना चाहिए तो जनवरी तक मैं यहां रहने को तैयार हूं।

मेरे स्वास्थ्य के बारे में चिंता न करें। करने की जरूरत हो तो अभ्यास के विषय में ही है। विशेष कुशल,

कमल के प्रणाम

५९

वर्धा, १३-१२-३५

चि० कमल,

तुम्हारा पत्र मिला। मैंने अपने विचार अपने गत पत्र में ही स्पष्ट रूप से लिखे हैं। तुम विलायत जाने की फिक्र न करते हुए, इस परीक्षा में पास होने की कोशिश करो। तुमको मैंने अपने विचार तो मद्रास में भी स्पष्ट रूप से बताये हैं। अधिक बातें तो मिलने पर हो सकेंगी।

मेरा यह मानना है कि जिस आदमी का दिल पढ़ाई में नहीं लगता हो, उसको पढ़ाई में न पड़कर अपनी रुचि के किसी अन्य कार्य में पड़ना चाहिए।

बीच में पू० बापू का स्वास्थ्य नरम हो गया। ब्लड-प्रेशर बढ़ गया था। अब तबीयत ठीक है, आराम की बहुत जरूरत है।

आजकल यहा खूब मेहमान आते रहते है। सरदार, राजेन्द्रबाबू, कृपालानी व डा० जीवराज मेहता अभी है।

जमनालाल का आशीर्वाद

६० : वर्धा, १-२-३६

चि० कमल,

इन दिनों मेरे नाम तुम्हारा कोई पत्र नही आया। मै भी तुम्हें नहीं लिख सका। मुझे भी यह मास प्राय चिंता मे बिताना पडा। पहले पू०बापूजी के स्वास्थ्य की चिंता थी, बाद मे तीन-चार विवाहो की व्यवस्था वगैरह की रही। आशा है, अब शायद थोडा आराम मिल जाय। दस-बारह दिन मे पाच विवाह हुए व दो सगाई का निश्चय हुआ। विवाह प्रह्लाद-पद्मा, भैरू-मणी, सफिया-शादुल्ला, अमरचन्द पुगलिया-स्नेहप्रभा (विधवा, साथ मे दो वर्ष की लडकी), राधाकृष्ण-अनसूया के हुए। यहा खूब मित्र-मडल जमा हुआ था। काफी भीड रही। सगाई चि० कृष्णदास गाधी की मनोज्ञादेवी, (हीरालालजी अग्रवाल की कन्या) से की गई है।

चि० सीता (गगाविसन की लडकी) की सगाई की बात भी हुई है। सगाई अभी पक्की नही हुई है। जल्दी ही होना सभव है। लडका अमरावती कालेज मे फर्स्ट ईयर मे पढता है। २१ वर्ष का है।

वर्धा, कलकत्ता, बम्बई मे प्राय तुम्हारी याद की गई। तुम्हारे विवाह सबध के बारे मे मेरी राय तो तुम जानते ही हो। विवाह करके ही तुम्हें यहा से यूरोप जाना चाहिए। मेरी इस राय मे लगभग अन्य सब ही गुरु-जनो की राय भी शामिल है। जैसे पू० बापू, काका सा०, जाजूजी, विनोबा आदि। अब रहा लडकी का प्रश्न। वैसे तो कई लडकियो के प्रस्ताव है, पर इस समय दो प्रस्ताव खास मेरे सामने है। उनमे से एक कानपुर के पास फर्रुखाबाद मे है। श्री रामकुमारजी ने उसकी बहुत तारीफ की है। दूसरी कलकत्ता मे है जिसके बारे मे पडित नेकीरामजी शर्मा, सीतारामजी सेक्स-रिया, बसतलालजी मुरारका तथा अन्य मित्रो ने कहा है। मेरा इस समय इस लडकी की ओर झुकाव है।

यह नागचन्दजी घनश्यामदास वाले लक्ष्मणप्रसादजी पोद्दार की लड़की सावित्री है। इस बार मैट्रिक की परीक्षा देगी। इस लड़की सहित परिवार के सब सदस्य यूरोप हो आये है। लड़की होशियार व बहादुर है। हवाई जहाज चलाना भी सीखने का निश्चय किया है। घोड़े आदि पर बैठती है। अंग्रेजी ढंग से हाल में रहती है। पिछले वर्ष मैंने लड़की को देखा था। लड़की के पिता श्री लक्ष्मणप्रसादजी तो बिलकुल तैयार है। आखिरी फैसला तो तुम्हारे लड़की को देख लेने तथा लड़की के तुम्हे देख लेने पर ही हो सकेगा। लड़की की उमर १६ के करीब होगी। तुम्हे इस विषय में जो कुछ कहना हो, वह मुझे लिखना। मैं एक बार कलकत्ता जाकर श्री-लक्ष्मणप्रसादजी व सावित्री से खुलासेवार बात कर लेना चाहता हू। कई सामाजिक व राजनैतिक कारणों से भी मुझे यह कलकत्ते वाला सबंध ज्यादा अच्छा मालूम देता है। अभी इसकी चर्चा तुम अन्य मित्रों से पत्र द्वारा न करना।

तुम्हारा स्वास्थ्य ठीक रहता होगा। पढ़ाई ठीक चलती होगी। परीक्षा खतम करके ही आने का विचार है या बीच में ही आना होगा? लिखना।

तुम्हे यह तो मालूम हुआ ही होगा कि चि० नागर (सगाविमन का भाई) १७ वर्ष का हो गया था। काशी-का-बास के पास बाघ आया। उसे देखने दूसरे दो लड़को के साथ वह गया था। बाघ ने उसपर हमला किया। घायल होने पर भी वह बहादुरी के साथ चलता हुआ पैदल घर आया। उसे इलाज के लिए सीकर ले जाया गया था। वहा तीसरे रोज चल बसा। उसने खूब बहादुरी व हिम्मत दिखाई। इसका पूरा वर्णन तुम्हे बाद में भेजूगा। चि० गुलाबचन्द सीकर गया है। विवाह के समय इस घटना से मन में विचार तो जरूर रहा।

जमनालाल का आशीर्वाद

: ६१

कोलम्बो, ३-२-३१

पूज्य पिताजी,

आज बहुत दिनों के बाद आपको पत्र लिख रहा हू। मेरा अभ्यास-क्रम

लता है। इकोनामिक्स मे मुझे डर लगता है अन्यथा पास होने की रखी जा सकती है। टेनिस खेलना मैने शुरू कर दिया है। दस-एक खेलता हू। मेरे मास्टर कहते है कि टेनिस हमेशा खेलता रहू तो दो-वर्ष मे अच्छे खिलाडी हो जाओगे।

मै पन्द्रह-बीस रोज मे ही, विलायत मे लदन मैट्रिक की जो परीक्षा म्बर १९३६ होनेवाली है उसके लिए, फीस भेजने का निश्चय कर ता हू। जिससे यहा जून मे किसी कारणवश नापास हो गया तो लदन मे र परीक्षा मे बैठ सकूगा।

गभीरता से सोचने तथा मनन करने के बाद मै इस निश्चय पर पहुचा कि विलायत मुझे अवश्य जाना है और परिस्थितियो को देखते हुए मुझे र-से-देर अगस्तमे ही हिंदुस्तान से निकल जाना चाहिए।

विलायत मे मै निम्न प्रकार का अध्ययन पाच वर्ष मे पूरा करना चाहता हू।

१—अर्थशास्त्र (मुख्य विषय) इसके साथ राजनीति, बैंकिंग, या कामर्स आदि अन्य विषय, जो मुझे वहा जाकर उपयोगी जान पडे, लूगा। इसकी बी० ए० (इकोनामिक्स) की डिग्री लूगा। साथ ही बैरिस्ट्री भी करनी है। यदि सभव हुआ तो यूरोप के भिन्न-भिन्न देशो की दो यूनिवर्सिटियो मे मिल कर इस अध्ययन को पूरा करना है। इग्लैंड और फ्रास या जर्मनी अथवा और किसी अन्य देश मे—जिससे राजकीय तथा स्वतत्र राष्ट्रो की शिक्षा दोनो का लाभ मिले। यह तो कालेज-शिक्षा हुई। इसके अलावा जितने प्रकार की मुख्य राजनीतिक विचारधाराए, खासकर पाश्चात्य देशो में, प्रचलित है, उनका पारस्परिक तथा तुलनात्मक अध्ययन हिंदुस्तान की परिस्थिति के दृष्टिकोण मे लेते हुए तथा ऐतिहासिक दृष्टि से करना है।

२—विमान चलाना तथा किसी भी एक खेल मे, जैसे—टेनिस, क्रिकेट, हाकी, फुटबाल आदि, (खासकर टेनिस) मे निपुणता प्राप्त करने की चेष्टा करना, तथा शौक के रूप मे छुट्टियां आदि मे घुड-सवारी, तैरना, स्केटिंग, फोटोग्राफी, बोटिंग, टाइपराइटिंग-शार्टहैंड आदि का ज्ञान, जो थोडा-बहुत है भी, तो उसको ठीक तरह से हस्तगत करना।

३—जितना भी सभव हो, किसी धर्म का ऐतिहासिक, सामाजिक

राजनीतिक तथा व्यावहारिक दृष्टि से विश्लेषण करते हुए, बौद्ध, इस्लाम तथा हिन्दू धर्म का समन्वयात्मक दृष्टि से ज्ञान प्राप्त करना।

४–भ्रमण में यूरोप तो पूरा घूमना ही है, और हो सके तो आते-जाते समय अमेरिका, चीन, जापान का भी भ्रमण करना है।

इतना कोर्स पूरा करने के लिए मैं चार वर्ष पर्याप्त समझता हूं। इसके अलावा एक वर्ष दक्षिण अमेरिका में अमेजन या दक्षिण अफ्रीका में कांगो प्रदेश या आर्कटिक प्रदेश अथवा अन्य कहीं (हिन्दुस्थान में ही) 'एक्सप्लोरेशन' (खोज) की भी महत्त्वाकांक्षा भरी है। इसको मैं अपने चरित्र तथा मानसिक प्रगति के लिए जरूरत समझता हूं।

खर्च का मुझे बराबर अंदाज नहीं है, पर मेरी समझ है कि निम्न प्रकार खर्च होगा :

१–कालेज-शिक्षा तथा बैरिस्ट्री, रहना, खाना, पीना इत्यादि १००००)

२–वैमानिक शिक्षा ४०००)

३–भ्रमण, खाज-खोज, कपड़े-लत्ते, बीमारी व अन्य खर्च ४०००)

मैंने तो अपनी तरफ से हिसाब करते समय ठीक-ठीक अंदाजा लगाया है। परंतु शिक्षा में १५०००) पूरे होंगे या नहीं इसमें शक जरूर है। थोड़े-कम ज्यादा हो सकते हैं, पर सब मिलकर २५०००) से ज्यादा खर्चा नहीं होना चाहिए, ऐसी मेरी समझ है।

विवाह के संबंध में मैं इस निश्चय पर पहुंचा हूं कि अभी कम से कम तीन वर्ष तक तो किसी भी हालत में (विलायत जाऊं या न जाऊं) नहीं करना है। उसके बाद परिस्थिति के अनुकूल जो कुछ भी उचित मालूम दे, उस प्रकार देखा जायेगा।

विलायत जाते समय भी मैं किसी भी प्रकार की प्रतिज्ञा आदि या अन्य किसी के सामने नहीं करूंगा। लेकिन किसी भी समय बिना [illegible] अथवा बिना कोई कारण बतलाये भी आप या पूज्य [illegible] वापस लौट आने का आग्रह करेंगे या मुझे इस प्रकार आने का [illegible] तो मैं अपना सारा कार्यक्रम छोड़कर एकबार आना भी [illegible]।

इन विषयों पर आपके विचार मुझे मालूम हैं। उन सबका [illegible] करते हुए ही मैंने आपको यह पत्र लिखा है। अब मेरा [illegible]